

RNI नं. : 7387/63

मुद्रण तिथि : 15-16 जनवरी 2025

डाक प्रेषण तिथि : 15-17 जनवरी 2025

ISSN : 2456-611X

वर्ष : 62

अंक : 19

मूल्य : ₹10/- पृष्ठ संख्या : 76

डाक पंजीयन संख्या : BIKANER/022/2024-26

Office Posted at R.M.S., Bikaner



राम चमकते भानु समाना

श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ का मुखपत्र

# श्रमणापासक

धार्मिक पाक्षिक

बाल सुलभ भावों को कर लें,  
मन में जगा लें जिनवाणी की प्यास ।  
कुछ न कुछ अर्पित करें गुरुवरणों में,  
अवसर आया है ये खास ॥  
पंच दशाब्दी की स्वर्णिम यात्रा करके,  
आया दिन महत्तम का आज ।  
तप-त्याग, धर्म-ध्यान का,  
सौंपे अर्घ्य गुरुवरणों में आज ॥  
नोखा बनेगा अनोखा,  
प्रसंग शिखर महोत्सव का पाया ।  
दीक्षा का सुहागा पाकर,  
सोने-सा है दमकाया ॥

चलो नोखा

7, 8 और 9 फरवरी 2025



पंचर निकाले बिना  
पहिए में हवा भरकर  
गाड़ी कहाँ तक चलाओगे?

व्यक्ति की पहचान  
उसकी पसंदगी से हो जाती है।



अच्छे कार्य की शुरुआत  
स्वयं से करें,  
बाद में भागे बढ़ाएँ।

-पद्म पूज्य आचार्य प्रवृत्त 1008 श्री रामलाल जी म.सा.

# ॥ आगमवाणी ॥

॥ चत्वारि धम्मदारा- खंती, मुत्ती, अज्जवे, मह्वै। ॥

- स्थानां (4/4)

क्षमा, संतोष, सरलता और नम्रता, ये चार धर्म के द्वार हैं।

Four doors to the right-faith are forgiveness, contentment, simplicity and humility.

॥ असुयाणं धम्माणं सम्मं सुणणयाऽ अब्भुट्टेयत्वं भवति। ॥

- स्थानां (8)

सुने हुए धर्म को ग्रहण करने, उस पर आचरण करने को तत्पर रहना चाहिए।

One must be ever ready to act in accordance with the heard tenets of the faith.

॥ धणैण किं धम्मधुराहिगारै? ॥

- उन्तराध्ययन (14/17)

धर्म की धुरी को खींचने के लिए धन की क्या आवश्यकता है? (वहाँ तो सदाचार की जरूरत है)

What use are the riches in pulling the vehicle of the faith? (Righteousness is required there)

॥ पन्ना समिक्खए धम्मं। ॥

- उन्तराध्ययन (23/25)

साधक की अपनी प्रज्ञा ही समय पर धर्म की समीक्षा कर सकती है।

It is the wisdom of the aspirant that can truly assess the true merits of the faith.

॥ जरामरणवैगैणं, बुज्झमाणण पाणिणं।  
धम्मौ दीवौ पइट्ठा य, गई सरणमुत्तमं। ॥

- उन्तराध्ययन (23/68)

जरा और मरण के महाप्रवाह में डूबते प्राणियों के लिए धर्म ही दीप है, प्रतिष्ठा आधार है, गति है और उत्तम शरण है।

For the worldly souls, drowning in the great deluge of decay and death, the true faith is the only landfall, support and shelter.

॥ धर्मो बन्धुश्च मित्रश्च धर्मोऽयं गुरुरङ्गिनाम्।  
तरमोद्धर्मे मतिं धत्स्व स्वर्माक्षसुखदायिनी। ॥

- आदिपुराण (10/109)

धर्म ही मनुष्य का सच्चा बंधु है, मित्र है और गुरु है। इसलिए स्वर्ग एवं मोक्ष के सुख देने वाले धर्म में बुद्धि को स्थिर करना चाहिए।

One must stabilise one's intellect in the right-faith, as it is one's true friend, philosopher and guide. It yields the pleasures of the heavens as also of liberation.

साभार- प्राकृत मुक्तावली ❖❖❖



राम चमकते भानु समाना

# अनुक्रमणिका

## धर्मदेशना

- 08 पर्यायस्थविर-संयमस्थविर  
- आचार्य श्री जवाहरलाल जी म.सा.
- 09 सर्व-त्याग की साधना में  
- आचार्य श्री नानालाल जी म.सा.
- 15 अहिंसा, संयम व तप की महिमा  
- आचार्य श्री रामलाल जी म.सा.

## संस्कार सौरभ

- 29 धर्ममूर्ति आनंद कुमारी  
- संकलित
- 32 त्यागमय जीवन  
- भाविन जैन 'सजग'
- 34 लक्ष्मण रेखा का न हो उल्लंघन  
- गौतम पारख
- 37 वैश्विक समस्याओं के समाधान...  
- डॉ. त्रिलोकचंद जैन
- 41 संयम-संयमी एवं संयमदाता  
- पदमचंद गांधी
- 45 विश्व का महत्तम धर्म : जैन धर्म  
- गणेश डूंगरवाल
- 48 सम्यक् आराधक गुरु रामेश  
- प्रिया कर्नावट
- 49 वैवाहिक जश्न...  
- दिलीप गांधी

## ज्ञान सार

- 19 आध्यात्मिक आरोग्यम्  
- संकलित
- 24 श्रीमत् प्रज्ञापनासूत्र प्रश्नमाला  
- कंचन कांकरिया
- 26 श्रीमद् उत्तराध्ययनसूत्र  
- सरिता बैंगानी

## भक्ति रस

- 28 प्रेरणा हमारे...  
- कु. तृप्ति सांखला
- 36 अद्भुत ग्रैंड समर्पणा दिवस  
- प्रतिभा तिलकराज सहलोत
- 44 भव पार करे मंगल भाव  
- बी. शांतिलाल पोकरणा
- 51 मुद्रिसहियं पच्चक्खाण...  
- दीपक बोहरा

## विविध

- 52 गुरुचरण विहार समाचार  
- महेश नाहटा

कठिनाइयों में मन को कमजोर मत होने दो। कठिनाइयाँ सुप्त शक्तियों को जागृत करने वाली होती हैं। घाटी पर चढ़ाई के समय गाड़ी को जैसे गीयर में लेना होता है, वैसे ही कठिनाई के समय हमारा जोश द्विगुणित ही नहीं अनेक गुणित होना चाहिए। यदि मन को कमजोर करके बैठ गए तो क्या कठिनाई दूर हो जाएगी? कभी नहीं। कठिनाइयों को तो पार करना ही पड़ेगा। जब कठिनाइयों को पार करना ही है तो अपने जोश को बढ़ाकर उस पर सफलता पाएँ। शक्ति हमारे भीतर मौजूद है। हम उपयोग में लेते हैं तो वह कार्यरत हो जाती है, अन्यथा यूँ ही व्यर्थ हो जाती है। कई ऐसे लोग संतों के पास आते हैं जो कभी विशेष पैदल चले नहीं थे, पर संतों के साथ दस-पंद्रह किलोमीटर चल लेते हैं। वह शक्ति उनमें कहाँ से आई? शक्ति उनमें ही थी। संतों ने नहीं दी। जैसे-जैसे चलते गए शक्ति भी बढ़ती गई। गाड़ी में रहा हुआ 'डायनेमो' गाड़ी चलने से चलता है, उससे बैटरी चार्ज हो जाती है। वैसे ही कार्य करते रहने से शक्ति बढ़ती रहती है। जैसे कार्य, जैसी कठिनाई हमारे समक्ष आती है, उन्हें पार करने की शक्ति भी हमारे में होती है। हम मन कमजोर कर लेते हैं तो शक्ति जग नहीं पाती। इससे विपरीत यदि मन सशक्त बना लेते हैं तो कठिनाइयों पर जय पाने में समर्थ हो जाते हैं। भगवान महावीर ने कठिनाइयों की चुनौतियों को स्वीकार किया, वे घबराए नहीं। फिर हम क्यों घबराएँ? ध्यान रहे, कठिनाइयाँ जब भी आती हैं हमें कुछ सिखाती जाती हैं। कठिनाइयों के मुकाबले से जो मिलने वाला है, वह सुविधा में बैठे रहने या सुविधा को चाहने से मिलने वाला नहीं है। कठिनाइयों से जो मिल सकता था उससे हम हमारी कमजोरी के कारण ही वंचित रह जाते हैं। अतः चाहे कैसी भी कठिनाइयाँ क्यों न आ जाएँ, हम उनसे विचलित नहीं होंगे। ऐसी भावना अपने भीतर दृढ़-सुदृढ़ बनानी चाहिए। यह भी ध्यान रहे कि सुविधा हमारी ऊर्जा-शक्तियों को लील लेती है, जबकि कठिनाइयाँ हमारे भीतर सुप्त शक्तियों को भी जागृत कर देती हैं। इसलिए कठिनाइयों से कभी मुँह नहीं मोड़ें, बल्कि उनकी चुनौतियों को स्वीकार करें।

बुधवार, 11-11-2015

साभार- ब्रह्माक्षर ♥♥♥

## कठिनाई में कायर नहीं,

- परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा.

चिंतन पराग

वीर बनें,

Let not the mind be enfeebled amid difficulties. In fact, difficulties serve to awaken our hidden powers. Just as gears need to be engaged suitably while driving uphill, our enthusiasm needs to be not just doubled but upped multiple times in the face of difficulty. If you let the mind weaken, and leave it at that, would your difficulties drop off? Never ever. You have to get across the difficulties. And if you must overcome difficulties, whip up your zeal to succeed therein. I have the strength within. When we put it to use, it gets activated, else it runs to waste.

Among those who visit saints, there are many without much experience of trudging on foot, and yet, walking alongside saints, they cover as much as 10–15 kilometres. Where did they tap this strength from? Well, it was already inherent in them. It is not as though the saints imparted it to them. As they continued walking, the strength too kept augmenting. The dynamo fitted in the car activates as the car moves – that helps with charging of the battery. Likewise, our strength augments as we persevere in work. We have the power within us to tackle the task, to surmount the difficulties that confront us. When we enfeeble the mind, that power cannot come awake. On the other hand, if we empower the mind, we become capable of prevailing over the difficulties.

Bhagwan Mahaveer accepted the challenges of hardships; he did not cower. Then, why should we flinch? Bear in mind that whenever difficulties come along, they teach us lessons. What is imbibed from confronting hardships can never be learnt by being ensconced amid comfort, or by desiring comfort. It is our weakness that denied us what difficulties could have earned for us.

As such, no matter what difficulties come our way, we will not be deterred by them—this is the attitude we must firm up within us. It may also be borne in mind that comfort saps our energies and strengths; on the other hand, difficulty awakens the latent powers within us. Hence, do not turn away from difficulties; rather, embrace the concomitant challenges.

Wednesday, 11-11-2015

Courtesy- Brahmakshar ❤️❤️❤️

# IN ADVERSITY, BE BOLD

- Param Pujya Acharya Pravara 1008 Shri Ramlal Ji M.Sa.

Chintan Parag

# NOT TIMID



सुनहरी कलम से....

# नतमस्तक

## हो करें

## समर्पण

# “

आप भटकें नहीं बल्कि मंजिल करीब दिखते ही दुगुने उत्साह के साथ उसकी तरफ कदम बढ़ाएँ। चंद्रयान का घटनाक्रम हमें बताता है कि पलभर का प्रमाद या पलभर की देर से परिणाम में कितना अंतर आ जाता है। इसलिए जब तक लक्ष्य प्राप्त न हो जाए तब तक उसकी प्राप्ति का प्रयास चलता रहना चाहिए।

— परम पूज्य आचार्य प्रवर

1008 श्री रामलाल जी म.सा.

मन ग्रैंड समर्पणा दिवस पर चर्चा करते हुए अतिउत्साहित एवं गौरवान्वित है। महत्तम महोत्सव के अंतर्गत आयोजित कार्यक्रमों की शृंखला में यह एक अभूतपूर्व अवसर प्राप्त हुआ। एक राष्ट्र, एक गूंज, एक समय, एक ही भाव और एकरूपता से हम सभी ने मिलकर ग्रैंड समर्पणा दिवस 22 दिसंबर 2025 को मनाया। इसके अंतर्गत आवश्यक रूप से समता शाखा में धर्मराधना के पश्चात् अन्य निर्धारित धार्मिक कार्यक्रम संपन्न हुए। इस दिवस की अद्भुत सफलता पश्चात् आगे के कार्यक्रम भी इसी स्वरूप में और अधिक धर्मराधना से संपन्न हो रहे हैं।

ध्यान देने योग्य बात यह है कि इतने बड़ा कार्यक्रम देशभर के संघों व शाखाओं में एकरूपता से संपन्न होने के पीछे का मूल भाव क्या है? क्या सभी को मिलकर किसी आज्ञा का पालन करना था अथवा केवल परंपरा निवर्हन रूप कोई भेंट दी जानी थी? उपरोक्त में से कोई भी कारण उपयुक्त नहीं है। इस हेतु तो संपूर्ण राष्ट्र के प्रत्येक श्रावक को गुरु के प्रति 'आत्मश्रद्धा' ने प्रेरित किया।

वर्तमान में हम परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा. का 50वाँ दीक्षा वर्ष मना रहे हैं। इस प्रसंग का साक्षी बनने का मौका हम सभी को प्राप्त हो रहा है। जो कि हमारा परम सौभाग्य है और इस सौभाग्य का आनंद इस तरह के धार्मिक कार्यक्रम के माध्यम से ही लिया जा सकता है।

हम सभी के समक्ष कर्मनिर्जरा करने और गुरुभक्ति प्रदर्शित करने का यह सुनहरा अवसर उपस्थित हुआ है। ग्रैंड समर्पणा दिवस सहित 9 फरवरी 2025 तक के प्रत्येक रविवार को एवं इस अवधि के सभी दिवसों को अतिविशेष धर्मराधना एवं तपाराधना से संपन्न करने का लक्ष्य रखना है। हम सभी को इसका भरपूर लाभ उठाना है। प्रत्येक कार्यक्रम में शत-प्रतिशत उपस्थिति रहे और हम सभी प्रत्येक कार्यक्रम में बढ़-चढ़कर हिस्सा लें, यही सच्ची गुरु समर्पणा होगी।

आचार्यश्री के सुवर्ण दीक्षा महामहोत्सव को कुछ ही दिवस शेष बचे हैं। इन सभी दिवसों का भरपूर आनंद लेवें व सभी को प्रेरित करें। इसी शुभभावना के साथ...

— सह-संपादिका ❀❀❀

## ज्ञानस्य फलं विरतिः

सूत्रज्ञान जब आचार में उतरता है तब जीवन में संयम प्रकट होता है और बीस वर्ष पर्यंत शास्त्र की मर्यादा के अनुसार संयम की साधना करने के पश्चात् जो व्यक्ति संयमी आत्मा बनता है अर्थात् जो अपने शरीर, मन और बुद्धि को ज्ञानपूर्वक आत्मा के वशीभूत बना लेता है, जितेंद्रिय बन जाता है, वह महात्मा पुरुष संयमस्थविर कहलाता है।

संयमस्थविर बनने के लिए कितने ही वर्षों

तक सतत ज्ञानोपासना के साथ आत्मदमन की विद्या सीखनी पड़ती है। साधक पुरुष जब अनेक वर्ष ज्ञान की उपासना में व्यतीत करता है

तब उसे ज्ञानसिद्धि प्राप्त होती है और वह साधक स्वयं सशरीर शास्त्र रूप (ज्ञानमूर्ति) बन जाता है

तो इसमें क्या आश्चर्य है! मगर अकेली ज्ञानसिद्धि से ही तो जीवनसिद्धि हो नहीं जाती। जीवनसिद्धि के लिए ज्ञानसिद्धि के साथ-साथ संयमसिद्धि की भी आवश्यकता रहती है और संयम की सिद्धि के लिए साधक पुरुष को शास्त्रोक्त यम-नियमों को जीवन में मूर्तिमान बनाना पड़ता है। इस प्रकार जब ज्ञान और संयम का, विचार एवं आचार का मेल होता है तब जीवन

शुद्धि की सौरभ चहुँओर से फैले और अनेक पुण्यात्माओं का जीवन संयम-सौरभ से सुवासित हो, यह स्वाभाविक ही है। ज्ञान और संयम का या विचार और आचार का मेल करना हँसी-खेल नहीं है। संयमस्थविर बनना साधारण जन के लिए तो क्या, मुनियों के लिए भी कठिन है।

‘संयम नो मारग छे शूरां नो’ यह गुजराती भाषा की धर्मोक्ति संयम मार्ग के पालन की कठिनाई की चेतावनी देती है। संयम का मार्ग कायर पुरुषों का नहीं है। जो व्यक्ति दुश्वार संयम धर्म को जीवन में स्थान देते हैं और ज्ञान-चारित्र का समन्वय करते हैं, वे अपने आपको सिद्ध, बुद्ध और मुक्त बनाते हैं। पहले जिन दस धर्मों का विवेचन किया गया है

उन सबका

पर्यवसान संयम धर्म में होता है। संयम धर्म साध्य है, शेष धर्म साधन हैं। संयम धर्म सब धर्मों का सार है। जो पुरुष संयम धर्म को धर्मों का सार समझकर अपने जीवन में उतारेंगे वे धर्म का अमृतपान करेंगे और अजर-अमर बनेंगे।

**धम्मो मंगलं, धम्मो शरणं।**

साभार- श्री जवाहर किरणावली-6

# पर्यायस्थविर- संयमस्थविर (परियाय-थेरा)

- परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री जवाहरलाल जी म.सा.

धर्मदेशना



- ❖ अहिंसा, संयम व तप रूप जो धर्म है, वही उत्कृष्ट धर्म है। ऐसे उत्कृष्ट धर्म की उत्कृष्ट आराधना के चरम विकास का नाम ही मोक्ष है।
- ❖ स्वाद को जीतना ही विकारों पर विजय प्राप्त करना है।
- ❖ साधु के ठहरने के स्थान पर बत्ती या रोशनी नहीं जलनी चाहिए। यदि ऐसा समारंभ उस मकान में होता है तो साधु तनिक भी वहाँ नहीं ठहरे, फिर जितने दिन वह ठहरता है, उतने दिन का दीक्षाछेद होता है।
- ❖ सर्वकल्याण की व्यापक भावना से स्व-पर के जीवन का अमिट कल्याण करना।
  - ❖ साधु मर्यादाओं को सुरक्षित रखने में रूह योग देता है, सहायता करता है, वह एक प्रकार से आगम परंपरा को सुरक्षित रखने का सत्प्रयास करते हुए शुभ कर्मों का बंधन करता है।
  - ❖ साधु सर्व-त्याग की उच्च भावना से पंच महाव्रत का पालन करता है, जिसकी साधना से परम लक्ष्य प्राप्त किया जा सकता है।



धर्मदेशना

# सर्व-त्याग की

# साधना में

- परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री नानालाल जी म.सा.

## धम्मो मंगलमुक्कट्ठं, अहिंसा संजमो तवो। देवा वि तं नमसंति, जस्स धम्मो सया मणो।।

सर्व-त्याग की साधना में जीवनशुद्धि के लिए यह बड़ी दीक्षा का प्रसंग है। संसार की अवस्था में रहती हुई आत्मा आध्यात्मिक जीवन की संपूर्ण साधना नहीं कर सकती। जीवन-निर्वाह की दृष्टि से कुछ न कुछ कार्य करना ही पड़ता है तथा उस कार्य में उसका काफी समय व्यतीत हो जाता है। फिर यदि वह आध्यात्मिक साधना करना भी चाहे तो उसमें उस हेतु पर्याप्त शक्ति नहीं बचती।

आंतरिक जीवन की जागृति के लिए भी मन, मस्तिष्क और शरीर के नियोजन की आवश्यकता होती है। यह शारीरिक शक्ति भले ही थके या नहीं थके, परंतु मन-मस्तिष्क की स्थिति यदि थकान का अनुभव करती है तो आध्यात्मिक साधना में शक्ति अधिक नहीं लग सकती। गृहस्थ जीवन की ऐसी व्यस्तता में कोई घंटेभर मुश्किल से ही बैठकर गूढ़ चिंतन कर पाता है। वैसी थकान की दशा में उसे या तो नींद आने लगती है अथवा आलस्य होता है। अतः आध्यात्मिक साधना में लगने के लिए गृहस्थ अवस्था सक्षम और उपयुक्त नहीं होती। जिन आत्माओं के अंदर से यह जागृति आ जाए कि मुझे तो इस मनुष्य तन के रहते हुए अधिकाधिक आध्यात्मिक जागृति संपादित करनी है, सर्व-त्याग की साधना में निरत बनना है तो वे अतीव उमंग के साथ मर्यादापूर्ण साधु जीवन को ग्रहण कर लेती हैं।

### ममता के बंधन

ऐसी जागृत आत्माएँ सांसारिक अवस्था के प्रति अपनी ममता के संपूर्ण बंधनों को तोड़ देती हैं। चाहे उनके सामने कितने ही प्रलोभन आएँ, वे चलायमान नहीं होतीं और संयम अंगीकार करने के अपने निश्चय से नहीं हटतीं। परिवार की दृष्टि से कितनी ही भौतिक शक्तियों का संचय उन्हें प्राप्त होता हो, परंतु वे यही सोचती हैं कि मनुष्य जन्म के साथ शारीरिक, मानसिक, वाचिक आदि दृष्टियों से जो अद्भुत शक्तियाँ हमें प्राप्त हुई हैं, उनका

नियोजन अपनी आत्मा के कल्याणार्थ एवं अन्य आत्माओं की रक्षार्थ प्राथमिक रूप से आवश्यक है।

इन दोनों बहनों की बड़ी दीक्षा का जो प्रसंग आपके समक्ष है तो ये दोनों अपने संपन्न घरों को छोड़कर दीक्षित हुई हैं। इनमें से एक बड़ीसादड़ी संघ के अध्यक्ष लक्ष्मीलाल जी पामेचा की पुत्री है। पामेचा जी अपने नगर के नामी धनीमानी सज्जन कहलाते हैं। उनकी पुत्री की दीक्षा आर्थिक संपन्नता के बावजूद उसकी अटूट धार्मिक निष्ठा का प्रमाण है। वैसे ही दूसरी बहन का ब्यावर निवासी कोठारी परिवार भी संपन्न है, फिर भी अपनी तीक्ष्ण बुद्धि एवं आध्यात्मिक साधना की उग्र अभिलाषा से इन्होंने दीक्षा ग्रहण की। इन बहनों का इस मार्ग पर जो प्रवेश हुआ है, वह ममता के बंधनों को तोड़ देने की दृष्टि से एक आदर्श रूप है तथा दूसरों के लिए प्रेरणा का कारण बन सकता है।

### वीतराग प्रभु का निराला मार्ग

वीतराग प्रभु का मार्ग निराला है, जिस पर चलने के लिए ममता के सभी बंधन तोड़ देने होते हैं और संपूर्णतः समता धारण कर लेनी पड़ती है। यह मार्ग साधु जीवन का है, जिसके ग्रहण के साथ ही राग-भाव छूटता है और निर्ग्रथ वृत्ति आरंभ होती है। इस जीवन में सर्वथा परिग्रह और परिग्रह की मूर्छा भी त्याग देनी होती है। जो भी वस्तु इस अवस्था में रखी जाती है, वह सीमित एवं मर्यादित मात्रा में होती है। वस्त्र की दृष्टि से कुल एक हाथ के पन्ने का 72 हाथ लंबा वस्त्र ही एक साधु को रख सकने का विधान है। साध्वी 96 हाथ लंबा वस्त्र रख सकती है। फिर कितना ही तेज शीत हो या वर्षाकाल, इतने ही वस्त्र में काम चलाना पड़ता है। यह कितनी कठोरतम तपस्या है!

इन बहनों ने सात दिन पहले सेठिया भवन, बीकानेर में भागवती दीक्षा अंगीकार की थी एवं वीतराग प्रभु के निराले मार्ग पर अपने चरण रखे थे, वे चरण आज बड़ी दीक्षा के रूप में परिपुष्ट हो रहे हैं। इस विशाल संघ में प्रवेश लेकर ये विषम भाव से हटकर समभाव की

आराधिकाएँ हो गई हैं। ये सबके कल्याण हेतु आध्यात्मिक साधना में तत्पर बन गई हैं। संसार के छोटे-बड़े समस्त जीवों के प्रति संरक्षण की भावना रखते हुए सारे सावध-पापकारी कार्यों का त्याग कर दिया है। **छोटी और बड़ी दीक्षा का मतलब यही है कि यह सात रोज का अंतरिम काल संयम के संकल्पों की परिपुष्टि को देखने हेतु रखा गया है कि जिन निर्लिप्त भावनाओं के साथ दीक्षा ग्रहण की, वे परिपक्व हैं या नहीं।** परिपक्व चारित्र ग्रहण करने की दृष्टि से बड़ी दीक्षा का प्रसंग है।

### परिपक्व चारित्र का तात्पर्य

परिपक्व चारित्र का यह तात्पर्य होता है कि प्रारंभ में साधु-जीवन में प्रतिष्ठ होते समय पूर्वाभ्यास के कारण छोटी-मोटी त्रुटियाँ हो सकती हैं, अतः उन त्रुटियों का परिमार्जन करके चारित्र को जो परिपक्व स्वरूप दिया जाता है, वही बड़ी दीक्षा का प्रसंग है। **छोटी और बड़ी दीक्षा का अल्पतम अंतर सात दिन, मध्यम दृष्टि से चार माह तथा अधिकतम छह माह होता है।** यह छेदोपस्थापनीय चारित्र दिया जाता है। इस अंतरिम काल में कोई दोष लगा हो अथवा नहीं लगा हो तो यह काल अपरिपक्वता की दृष्टि से दीक्षा काल में से घटा दिया जाता है। आज से ही इन बहनों की दीक्षा पक्की होती है और आज से ही इनका आध्यात्मिक पुनर्जन्म माना जाएगा।

भगवान महावीर के शासन की यही रीति है कि अतिचार लगे हों या नहीं, बड़ी दीक्षा के प्रसंग से ही दीक्षाकाल प्रारंभ होता है। यह पद्धति भगवान ऋषभदेव के समय में भी थी। बीच के बाईस तीर्थंकरों के समय की पद्धति शारीरिक संगठन के अनुसार विभिन्न थी, किंतु मूल तत्त्वों के संबंध में कोई अंतर नहीं रहा। साधु जीवन में जिस समग्र रूप से धर्म के स्वरूप को साकार रूप देने की व्यवस्था है, वह मूलतः सर्वदा समान रही है।

### धर्म की उत्कृष्ट आराधना कैसी

दशवैकालिक सूत्र में धर्म की परिभाषा एवं आराधना की उत्कृष्टता बताते हुए कहा गया है -

**धम्मो मंगलमुक्कट्ठं, अहिंसा संजमो तवो।  
देवा वि तं नमसंति, जस्स धम्मो सया मणो।।**

अर्थात् अहिंसा, संयम एवं तप रूप जो धर्म है, वही उत्कृष्ट धर्म है तथा ऐसे धर्म में जिसका सदा मन लगा रहता है, उसको देवता भी नमन करते हैं। ऐसे उत्कृष्ट धर्म की उत्कृष्ट आराधना के चरम विकास का नाम ही मोक्ष है। **उत्कृष्ट आराधना का चरम विकास तो श्रेष्ठ है ही, किंतु इसका क्रम भी साधक को न सिर्फ मानव समुदाय में, बल्कि देव समुदाय में पूजनीय एवं वंदनीय बनाता है।** यद्यपि मानव जीवन की अपेक्षा देव अधिक संपन्न जीवन वाले होते हैं, फिर भी धर्मारोधन में वे अक्षम होते हैं। अतः सक्षम धर्मारोधक मानव के चरणों में वे नत होते हैं।

प्रथम अध्ययन में साधक को कुछ संकेत दिए गए हैं। वे प्रमुख रूप से इस प्रकार हैं- **“हे साधक! तू आज से जगत् के समस्त प्राणियों को अपनी आत्मा के तुल्य समझकर चलना, छोटे-बड़े सभी प्राणियों का उपमर्दन मत करना, क्लेश मत पहुँचाना और किसी कारण ऐसा हो जाए तो प्रायश्चित्त करना। विश्व के समस्त प्राणियों को एक परिवार के सदस्य समझना तथा उनके साथ सहानुभूति का व्यवहार करना।”** संक्षेप में अहिंसा का ऐसा विराट रूप भगवान महावीर ने दिखाया है।

अहिंसा के इस स्वरूप के प्रति कोई शंका करे कि फिर साधु भोजन किस प्रकार ग्रहण करेगा ?

साधु के भोजन का जहाँ तक प्रश्न है, साधु को मधुकरी करने का निर्देश है। जैसे भँवरा एक-एक फूल पर बैठता है और बिना किसी को तनिक भी कष्ट पहुँचाए, वह सूक्ष्म पराग जिस प्रकार एक-एक फूल से ग्रहण करता है, उसी प्रकार साधु एक-एक घर से इतनी सूक्ष्म भिक्षा ग्रहण करे, जो किसी भी रूप में दाता को भारप्रद न हो तथा दोषयुक्त भिक्षा भी वह न लेवे। **साधु इस प्रकार न स्वयं भोजन बनाता है, न दूसरों से अपने लिए भोजन बनवाता है तथा न ही अपने लिए भोजन बनाने वालों को**

**अच्छा समझता है।** गृहस्थ अपने नित्य-क्रम में जैसा भी भोजन बनाते हैं, साधु तो अतिथि के रूप में वहाँ पहुँचता है तथा मधुकर की तरह अत्यल्प ग्रहण करता है। भोजन भी साधु को सीमित मात्रा में ही करना पड़ता है। पानी भी जीव-रहित अचित्त पानी ही ग्रहण करता है, जो गृहस्थों के यहाँ बर्तन बासण धोने से नितप्रति तैयार होता है। ऐसे अचित्त पानी को 'धोवन' कहते हैं।

अब यह गृहस्थों में विवेक जगाने की बात है कि किसी भी प्रकार से अचित्त बने धोवन पानी को बाहर फेंके नहीं, ताकि साधु के काम आ जाए। आचारांग सूत्र में 20 प्रकार के धोवन का उल्लेख है तथा 21वें प्रकार में गर्म पानी का भी उल्लेख है। धोवन पानी जीव-रहित भी होता है तथा शुद्ध होने से स्वास्थ्य के लिए भी उपयुक्त होता है।

धर्म की उत्कृष्ट आराधना के रूप में साधु के लिए कठोर आचार का प्रावधान किया गया है।

### प्राप्त का त्याग, अप्राप्त में अनासक्ति ॐ

साधु के लिए टालने योग्य कुछ अतिचार बताए हैं, जिनका मुख्य संकेत यह है कि जो तुम्हें प्राप्त था, उसका तो त्याग करके आए हो और तुम्हें जो प्राप्त हुआ है, उसमें संतोष रखना चाहिए तथा जो प्राप्त है व जो अप्राप्त है, उन दोनों की आकांक्षा नहीं करनी चाहिए। यदि आकांक्षाएँ पैदा होती हैं तो साधु-जीवन सुरक्षित नहीं रह सकेगा। जिन विषयों या पदार्थों का परित्याग किया है।

दूसरे अध्ययन में समझाया गया है कि एक बार छोड़े हुए विषय-विकारों की कभी भी वांछा नहीं करनी चाहिए। उनमें जरा-सी भी आसक्ति यदि बच जाती है तो वह कभी भी फिर से उभरकर साधु-जीवन को कलंकित बना सकती है।

जहाँ अतिचारों का प्रसंग आया है तो ये अतिचार जिनकल्पी एवं स्थविरकल्पी, दोनों के साथ लागू होते हैं। अनाचारों का भी ऐसा ही संबंध है। साधु को अपने लिए बना हुआ आहार तो लेना ही नहीं है, परंतु

कदाचित् किसी गृहस्थ जिस साधु के लिए आहार बनाया हो तो ज्ञात हो जाने पर वह साधु उसे कतई ग्रहण न करे। यदि उस आहार को दूसरा साधु ग्रहण करता है तो वह उद्देशक आहार होता है और अनाचार रूप होता है। अतः अन्य साधु को भी वैसा आहार ग्रहण नहीं करना चाहिए। साधु के लिए कोई खरीदकर दिलाता है तो वैसा आहार भी ग्राह्य नहीं होता। साधु नित्यपिंड भी नहीं करे अर्थात् किसी एक ही गृहस्थ के यहाँ से नित्यप्रति भिक्षा नहीं लावे, साधु के लिए नियत आहार भी नहीं लावे। दिन में भी एक के यहाँ से एक वक्त ही आहार लावे। सामने लाया हुआ भोजन भी साधु को नहीं लेना चाहिए। वर्षा की झड़ी लग रही है और भिक्षा कोई धर्मस्थान पर ही ले आवे तो साधु उसे ग्रहण नहीं करे। वर्षा में साधु भिक्षा के लिए बाहर नहीं जा सकता, हाँ, प्राकृतिक शंका दूर करने के लिए अवश्य जा सकता है।

### भोजन आदि की कठिन मर्यादाएँ क्यों? ॐ

साधु के लिए भोजन की कठिन मर्यादाएँ उसके संयम संरक्षण के लिए अनुकूल हैं। क्योंकि साधु खाने के लिए नहीं जीता, बल्कि जीने के लिए खाता है, वह भी सीमित मात्रा में और दोषरहित प्राप्त भिक्षा से ही। जो स्वाद जीत लेता है, वह तज्जन्य कई विकारों को भी जीत लेता है। स्वाद छोड़ा तो फिर भोजन शरीर-रक्षा का क्षीण साधन मात्र ही रह जाएगा।

इसी दृष्टि से विधान है कि साधु दया के निमित्त से भी श्रावकों द्वारा सामने लाया हुआ आहार ग्रहण नहीं करे। यह तो ठीक, मगर साधु गृहस्थ के द्वार पर भी पहुँच गया और गृहस्थ रसोईघर से भोजन लाकर वहाँ पर भी देवे तब भी वह सामने लाया हुआ भोजन माना जाएगा। जहाँ भोजन स्वाभाविक रूप से रहता है और साधु वहाँ पहुँचकर भिक्षा ग्रहण करता है तो सब कुछ उसकी दृष्टि में रहता है कि कहीं सचित्त का संघट्टा अथवा अन्य कोई दोष तो नहीं लग रहा है, परंतु आहार सामने लाने पर यह सब नहीं देखा जा सकेगा तो साधु का छह काया के

प्रतिपालक का धर्म दोषयुक्त बन जाएगा।

इसी तरह अनाचार की दृष्टि से साधु को रात्रि-भोजन नहीं करना चाहिए। साथ ही स्नान आदि का प्रसंग भी साधु के लिए नहीं होना चाहिए। साधु पूर्ण रूप से मैथुन का त्यागी होता है, ब्रह्मचारी होता है तो उसका प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से किसी भी शृंगार से संबंध नहीं होना चाहिए। साधु के लिए सुगंधित पदार्थों का प्रयोग तथा पुष्पमाला आदि धारण करना भी त्याज्य है। पंखे आदि से हवा भी साधु को नहीं लेनी चाहिए, क्योंकि उससे छह काया के जीवों की हिंसा होती है। कोई पंखा चलाता हो तो वहाँ भी साधु को नहीं बैठना चाहिए। साधु मर्दन भी नहीं करे और राजपिंड भी ग्रहण नहीं करे। दाँतों या शरीर के किसी अंग का साधु किसी भी प्रकार से कोई शृंगार नहीं करे। दर्पण में भी अपनी आकृति वह नहीं देखे और यदि देखता है तो अनाचार का प्रसंग आता है।

### साधु के अतिचार-अनाचार ॐॐॐॐॐॐॐॐ

साधु को सप्त व्यसन से सर्वथा विलग रहना चाहिए। वह किसी भी नाम से किसी भी प्रकार का जुआ नहीं खेले। इसमें अनाचार लगता है। साधु को छत्र या छतरी भी धारण नहीं करनी चाहिए। साधु को चिकित्सक का काम भी नहीं करना चाहिए, न ही भविष्य वक्ता बनना चाहिए। जिनकल्पी मुनि तो न स्वयं अपनी चिकित्सा करते हैं, न करवाते हैं। स्थविरकल्पी चिकित्सा करवाते तो है, किंतु उसमें जो दोष लगता है, उसका प्रायश्चित्त लेते हैं। साधु चर्म या अन्य किसी प्रकार के पदत्राण प्रयोग में न ले। साधु स्वयं अग्नि का समारंभ भी नहीं करे तथा जिस मकान में वह रहता हो, वहाँ भी किसी प्रकार का अग्नि का समारंभ न हो। साधु के ठहरने के स्थान पर रात्रि को रोशनी भी नहीं जलनी चाहिए। यदि ऐसा समारंभ उस मकान में होता हो तो साधु वहाँ तनिक भी नहीं ठहरे, फिर जितने दिन वह रहेगा उतने दिन का दीक्षाछेद दिया जाएगा।

साधु को शय्यातर के यहाँ का आहार नहीं लेना

चाहिए अर्थात् जिस मकान मालिक के मकान में ठहरा जाए और आज्ञा ली जाए, उसके यहाँ का आहार-पानी साधु नहीं लेवे। साधु को दलाली भी नहीं करनी चाहिए। उसे खाट, माचा या कुर्सी आदि पर भी नहीं बैठना चाहिए। दो रास्ते मिलते हों, वहाँ भी उसे नहीं बैठना चाहिए। उसे न तो गृहस्थ की सेवा करनी चाहिए और न गृहस्थ से सेवा करवानी चाहिए। रोग आदि की स्थिति में साधु को विह्वल भाव नहीं लाना चाहिए। सचित्त कंद, मूल, फल आदि साधु को ग्रहण नहीं करने चाहिए।

इस प्रकार बावन अनाचारों की स्थिति से सावधान बनाते हुए शास्त्रकार कहते हैं कि वस्त्र को धूप-अगरू आदि से साधु सुगंधित नहीं बनावे, किंतु शरीर पर रहे हुए वस्त्रों के पसीना आदि से चिकना बनने पर वह विवेकदृष्टि से काम ले। वस्त्रों पर फूलन न आवे या जुएँ न पड़ें, इसका ध्यान रखे। चिकने वस्त्र को शुद्ध पानी में निकाल ले और इसमें प्रासुक पदार्थ का उपयोग किया जा सकता है। सोड़ा जैसे प्रासुक पदार्थ है और इससे वस्त्र धोया जाएगा तो वस्त्र भी चिकनाई छोड़ देगा और जीव हिंसा भी नहीं होगी। मूल बात यह है कि शृंगार करने या अच्छा दिखने की भावना इन कामों से कभी भी साधु के मन में नहीं आवे।

### छह काया के जीवों की रक्षा मुख्य ॐॐॐ

हर क्षेत्र में साधु के लिए इस प्रकार का विवेक रखना अनिवार्य है कि वहाँ छह काया के जीवों की पूर्ण सुरक्षा हो। इसी कारण साधु को वस्त्र प्रक्षालन में ऐसे पाउडर आदि काम में नहीं लेने चाहिए, जिनसे जीव हिंसा का अंदेशा हो। इसी प्रकार विरेचन भी नहीं लेना चाहिए।

शास्त्रकारों ने इसी संदर्भ में छह काया के जीवों का स्वरूप बताते हुए विधान किया है कि महाव्रतों का पालन करते हुए त्रस और स्थावर जीवों की रक्षा कैसे करनी चाहिए? इसी संपूर्ण विवेक के कारण साधु को छह काया का प्रतिपालक कहा है। किसी भी जीव की घात तो दूर, परंतु उसे किसी प्रकार से क्लेश पहुँचाने की

हिंसा भी साधु न करे तो वह समस्त जीवों की रक्षा करता हुआ अहिंसा धर्म का सूक्ष्मतम पालन भी करे। यही कारण है कि उत्कृष्ट धर्म के तीन अंगों में अहिंसा का क्रम सबसे पहले हैं। अहिंसा का पूर्णतया पालन साधु करेगा तो वह संयम का भी पालन कर सकेगा।

अहिंसा धर्म का स्थूल पालन श्रावक करता है तो उसका सूक्ष्म पालन साधु को करना होता है। एक प्रकार से साधु का जीवन संपूर्ण रूप से अहिंसामय होता है।

### कल्याण की व्यापक भावना ॐॐॐॐॐॐॐॐ

आगे की गाथाओं के अनुसार जब साधु अपने जीवन को ढालता है तो सर्वकल्याण की एक व्यापक भावना उसके जीवन में समा जाती है। मोह व ममता के उसके सारे घेरे टूटते जाते हैं और वह अपने निजत्व को सम्पूर्ण विश्व में समाहित कर लेता है। उसका साधु-स्वरूप भावनात्मक संकुचितता से छूटकर विश्व की परिधि तक उदारतापूर्वक प्रसारित हो जाता है और इसी कारण उसकी स्व-पर की कल्याण-कामना इतना ही व्यापक रूप धारण कर लेती है।

एक सच्चा साधु स्वयं को कल्याण के मार्ग पर अग्रसर बनाता है तो अपने साथ समस्त विश्व को भी अपने अनुभूत उपदेशों के द्वारा कल्याण के मार्ग पर चलाना चाहता है एवं इस परम कल्याण के मार्ग के लक्ष्य मोक्ष तक पहुँच सकता है।

### साधु-मर्यादाओं का संरक्षण ॐॐॐॐॐॐॐॐ

इन नवदीक्षित दोनों सतियों को संक्षिप्त रूप में मैंने सार्वजनिक रूप से साधु-जीवन की मर्यादाओं की जानकारी दी है और विस्तृत रूप से या संक्षिप्त रूप से इसकी जानकारी वे महासतियों से करती हैं। सार रूप में वे इतना ध्यान में ले लें कि उन्हें पग-पग पर साधु-धर्म की मर्यादाओं की रक्षा करनी है तथा सर्वकल्याण की व्यापक भावना से अपने जीवन को ओत-प्रोत बनाना है। उन्हें अपने जीवन को प्रशस्त मार्ग पर बढ़ाते हुए स्व-पर के जीवन का अमित कल्याण करना है।

इस संबंध में गृहस्थ वर्ग का भी कर्तव्य है कि साधु मर्यादाओं के संरक्षण कार्य में वह भी अपना पूरा-पूरा योग दें। जो इन साधुमर्यादाओं को सुरक्षित रखने में सहयोग देता है तथा सहायक बनता है, वह एक प्रकार से तीर्थकरों की परंपरा को सुरक्षित रखने का सत्प्रयास करता है।

### सर्व-त्याग की साधना ॐॐॐॐॐॐॐॐ

साधु-धर्म, सर्व-त्याग की साधना का पाथेय होता है। यह साधु-धर्म का मूल है। इसी मूल से विकास करती हुई आत्मा अरिहंत एवं सिद्धों का स्वरूप धारण करती हैं। इस एक पद के नमस्कार में पाँचों पदों का नमस्कार समाया हुआ है, क्योंकि साधु के मूल से ही शेष चारों पदों पर विकास का क्रम चलता है।

साधु सर्व-त्याग रूप जो पाँचों महाव्रतों का पालन करता है, वह सभी प्रकार से निर्बाध बन सके, ऐसे वातावरण की रचना करना श्रावक-वर्ग का कर्तव्य है। इसीलिए श्रावक-श्राविकाओं को साधु के अम्मा-पियरो भी कहा गया है। अतः गंभीर चिंतन-मनन के साथ जो साधु-धर्म ग्रहण करता है और जो साधु-धर्म को अनुरूप सहयोग देता है, वे दोनों अपने जीवन को सार्थक बनाते हैं।

साभार- नानेश वाणी-35 (सर्व त्याग की साधना) ❤️❤️❤️

“

यदि विज्ञान के अर्थ को संकुचित किया जाए और सिर्फ भौतिक तत्त्वों के विकास को ही विज्ञान की विषयवस्तु माना जाए तो अनेक प्रकार के झगड़े खड़े हो जाते हैं, लेकिन विज्ञान भौतिक तत्त्वों का भी होता है और आध्यात्मिक जीवन के साथ भी उसका गहरा संबंध है। एक दृष्टि से आध्यात्मिक जीवन से ही विज्ञान का प्रादुर्भाव होता है, लेकिन मानव का मस्तिष्क अंतर् की उस आध्यात्मिक शक्ति को अपना लक्ष्य बनाने में अभी तक पूरा कामयाब नहीं हुआ। इसीलिए उसका मस्तिष्क बाहरी पदार्थों द्वारा सुख-शांति की खोज में लगा हुआ है।  
- परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री नानालाल जी म.सा.



धर्मदेशना



धम्मो मंगलमुक्कट्ठं,  
अहिंसा संजमो तवो।  
देवा वि तं नमंसंति,  
जस्स धम्मो सया मणो।।

अहिंसा,  
संयम व  
तप  
की  
महिमा

- परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा.

अभिनंदन-जिन दरसन तरसिये..

परमात्मा का दर्शन दुर्लभ है या सुलभ ? न हम उसे दुर्लभ कह सकते हैं, न ही सुलभ। सुलभ इसलिए नहीं कह सकते क्योंकि बहुत से व्यक्ति दर्शन कर नहीं पाते। दुर्लभ इसलिए है कि व्यक्ति सही मार्ग पर चल नहीं पाते। सही मार्ग पर चलने वाला निश्चित ही मंजिल पाता है। मार्ग सही भी हो, पर चलने वाला यदि मद में हो तो भी गड़बड़ होती है। हमारी स्वयं की विडंबना यही रही है कि हम सीधे मार्ग पर चल नहीं पाते। सीधा-सा मार्ग पड़ा है, हाईवे है, पर ड्राइवर यदि नशे में है तो कभी गाड़ी को इधर उतार लेगा तो कभी उधर और कभी सड़क से नीचे ही उतार लेगा। गाड़ी को किधर से किधर भटका लेगा। सड़क खराब नहीं है, गाड़ी खराब नहीं है, पर ड्राइवर यदि सही नहीं है तो यात्रा न सुखद होगी, न सुरक्षित और न ही सफल। हो सकता है कि ड्राइवर भी सही हो, पर जिस समय वह नशे की स्थिति में चल रहा है उस समय वह सही नहीं कहा जा सकता। वैसे ही जब तक हम नशे में चलते हैं तब तक परमात्मा के दर्शन नहीं हो पाते। उन्माद या नशा भी एक तरह का नहीं होता। देवकृत उन्माद तो होता ही है, पर प्रतिष्ठा का, पद व गौरव का, धन-वैभव का भी उन्माद होता है। ऐसे अनेक प्रकार के उन्माद हैं। यदि ऐसे किसी भी उन्माद में आत्मा प्रवृत्त है या उसमें चली गई है, तो परमात्मा के दर्शन कर नहीं पाएगी, क्योंकि हम उन्माद में चल रहे होते हैं। अर्जुनमाली सरीखा व्यक्ति भी उस उन्माद में यक्ष का दर्शन कर नहीं पाया। जिस समय मुद्गरपाणि यक्ष आया, उस समय अर्जुन स्वस्थ नहीं था, उन्माद में था। इसलिए उस समय देव-दर्शन का जो दिव्य लाभ मिलना चाहिए था, वह उठा नहीं पाया, बल्कि विपरीत मार्ग पर चला गया। सामान्य से देव-दर्शन में भी उन्माद से यदि ऐसी स्थिति बनती है और देव-दर्शन के लाभ से वंचित होना पड़ता है तो परमात्म-दर्शन का लाभ कैसे उठाया जा सकता है? उत्तराध्ययन सूत्र में पृच्छा की गई -

## ‘धम्मसद्धाए णं भंते! जीवे किं जणयइ?’

- उत्तराध्ययन 29/3

भगवन्! धर्मश्रद्धा से जीव को किस फल की प्राप्ति होती है? यदि मैं अपने शब्दों में उत्तर दूँ तो वह यह होगा कि धर्मश्रद्धा से व्यक्ति का उन्माद दूर हो जाता है। शास्त्रों में यह नहीं कहा गया है कि उन्माद दूर हो जाता है, शास्त्रकार तो कहते हैं -

### सायोसोक्खेसु रज्जमाणे विरज्जई।

शास्त्र तो साता और सुख में रचे-पचे की बात करते हैं। ये साता-सुख भी एक प्रकार का उन्माद है। यदि इसे पचा पाएँ तो यह उन्माद देने वाला नहीं बनता। जैसे थका हुआ व्यक्ति छाया मिल जाए तो आराम से सोता है और फिर यदि नरम-नरम आसन मिल जाए तो झोंक में चला जाता है। आसन के बिना तो फिर भी बैठा रह सकता है, किंतु कोमल बिछौना मिल जाए तो ‘ऊँघते को बिछौना’ वाली उक्ति चरितार्थ हो जाती है अर्थात् व्यक्ति नींद में ढल जाता है। वही अवस्था बनती है यदि व्यक्ति साता और सुख में डूबा है, रँगा है, भीगा है। तब उसे पता ही नहीं चलता कि दिन में, रात में क्या हो रहा है। पड़ोस में क्या हो रहा है, इससे भी वह बेखबर रहता है। वर्तमान में यही स्थिति चरितार्थ हो रही है। आज व्यक्ति अपने बंगले तक ही सीमित है। बंगले तक भी नहीं, यदि बंगले का ही एक हिस्सा किराए वाले को दिया हुआ है तो उसे पता नहीं चलता कि उस हिस्से में क्या हो रहा है। अधिक सुख मिले तो व्यक्ति अपने स्वयं के परिवेश से भी बेखबर हो जाता है। उसे यह भी पता नहीं रहता कि उसके बच्चे किधर जा रहे हैं? उन नन्हों कोपलों का पालन-पोषण-पल्लवन कैसा हो रहा है? ऐसी स्थिति में बहुत-कम व्यक्ति बच्चों का खयाल रख पाते हैं। इतना ही नहीं, बहुत से व्यक्ति ऐसा व्यस्त मशीनी जीवन जी रहे होते हैं कि जब वे घर आते हैं तो बच्चे सो चुके होते हैं और सुबह जब वे उठते हैं तब तक बच्चे स्कूल चले जाते हैं। वे अपने बच्चों का दिन में मुँह

भी नहीं देख पाते। सोचिए कि हम किस दिशा में जा रहे हैं, कैसी हवा चल रही है? व्यक्ति कितना पाखंडी और दंभी हो गया है कि चाहे सुख-साता के साधन नहीं हों, पर शान-शौकत बड़े-बड़े व्यक्तियों के समान दिखाता है। खाने के लिए चने भी नहीं हों, पर ठसक कायम है। बंगाली लोग शाम को हवाखोरी के लिए भी जाएँगे तो अरंडी का कुर्ता और ब्रासलेट धोती पहने होंगे। उस समय का रूप देखिए और घर में रहे तब का रूप देखिए तो कोई पहचान न सके। उनकी पहचान हो या न हो, पर हमें कौन पहचान रहा है! जिस समय धर्मक्षेत्र में आते हैं तब का व्यवहार और जब घर में जाते हैं तब का व्यवहार, दुकान में कैसा रूप और फैक्ट्री में कैसा रूप! सब अलग। दिनभर में जो इतने रूप परिवर्तित होते हैं तो क्या है इसका कारण? वस्तुतः हमारे जीवन में सरलता नहीं रही। हमारे पास सुख-साता के साधन नहीं हैं, यह बात नहीं है। जो हैं उनसे संतुष्टि नहीं है और अधिक प्राप्त करने की लालसा बनी रहती है। उसी के कारण दिनभर उन्हें जुटाने की प्रवृत्ति बनी रहती है। कदाचित् ये इच्छित वस्तुएँ प्राप्त भी हो जाएँ, पर दौड़ रुक नहीं पाती। तन से थक भी जाएँ, पर मन थकता ही नहीं। वह तो आगे से आगे इच्छा पैदा करता रहता है। उसे तो वही शान-शौकत चाहिए। इसलिए शास्त्रकारों का कहना है कि यह भी एक प्रकार का उन्माद है। उसमें पड़े रहें तो सही तत्त्व धर्म को जान नहीं पाएँगे। इस स्थिति में तत्त्व के रूप में धर्म को गहराई से समझना कठिन है। उसका अर्थ प्राप्त कर सकते हैं, पर अंतर्-रहस्य प्राप्त नहीं कर सकते। तब धर्मश्रद्धा का फल क्या है? उत्तर है कि जो साता-सुख में गहरा डूबा हुआ है उसकी उससे विरक्ति हो जाती है।

सुबाहुकुमार के घर में क्या संपत्ति की कमी थी? पत्नियों की कमी थी? भोग-सामग्री या भौतिक सुख की कमी थी? और शालिभद्र को क्या कमी थी? हम जानते हैं कि उन्हें कोई कमी नहीं थी। यहाँ तक कहा जाता है कि वे सुख में इतने डूबे थे कि सूर्य उदय किधर होता है यह भी उन्हें पता नहीं था। कैसा जीवन रहा होगा उनका!



साता-सुख में कितने निमग्न थे! किंतु एक चिनगारी ने उनका जीवन बदल दिया। एक चिनगारी घास के पूरे ढेर को समाप्त करने के लिए पर्याप्त होती है। जैसे एक चिनगारी से घास का ढेर समाप्त हो जाता है वैसे ही सत्संग की एक चिनगारी हजारों अपवित्र विचारों को समाप्त कर देती है। इसी प्रकार कषाय की एक चिनगारी सारे परिवार को झुलसा देती है। चिनगारी के कई भेद बन सकते हैं, यथा- एक आग की चिनगारी है, दूसरी वैराग्य की और तीसरी, जिसे राग की कह दो या कषाय की, वह चिनगारी है। आग की चिनगारी घास को समाप्त करती है, वैराग्य की चिनगारी विषय और कषाय को नष्ट करती है, पर राग की, क्लेश की चिनगारी केवल हमारे जीवन या परिवार को ही भस्मीभूत नहीं करती। उसकी चपेट में जो भी आ जाता है वह उन सबको भस्म कर देती है।

एक व्यंग्य की चिनगारी फूटी थी द्रोपदी के मुँह से। क्या कहा था उसने! “अंधे का पुत्र अंधा होता है।” क्या परिणाम निकला था उसका? महाभारत का युद्ध हुआ था। जब रामायण और महाभारत टीवी चैनल पर पहली बार आए थे तब लोग कहते थे- महाराज! व्याख्यान बाद में दोपहर में दे देना, अभी तो टीवी पर महाभारत आ रहा है। क्या धूम मची थी! बाजार शून्य, गाड़ी बंद, दुकानों पर भीड़ खत्म! रामायण-महाभारत को देखकर हम कितने खुश होते हैं, पर अपने भीतर के रामायण-महाभारत को देखें तो? कभी हो सकता है कि हम वहाँ देखें कि महाभारत में किसने कैसी तकलीफ उठाई, वैसी हम भी उठा लें। महाभारत क्या इसलिए देखते हैं कि पता चले कि दुर्योधन कैसे पांडवों की संपत्ति हरण करने की तैयारी करता है और वह कौनसी तकनीक अपनाता है? वैसी ही तकनीक सीखने तो हम नहीं जा रहे हैं? यदि यह ही सीखना है तो कल्याण नहीं होना। वह तो अनीति की और नई तरकीबों को जोड़ने का प्रयत्न हो जाएगा। ज्ञानीजन कहते हैं- जैसे आग की चिनगारी, घास की ढेर को नष्ट करती है वैसे ही जीवन में धर्मश्रद्धा की चिनगारी लगा लो तो वह जीवन में

आमूलचूल परिवर्तन कर देगी। तब विषयों में प्राप्त सुख से अरुचि हो जाएगी। धर्म क्या है, धर्मश्रद्धा क्या है? एक वेश्या अनेको को संतुष्ट करती है। वह भी कहती है यह मेरा धर्म है। एक पिता, पुत्र को चाँटे जड़ देता है या एक सेठ मुनीम पर ऑर्डर चलाता है तो वह भी कहता है कि यह मेरा धर्म है। बहुत से व्यक्ति जो अपने भीतर इस तरह के विश्वास पाल लेते हैं, वे यथार्थ को पहचान नहीं पाते। धर्म के बारे में लोगों की अलग-अलग दृष्टि है। कई कर्तव्यपालन को, तो कई नैतिक दायित्व निर्वाह को, तो कई सेवा को धर्म मानते हैं।

शास्त्रकारों ने अहिंसा-संयम-तप को धर्म कहा है। पर यह अहिंसा क्या है? आज हम अहिंसा की परिभाषा करने में डरते हैं कि कहीं पकड़ में न आ जाएँ! आज तक परिभाषा रही है कि किसी जीव को नहीं मारना, मरते हुए प्राणी की रक्षा करना अहिंसा है, तो क्या यदि कोई जीव न रहे तो अहिंसा हो ही नहीं सकती? कोई जीव हमारे निकट रहेगा तो ही अहिंसा होगी। अहिंसा आत्मनिष्ठ है या परनिष्ठ? आज तक परनिष्ठ परिभाषा होती रही है। पर बारीकी में पहुँचे कि अहिंसा का रूप क्या हो सकता है? बारीकी से तात्पर्य है कि यदि कोई दूसरा जीव नहीं है तो आप अहिंसा में उपस्थित कैसे हो सकते हैं? तब क्या अहिंसा का अभाव हो जाएगा? नहीं। अहिंसा का अभाव तो नहीं होगा। तब फिर अहिंसा कहाँ रहेगी? इसी अनुप्रेक्षा में हम जान पाएँगे कि अहिंसा का सद्भाव आत्मनिष्ठ है। इसलिए हमारे अस्तित्व में अहिंसा का अस्तित्व बना रहेगा। अन्य प्राणी भी जब आत्मवत् दृष्टिगत होने लगते हैं तो वही अहिंसा अन्य प्राणियों की रक्षा के लिए प्रवृत्त हो जाती है। अहिंसा में उपस्थित होने का या प्रवेश पाने का साधन या माध्यम क्या है? जैसे मकान में प्रवेश करने के पहले द्वार होता है। वैसे ही धर्म में प्रवेश के लिए सम्यक्त्व द्वार है। मकान में प्रवेश द्वार होता है वैसे ही अहिंसा में प्रवेश का द्वार कौनसा है? किस द्वार से प्रवेश करना चाहते हैं यह आपके सोचने का विषय है। जल्दी नहीं है, सोचिएगा।

भगवान महावीर की आत्मा ने अहिंसा में प्रवेश किया था। फिर वही बात आ गई। अभी इसे मैं चिंतन के लिए छोड़ देता हूँ। अगर ढूँढ़िए कहलाते हो तो ढूँढ़ो। ढूँढ़ोगे नहीं तो ढूँढ़िए कैसे? अहिंसा का द्वार कहाँ है? हमने द्वार में प्रवेश पाया है या बाहर ही खड़े हैं? भगवान महावीर की आत्मा ने इसमें प्रवेश का प्रयत्न किया, किंतु कर्मों के बादल भी बहुत बड़े किले का रूप ले लेते हैं, पता ही नहीं चलता। हमें दो दिन पूर्व श्री गौतम मुनि जी ने बताया कि आचार्य श्री श्रीलाल जी म.सा. के परिवार की टोंक में इतनी बड़ी हवेली है कि एक मार्ग से प्रवेश करें, फिर वापिस आएँ तो पता ही नहीं चला कि कौनसा मार्ग द्वार की ओर जाएगा। वैसे ही अहिंसा की पोल में प्रविष्ट हो गए तो एक दृष्टि से तो प्रवेश हो गया, पर निश्चयनय में पहुँचे क्या? **निश्चयनय की अपेक्षा से जिस समय अहिंसा में प्रवेश कर लिया, अहिंसा में उपलब्ध हो गए, वही निश्चय में प्रवेश है। जरा इसे स्पष्ट समझ लें। मकान, मकान का आँगन और मकान का द्वार, एक अपेक्षा से तीनों मकान की संज्ञा में स्वीकार्य हैं। किंतु यदि भेद-दृष्टि से विचार किया जाए तो तीनों भिन्न**

**हैं। मकान व द्वार एक ही होता तो बीच में षष्ठी विभक्ति का प्रयोग नहीं होता। जैसे मैं और मेरा, दोनों का स्वतंत्र अस्तित्व है। वैसे ही मकान, मकान का आँगन व द्वार, तीनों स्वतंत्र हैं। जैसे ये तीनों भिन्न हैं उसी तरह अहिंसा, अहिंसा का आँगन और अहिंसा का द्वार भिन्न हैं। अहिंसा का आँगन संयम है और अहिंसा का प्रवेश-द्वार तप है। इन तीनों की युति धर्म है। इसे यों समझ सकते हैं कि बिना तप के संयम नहीं और संयम से रहित अहिंसा धर्म की कोटि में नहीं आ सकती। तप है तो संयम है और संयम से युक्त अहिंसा तप है। इन तीनों की युति धर्म है। हमें धर्मश्रद्धा को उपलब्ध होना है तो निश्चित कीजिए कि धर्म, जिसमें अहिंसा, संयम व तप रूप कहा गया है, उसमें हमने प्रवेश पाया है या नहीं? कहीं ऐसा तो नहीं कि हम सड़क पर ही खड़े हुए हैं। फुटपाथ पर खड़े रहना या मकान में रहना, शीतल छाया के नीचे या खुले आसमान के नीचे खड़ा रहना, अलग-अलग बातें हैं। हम चिंतन-मनन करें कि हमारी स्थिति क्या है, तभी धर्मश्रद्धा का पता लगेगा।**

साभार- श्री राम उवाच-7 (आत्मकल्याण का मार्ग) ❤️❤️❤️



हितकर वचन कड़वा हो या मीठा, प्रज्ञावान व्यक्ति उसको हित के रूप में ही लेता है। वह यह विचार नहीं करता कि उसे क्यों अनुशासित किया जा रहा है। वचनों को सुनकर मन में दो ही प्रतिक्रियाएँ हो सकती हैं - एक अनुकूल और दूसरी प्रतिकूल। **'वेसं होइ असाधुणो'** असाधु-जिसकी बुद्धि समीचीन नहीं है, जिसकी बुद्धि में तत्त्व समाविष्ट नहीं हुआ, जो संयम को नहीं जान पाया, वह मुनि उन वचनों से मन में द्वेषभाव को पैदा करता है। उसके मन में द्वेष आ जाता है कि क्या हम लोग इतने नादान हैं, इतने अनाड़ी हैं। हम कुछ नहीं समझते कि हमें टोका जा रहा है। ऐसी बातें आ जाती हैं और हमारे मन में चलती रहती हैं। हमें लगता है छोटी-छोटी बातों में टोका जा रहा है। आज तो लगेगा छोटी-छोटी बातों से क्या फर्क पड़ गया? मति में फर्क आ गया, विचारों में फर्क आ गया। जहाँ फर्क नहीं आएगा वो हित समझेगा। जो हित समझेगा उसकी प्रीत जुड़ेगी, वो प्रीत टूटेगी नहीं और जैसे ही मन में विपरीत विचार आएँगे, प्रतिकूल विचार आएँगे, उसके मन में रही हुई प्रीत धीरे-धीरे खिसकने लग जाएगी।

-परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा.

# आध्यात्मिक आरोग्यम्



-संकलित

## छिद्रान्वेषण का त्याग

परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा. का जन-जन के चिंतन हेतु अमूल्य आयाम 'आध्यात्मिक आरोग्यम्' ब्यावर की पुण्यधरा पर सन् 2021 को ज्ञान पंचमी को प्रदान किया गया था। धारावाहिक के रूप में आप सभी के समक्ष आत्मकल्याण के लक्ष्य के साथ प्रस्तुत कर रहे हैं। इसे जीवन में उतारकर अपने जीवन की आध्यात्मिक आरोग्यम् की ओर उन्मुख करें।

दोष दर्शन ना करें,  
दुर्गुण यह दुःखकर।  
कथन दोष करना नहीं,  
गुरु वचन सुखकर॥

इस बिंदु की शुरुआत एक प्रसिद्ध कहानी से करते हैं। एक शिष्य को यह पता चला कि मेरे गुरु के पास ऐसी चादर है जो किसी को ओढ़ा दी जाए तो उस पर उस व्यक्ति के अंदर रहे हुए सारे दुर्गुण अंकित हो जाएँगे अर्थात् वह चादर उसके दुर्गुणों से छप जाएगी। यह पता चलने पर वह गुरु की सेवा मन लगाकर करने लगा। उसने गुरु को खुश करने का लक्ष्य बना लिया। उसकी सेवा से खुश होकर गुरु कहने लगे कि माँग बच्चे माँग, क्या माँगता है ?

शिष्य तो सालों से इसी क्षण की प्रतीक्षा में था। इसी के लिए तो वह सेवा कर रहा था। शिष्य ने झट से वह चादर माँग ली।

गुरु ने कहा कि रहने दे, ये तुम्हारे काम की नहीं है।

शिष्य जिद पर अड़ गया। उसने हठ पकड़ ली कि मुझे तो वह चादर ही चाहिए।

गुरु जानते थे कि वह इस चादर को पचा नहीं पाएगा। उन्होंने उसे समझाने का बहुत प्रयास किया, परंतु बालहठ के सामने आखिर में गुरु को झुकना पड़ा। उन्होंने वह चादर उसे दे दी।

शिष्य को तो खिलौना मिल गया। अब कोई भी आता तो वह उस पर चादर डाल देता। गाँव का सरपंच आया, पुजारी आया, आश्रम का महंत आया, महंत की पत्नी आई, महारानी आई तो उसने इन सब पर चादर डाली। चादर डालने से उनके अंदर रहे हुए दुर्गुण उस चादर पर छपने लगे। इस तरह एक-एक करके सबकी पोल-पट्टी खुलने लगी। चादर पर छपने लगा कि यह व्यभिचारी है, इसने दूसरे का धन दबाया है, इसने धर्म का पैसा खाया है, इसका पर पुरुष से संबंध है, इसने चोरी की है, यह वेश्यावृत्ति करता है।

सबकी पोल-पट्टी जानकर शिष्य का दिमाग

खराब होने लगा। वह मन में सोचने लगा कि मैं तो इन सबको बड़ा पाक-साफ समझता था, किंतु ये तो बड़े पापी और दुर्गुणी निकले।

गुरु महाराज ये सब देख रहे थे। उन्होंने उसे समझाया, पर वह नहीं माना। मानना तो दूर एक शाम आरती के समय जब गुरुजी साष्टांग प्रतिमा वंदन कर रहे थे तो उस नासमझ शिष्य ने गुरुजी पर भी वह चादर डाल दी। गुरु उस समय समाधि में थे इसलिए उन्हें कुछ पता न चला, परंतु उस शिष्य के मन में भूचाल आ गया। वह सोचने लगा कि गुरुजी भी ऐसे हैं! उसने चादर उठाकर कंधे पर डाली और आश्रम छोड़कर भाग खड़ा हुआ।

गुरु समाधि से बाहर आए तो शिष्य को ढूँढा, पर शिष्य नहीं मिला। उन्होंने अपने दूसरे शिष्यों को उसे पकड़ने के लिए भेजा। अन्य शिष्य पकड़कर लाए तो गुरु ने कहा कि मैंने कहा था न कि ये चादर मत लो, पर तुम नहीं माने। अपनी जिद पर अड़े रहे। तुम्हारी हठधर्मिता ने तुम्हें पतन के मार्ग पर बढ़ा दिया और तुम इतने पतित हो गए कि मुझे चादर ओढ़ा दी। मैं तुमसे पूछना चाहता हूँ कि तुमने वो चादर कभी खुद को ओढ़ाई? ऐसा कहकर गुरु ने वह चादर उससे छीनकर उसको ओढ़ा दी। वह चादर क्षणमात्र में पूर्ण भर गई। गुरु ने दुबारा ओढ़ाई तो फिर भर गई। फिर ओढ़ाई फिर भर गई। गुरु बार-बार ओढ़ाते गए, चादर बार-बार भरती गई। उन्होंने शिष्य की ओर देखकर कहा कि देख, तू इतना दुर्गुणी है नहीं। मैं तुम्हें बचपन से जानता हूँ, पर दूसरों के दोषों को देखने की प्रवृत्ति ने तुम्हें दुर्गुणों का समुद्र बना दिया। यदि तुम इस चादर का ऐसा उपयोग नहीं करते तो तुम्हारा यह पतन नहीं होता। गुरु ने उससे कहा कि तुम छिद्रान्वेषण का त्याग करो, यही तुम्हारे लिए श्रेष्ठ है।

छिद्रान्वेषण की प्रवृत्ति वाला किसी को नहीं छोड़ता। सामने चाहे तीर्थंकर ही क्यों न हों। संस्कृत के एक कवि लिखते हैं- 'वपुरेव तवाचष्टे साक्षात् मिष्टान्न भोजनम्।' इसका अर्थ है काहे का वीतरागी! तुम्हारा शरीर देखकर तो लग रहा है कि तुम भोजन भट्ट,

मोदकप्रिय हो। किसी छिद्रान्वेषी ने कहा कि छत्रातिछत्र, चंवर, देव दुंदुभि, स्वर्ण सिंहासन, पुष्प वृष्टि और वीतरागता! ये कैसी वीतरागता है? ये वीतरागता है तो भोगी अवस्था किसे कहेंगे?

देखने वालों ने चंद्रमा में दोष देख लिया। सूरज को भी नहीं छोड़ा। नदी की बुराई की। पहाड़ों पर व्यंग्य किया। देवताओं की निंदा की। माता-पिता, गुरु को नहीं छोड़ा। विश्व के किसी भी व्यक्ति को नहीं छोड़ा। संस्कृत साहित्य में एक श्लोक का अर्थ है कि परमात्मा एक व्यक्ति का रूप धरकर पृथ्वी का निरीक्षण करने निकले, देखने निकले कि मैंने इतनी सुंदर सृष्टि की रचना की है, इसका लोगों में क्या प्रभाव है। वे ब्राह्मण का रूप बनाकर धरती पर घूमने लगे और लोगों से पूछने लगे कि भगवान कैसे हैं, उनकी बनाई गई धरती कैसी है? तो किसी ने कहा कि भगवान तो मूर्ख हैं, इतनी भयंकर गर्मी बनाई। किसी ने कहा कि इतनी भयंकर सर्दी बनाई। किसी ने कहा कि परमात्मा बुद्धिहीन था, जो पूरा समुद्र खारा कर दिया। पीने लायक बनाता तो कभी पीने के पानी की कमी नहीं पड़ती। किसी ने कहा कि इतने पहाड़ बनाए कि उन्हें काट-काटकर हमें रास्ते बनाने पड़ते हैं। किसी ने कहा कि इतने बड़े-बड़े जंगल बना दिए कि खेती की जमीन ही नहीं छोड़ी। कहते हैं कि ये सब सुनकर परमात्मा बेहोश हो गए। उनके अनुचर उन्हें लेकर बैकुंठ में चले गए। तब से वे कभी धरती पर आने की हिम्मत नहीं करते। यह दृष्टांत छिद्रान्वेषण को दर्शाता है।

गुरुदेव फरमाते हैं कि निंदा, अहंकार का भोजन है। आप बुराई करते हैं तो आपके अहंकार को पोषण मिलता है। अहंकारी व्यक्ति ही निंदा करता है। निंदा करने वाले के विनय का नाश हो जाता है। छिद्रान्वेषण की प्रवृत्ति हमें दुर्गुणों का सम्राट बना सकती है। निगोद की यात्रा पर ले जा सकती है।

वह तपस्या करता है और क्रोध करता है। वह ज्ञानी है और अहंकारी है। वह दानी है और अहंकारी है। बहुत गलत है, ऐसा क्यों? होने दो। वह क्रोधी है ज्ञानी

होने के बाद और तुम तो तपस्या न होने पर भी क्रोधी हो। कौन ज्यादा गलत है? तुम दान न देकर भी अहंकारी हो और वो दान देकर अहंकारी है। कौन ज्यादा गलत है? चंडकौशिक ने पूर्वभव में गुरु के दुर्गुणों का छिद्रान्वेषण किया, जिससे गुरु-शिष्य दोनों का अहित हुआ।

छिद्रान्वेषण के कारण 'कुलबालुक' सातवीं नरक में गया। छिद्रान्वेषण के कारण संगम, तीर्थकर भगवान को भयंकर उपसर्ग देने वाला बना। कमठ नौ भवों तक वैरानुबंध कर बैठा। गोशालक ने इसी कुटैव के वश होकर तीर्थकर भगवान की अशातना की। जमालि निहव बन बैठा। कौणिक पितृहंता बन गया। राक्षस ने अर्हन्नक और कामदेव श्रावक की परीक्षा ली। ऐसे न मालूम कितने लोगों के उदाहरण इतिहास के पृष्ठों पर अंकित होंगे, जिन्होंने छिद्रान्वेषण की बलिवेदी पर अपना सर्वस्व भस्मीभूत कर लिया। छिद्रान्वेषण बड़ा दुर्गुण है।

**भगवान फरमाते हैं- "न सिध्या तोत्त-गवैसए"**  
अर्थात् हे जीव! तू कभी भी छिद्रान्वेषी मत बन। छिद्रान्वेषण ऐसा छिद्र है जिससे आत्मसमाधि का रिसाव होता है और प्रसन्नता का क्षरण होता है। खुशी कपूर की भाँति उड़ जाती है। अविनय-अशातना उसके परम मित्र हैं। क्रोध उसका भाई है। मान उसका पिता है। माया उसकी बहन है। द्वेष उसका पुत्र है। पैशुन्य और पर परिवार, अभ्याख्यान उसके अनुचर हैं, दास-दासी हैं। छिद्रान्वेषण से सारे दोष आपके जीवन में दौड़े चले आते हैं। उसकी अंतिम निष्पत्ति मिथ्यात्व उसकी माँ है। मिथ्यात्वी जीवन कभी भी संसार पारावार का पार नहीं पा सकता। वह अनंतानंत काल तक भवभ्रमण करता ही रहता है।

**इसलिए गुरुदेव फरमाते हैं, ऐ शिष्य! छिद्रान्वेषण का त्याग करो। छिद्रान्वेषी का कोई मित्र नहीं हो सकता।** उसके पास कोई बैठना नहीं चाहेगा। कोई उससे बात नहीं करना चाहेगा। लोग बात करने में हिचकिचाएँगे, नजरें चुराएँगे, रास्ता बदल लेंगे। संक्षेप में वे सबसे कट जाएँगे। जिसके भीतर छिद्रान्वेषण नामक दुर्गुण घर बसा लेता है, वह किसी को नहीं बखशाता। वह सबका दोष-दर्शन

करेगा। सबकी बुराई करना उसका शगल हो जाएगा।

आधुनिकता के इस दौर में आई.टी. के क्षेत्र में अतिरिक्त तरक्की हुई है। 2जी, 4जी के बाद अब 5जी भी बाजार में आ चुका है। पहले 1 जीबी डेटा एक महीना चला करता था, अब 1 दिन में 3-3 जीबी डेटा भी कम पड़ जाते हैं। कहाँ जाता है 3 जीबी? 3 जीबी यह जानने में चला जाता है कि दूसरा क्या कर रहा है। उसने क्या खाया। उसने क्या पहना। उसने क्या कहा। किसी की छोटी-सी गलती भी नोट कर ली जाती है और उसका मैसेज वायरल हो जाता है। वॉट्सएप ग्रुप का एडमिन किसी के प्रति भी मनगढ़ंत बातें अपने ग्रुप में डाल सकता है। मनगढ़ंत बातें डालना क्या दर्शाता है?

**किसी ने कहा है कि स्मार्टफोन रखने से कोई स्मार्ट नहीं होता, बल्कि स्मार्ट बनता है अपने विचारों से।** इन दिनों हमारा समय फिजूल की गॉसिप में जाता है। इस दौर में PNPC सबके सिर चढ़कर बोल रही है। PNPC अर्थात् पर निंदा पर चर्चा। इसमें कोई पीछे नहीं है। क्या साधु, क्या साध्वी, क्या श्रावक और क्या श्राविका। संघ के धर्म मंच को भी इसने नहीं छोड़ा। पुराना अध्यक्ष ऐसा है, पुराना मंत्री ऐसा है। वर्तमान अध्यक्ष ऐसा है, वर्तमान मंत्री ऐसा है। फलाँ श्रावक ऐसा, फलाँ साधु वैसा। फलाँ संप्रदाय में ऐसा हुआ, उनके साधु ने ऐसा किया। क्या सच है, क्या झूठ है, क्या सही है, क्या गलत है, कितना सच है, कितना झूठ है, कितना सही है, कितना गलत है, इसकी समीक्षा किए बिना हम तो बस PNPC में लगे रहकर ऐसे वीडियो या मैसेज को फॉरवर्ड करने में अपनी शान समझते हैं। हम यह भी नहीं सोचते कि हमारे मैसेज से कितना वैचारिक प्रदूषण फैलेगा! कितने लोगों के मन में कैसे-कैसे विचार आएँगे! ऐसा करने पर दूसरे संघ वालों अथवा अजैनों पर क्या प्रभाव पड़ेगा! वे हमारे बारे में क्या सोचेंगे!

कई 'पुण्यवान' तो उन सूचनाओं में गुरुजनों को भी घसीट लेते हैं। उनको ये नहीं पता चलता कि हमारी यह प्रवृत्ति कितने चिकने कर्मों का बंध कराने वाली है।

कितने लोगों को धर्म से दूर कराने वाली है। कितने लोगों की भावना गिराने वाली है। कितने लोगों के मन को विचलित करने वाली है। इन सबका कारण होता है सिर्फ और सिर्फ आपका एक मैसेज...

गुरुदेव फरमाते हैं कि जो बात है मुझसे कहो। चर्चाओं का बाजार गर्म मत करो। एक तरफ हम बड़े गुरुभक्त बनते हैं और दूसरी ओर उनकी आज्ञा की अवहेलना करते हैं। हम संकल्प करें कि किसी भी प्रकार से ऐसी प्रवृत्ति में भाग नहीं लेंगे। कदाचित किसी की कोई गलती ध्यान में भी आ जाए तो हम उसे प्रचारित नहीं करेंगे। जैसे कोई हमारी गलती प्रचारित करे तो हमें अच्छा नहीं लगता, वैसे ही किसी को भी अपने बारे में ऐसा करना अच्छा नहीं लगता। छिद्रान्वेषण से अवर्णवाद पैदा होता है। आक्षेप-प्रत्याक्षेप पैदा होते हैं। अशातना का भाव बढ़ता जाता है।

छिद्रान्वेषण होगा तो अवर्णवाद हुए बिना नहीं रहेगा। मुँह से कुछ-न-कुछ अवांछित निकलेगा ही। अवर्णवाद हमें दुर्लभ बोधि बनाता है। दर्शन को मलिन करता है। सम्यक्त्व रूपी रत्न को गंदा करता है। छिद्रान्वेषण से आक्षेप-प्रत्याक्षेप होते हैं। बात तू-तू, मैं-मैं में बदल जाती है। छिद्रान्वेषी छींटाकशी, तंज और व्यंग्य करने से भी नहीं चूकता। बात बढ़ते-बढ़ते कोर्ट कचहरी तक चली जाती है।

आप देखिए, कितने भाई-भाई, पिता-पुत्र, गुरु-शिष्य, समाज के ट्रस्टी, मंदिर के पुजारी, कोर्ट कचहरी तक पहुँच जाते हैं। अशातना छिद्रान्वेषण के कारण ही होती है। छिद्रान्वेषण होगा तो अशातना भी होगी। छिद्रान्वेषी गुरुजनों, साधु-साध्वियों, श्रावक-श्राविकाओं, छोटे-बड़ों की अशातना कर बैठता है। मेरी भावना में कहा गया है 'देख दूसरों की बढ़ती को कभी न ईर्ष्या भाव धरूँ।' ईर्ष्या होने पर ही छिद्रान्वेषण होता है। इसलिए संकल्प करें कि प्रथम तो छिद्रान्वेषण करेंगे ही नहीं और कदाचित हो जाए तो उसको कहेंगे नहीं, उसको प्रचारित नहीं करेंगे। हमें दोषों को नहीं, गुणों को ढूँढ़ने का

### प्रयास एवं प्रयत्न करना चाहिए!

एक बात ध्यान में लेने जैसी है कि कोई काला है तो है, आप क्यों कहते हैं। कोई गंजा है तो है, कोई मोटा है तो है, कोई काना है तो है, कोई अनपढ़ है तो है। आप को क्या पड़ी है कहने की! कहकर आप कौन-सा तीर मार लेंगे! कहकर आप कौन-सा नौ का तेरह कर लेंगे! आपके कहने से कोई बदलेगा तो नहीं! और तो और आप जिसको कह रहे हैं उसके दिल को ठेस पहुँचेगी। इसलिए छिद्रान्वेषण करें ही नहीं। हो जाए तो कहें नहीं।

आप मक्खी और हंस को देखे होंगे। हंस चोंच से दूध पी लेता है और पानी छोड़ देता है जबकि मक्खी सोलह शृंगार किए हुए किसी युवती के सिर पर छोटा-सा घाव है तो उस पर जाकर बैठती है। देखना है कि हम हंस जैसे हैं या मक्खी जैसे?

एक राजकुमारी ने एक सुअर का बच्चा पाला। राजा द्वारा बहुत मना करने पर भी उसने बालहठ पकड़ ली। वह उसे सोने की जंजीर में बाँधकर रखती। उसे चाँदी के पात्रों में भोजन करवाती और मखमली शय्या पर अपने पास सुलाती। राजा बहुत मना करता, पर...।

एक बार राजकुमारी अपने साथ उसे अपनी सखी के यहाँ ले गई। वहाँ उसे देखकर सभी हँसने लगे, पर कौन कहे। उसके लिए चाँदी के पात्रों में मिष्ठान्न रखा गया। सुअर खाने लगा। इतने में ही राजपरिवार का कोई शिशु पोटी कर देता है। वह सुअर मिठाई छोड़कर विष्टा खाने दौड़ पड़ता है। राजकुमारी को आत्मग्लानि होती है। सुअर की नजर मिठाई छोड़कर विष्टा पर चली गई।

हमें अपनी नजर पर ध्यान देना है कि वह कहाँ जाती है। हमारी नजर सदगुणों की तरफ जाती है या अवगुणों की ओर! हम किन चीजों की चर्चा करते हैं! दोष रूपी विष्टा हमें लुभाती है या हम गुणरूपी मिष्ठान्न का आस्वादन करते हैं! हमें देखना है कि हम क्या कर रहे हैं! हम अपने मुँह से किसी की बुराई न करें।

किसी शायर ने कहा है-

“माना कि हम बुरे हैं, पर आप कहते हैं तो  
दिल दुखता है।”

किसी ने कहा है-

“बुरा जो देखन मैं चला, बुरा न मिलिया कोय।  
जो घट शोधू आपणों, मो सो बुरो न कोय।।”

हमें दूसरों के छिद्रों का अन्वेषण करने से पहले  
आत्मनिरीक्षण करना चाहिए। हम जब आत्मनिरीक्षण  
करेंगे तब पता चलेगा कि हम कैसे हैं।

“कबीर औगन ना गहे, गुन ही ली बीनी।

घट-घट मधु के मधुप ज्यों, परमात्म ही चीन्ही।।”

कबीर कहते हैं- अवगुण को मत ग्रहण करो।  
हो सके तो गुणों को लेना। जैसे भँवरा फूलों से पराग  
लेकर स्वयं को तृप्त करता है, वैसे ही हमें दूसरे के गुणों  
की ओर आकर्षित होना चाहिए। किसी के अवगुणों  
पर ध्यान नहीं देना चाहिए। अवगुणों को देखकर मन  
को मलिन नहीं करना चाहिए। यही आध्यात्मिक

आरोग्यम् की शिक्षा है।

दूसरा बिंदु छिद्रान्वेषण का त्याग पूरा हो चुका है।  
जैसे पहले बिंदु के बाद थोड़ा-सा रुके, सोचे, वैसे ही  
पुनः रुकिए, सोचिए और आगे बढ़िए।

पुनः वादा करिए कि आगे के बिंदुओं को पूर्व  
की भाँति 21 दिनों तक अपनी जीवनशैली का हिस्सा  
बनाने की कोशिश करेंगे। वादा करें अपने आप से कि  
आप अगले 21 दिन तक ये करेंगे। इसे अपने जीवन  
का हिस्सा बनाएँगे।

पुनः वादा करिए कि आगे के बिंदुओं को पूर्व  
की भाँति 21 दिनों तक अपनी जीवनशैली का हिस्सा  
बनाने की कोशिश करेंगे। वादा करें अपने आप से कि  
आप अगले 21 दिन तक ये करेंगे। इसे अपने जीवन  
का हिस्सा बनाएँगे।

1. किसी की गलती सबके सामने नहीं बताएँ।
2. आप गलत हो ऐसा कहने की बजाय यह कहें कि  
ऐसा करते तो और अच्छा हो जाता।
3. वॉट्सएप पर गलत मैसेज नहीं डालें।
4. जहाँ बुराई हो रही हो वहाँ से उठ जाएँ।
5. किसी को टॉट नहीं मारें।

साभार- आध्यात्मिक आरोग्यम्

हम यदि दूसरों के दोष देखना शुरू कर देंगे तो दोष अपने भीतर इकट्ठे करते हुए  
चले जाएँगे। दोष इकट्ठे करते-करते हम स्वयं दोषी हो जाएँगे। यह बात केवल  
गुरु-शिष्य की ही मत समझना। पिता और पुत्र की बात भी सामने आती है।  
सास और बहू के संबंध में भी यह बात है। सास यदि बहू की गलती ढूँढ़ेगी तो  
उसका दिल गलतियों से भरेगा। इसी प्रकार बहू यदि सास की गलती देखेगी  
तो घर में कलह मच जाएगा या शांति का वातावरण बनेगा? यह दृष्टि का  
बहुत बड़ा अंतर है। दृष्टि के इस अंतर के कारण ही हमारा दिल बहुत दुःखी  
हो जाता है। उसके कारण ही यह संसार है। उसी कारण से आज तक हम  
संसार में भ्रमण करते आए हैं। यदि हमारी दृष्टि इतनी विपरीत नहीं बनती  
तो हम कभी के मोक्ष में चले गए होते। हम यहाँ मिलते ही नहीं। हमारी दृष्टि की  
विपरीतता ही है जिसने हर वक्त, हर क्षण दोष ढूँढ़ने का काम किया है।

-परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा.

# श्रीमत् प्रज्ञापनासूत्र प्रश्नमाला

15-16 दिसंबर 2024 अंक से आगे...

संकलनकर्ता - कंचन कांकरिया, कोलकाता

**प्रश्न 138 अंतर्द्वीप यावत् उत्तरकुरु (86) युगलिक क्षेत्रों के मनुष्यों का संक्षिप्त वर्णन कीजिए।**

**उत्तर** 86 युगलिक मनुष्यों में स्वामी-सेवक व्यवहार नहीं होता है। अतः सभी 'अहम्इंद्र' होते हैं। इन्हें वस्त्र, आहार आदि भोगोपभोग के साधन वृक्षों से प्राप्त होते हैं।

- (1) अंतर्द्वीपों के वृक्षों के फलों का स्वाद, भूमि का माधुर्य एवं सुख, सौंदर्य आदि सभी पर्यायों से हैमवन्त, हैरण्यवत की सभी पर्यायें अनंत गुणा अधिक होती हैं।
- (2) उनसे हरिवर्ष, रम्यकवर्ष में अनंत गुणा अधिक होती हैं।
- (3) उनसे देवकुरु, उत्तरकुरु में अनंत गुणा अधिक होती हैं।

**प्रश्न 139 कर्मभूमिज मनुष्य कितने प्रकार के हैं?**

**उत्तर** कर्मभूमिज मनुष्य 15 प्रकार के हैं। यथा - 5 भरत के, 5 ऐरवत के और 5 महाविदेह क्षेत्र के। ये संक्षेप में 2 प्रकार के हैं - आर्य और म्लेच्छ।

**नोट** - शिष्टाचार और जीवन व्यवहार की अपेक्षा कर्मभूमिज मनुष्यों के आर्य और म्लेच्छ, ये दो भेद किए गए हैं।

**प्रश्न 140 म्लेच्छ मनुष्य किसे कहते हैं?**

**उत्तर** जिनकी भाषा और आचार स्पष्ट न हो (लक्ष्य रहित हो) यानी शिष्टजनों में मान्य न हो, वे मनुष्य म्लेच्छ कहलाते हैं। 'म्लेच्छ' धातु अव्यक्त भाषा के अर्थ का वाचक है। प्रवचन सारोद्धारवृत्ति पत्र 445 में म्लेच्छ के स्थान पर अनार्य शब्द का प्रयोग किया गया है।

**प्रश्न 141 म्लेच्छ मनुष्य कितने प्रकार के हैं?**

**उत्तर** म्लेच्छ मनुष्य अनेक प्रकार के कहे गए हैं। यथा - शक, यवन, किरात, शबर, बर्बर, सिंहल, चिलात आदि 55 नामों का उल्लेख शास्त्र में है।

## आर्य का थोकड़ा - पद 1

**प्रश्न 142 आर्य किसे कहते हैं?**

**उत्तर** जो त्याज्य (पाप) धर्मों से दूर रहता है और गुणों से युक्त हो, उसे आर्य कहते हैं तथा जिसके पास जाया जाए उसे आर्य कहते हैं।

**आचरणीय बिंदु** - जैसे चंदन वृक्ष के समीप रहने वाले वृक्ष सुगंधित हो जाते हैं, उसी प्रकार गुणवानों के



पास जाने से आत्मा गुणवान बनती है।

**प्रश्न 143** आर्य कितने प्रकार के हैं?

**उत्तर** आर्य 2 प्रकार के हैं। यथा - ऋद्धि प्राप्त आर्य और अनृद्धि प्राप्त आर्य।

**प्रश्न 144** ऋद्धि प्राप्त आर्य के कितने भेद हैं?

**उत्तर** ऋद्धि प्राप्त आर्य 6 प्रकार के हैं। यथा - (1) अर्हत (तीर्थकर) (2) चक्रवर्ती (3) बलदेव (4) वासुदेव (5) चारण (जंघाचारण, विद्याचारण) और (6) विद्याधर।

**प्रश्न 145** ऋद्धि प्राप्त आर्य में आचार्य आदि भावितात्मा अनगार का कथन क्यों नहीं है?

**उत्तर** संभावना है कि यहाँ ऋद्धि शब्द से आध्यात्मिक लब्धियाँ नहीं लेकर जीवन की बाह्य विशिष्टताएँ ली गई हैं, जिनके कारण वे साधारण मनुष्यों से अलग मालूम पड़ते हैं।

**प्रश्न 146** तीर्थकर, चक्रवर्ती, बलदेव और वासुदेव की बाह्य विशिष्टताएँ कौनसी हैं?

**उत्तर** (1) तीर्थकर भगवान 34 अतिशय और अशोक वृक्ष आदि 8 महाप्रतिहार्यों से युक्त होते हैं। समय-समय पर देव रत्नमय त्रिगढ़ (समवसरण) की रचना करते हैं।  
 (2) विशाल राज्य, विपुल ऐश्वर्य और 16 हजार देवों के स्वामी चक्रवर्ती 6 खंडों पर विजय प्राप्त करने के लिए महाप्रभावशाली एकेंद्रिय व पंचेंद्रिय रत्नों के साथ प्रस्थान करते हैं, तब हजार यक्ष देवों से घिरा हुआ 'चक्ररत्न' उनका मार्गदर्शन करता है।  
 (3) बलदेव के पास भी कुबेर से प्राप्त उत्तम आभूषण एवं रत्न होते हैं।  
 (4) वासुदेव के पास सुदर्शन चक्र, शंख, धनुष, गदा, वनमाला, कोस्तुभ मणि और खड्ग - ये 7 रत्न होते हैं, जिनकी 1000-1000 देव सेवा करते हैं तथा दोनों भुजाओं की 500-500 देव सेवा करते हैं। इस प्रकार वासुदेव 8 हजार देव और 3 खंड के जीवनपर्यंत स्वामी होते हैं।

**ज्ञातव्य बिंदु** - तीर्थकर, चक्रवर्ती, बलदेव, वासुदेव इन चारों के साता वेदनीय, उच्च गोत्र, उत्तम रूप, प्रथम संहनन, प्रथम संस्थान, आदेय, यशकीर्ति आदि नाम कर्म की श्रेष्ठ प्रकृतियों का उदय व अंतराय कर्म का विशेष क्षयोपशम होता है।

**प्रश्न 147** चारण मुनि (विद्याचारण और जंघाचारण मुनि) तथा विद्याधरों को ऋद्धि प्राप्त आर्य में क्यों लिया गया है?

**उत्तर** समवसरण आदि में तीर्थकर भगवान की देशना सुनने एवं पर्युपासना करने चारण मुनियों और विद्याधरों का उड़कर आना-जाना होता है। साधारण मनुष्य आकाश में उड़ नहीं सकते। इस विशेषता के कारण इन्हें ऋद्धि प्राप्त आर्य में लिए जाने की संभावना है - तत्त्व बहुश्रुत गम्य।

**प्रश्न 148** 63 प्रशंसनीय पुरुषों में तीर्थकर, चक्रवर्ती, बलदेव, वासुदेव और प्रतिवासुदेव होते हैं, तो इस आगम में प्रतिवासुदेव को ऋद्धि प्राप्त आर्य में क्यों नहीं लिया गया है?

**उत्तर** वासुदेव की तरह प्रतिवासुदेव भी न्याय नीति संपन्न, मर्यादा पालक एवं सदाचारी पुरुष होते हैं, किंतु प्रतिवासुदेव के पिछली उम्र में पुण्य समाप्ति पर रहता है, इसलिए उनसे ऐसी कोई अप्रशंसनीय घटना हो जाती है जिसके कारण वे वासुदेव से पराजित होकर मृत्यु को प्राप्त करते हैं। जैसे- सीता का अपहरण करने के कारण प्रतिवासुदेव रावण लोक निंदनीय बनकर वासुदेव द्वारा मृत्यु को प्राप्त हुए। संभावना है कि वे जीवनपर्यंत अजेय नहीं रहते हैं, इसलिए इन्हें ऋद्धि प्राप्त आर्य में नहीं लिया गया है।

साभार- श्रीमत् प्रज्ञापनासूत्र प्रश्नमाला

-क्रमशः ❤️❤️❤️

## श्रीमद् उत्तराध्ययनसूत्र

## द्वादश अध्ययन : हरिणसिज्जं

15-16 दिसंबर 2024 अंक से आगे....

संकलनकर्ता - सरिता बैंगानी, कोलकाता

## पूर्व चित्रण

मुनि में प्रविष्ट तिंदुक यक्ष ने ब्राह्मणों को पुनः एषणीय आहार देने की याचना की। तब अध्यापकों की प्रेरणा से छात्रों ने मुनि पर प्रहार किया। तभी वहाँ रुद्रदेव पुरोहित की पत्नी राजपुत्री भद्रा पहुँची और उसने अपने पूर्व अनुभव के आधार पर ब्राह्मणों एवं छात्रों को हरिकेशबल मुनि के अंतरंग स्वरूप से अवगत कराया।

## भद्रा द्वारा मुनि की अशातना का दुष्परिणाम एवं कर्तव्य की प्रेरणा

भद्रा ने मुनि के तप, त्याग, संयम एवं अनासक्ति से परिचित कराते हुए उन्हें भिक्षु का निरादर करने के बदले उनका सत्कार, सम्मान एवं भक्ति करने की प्रेरणा देती है। इसी में भद्र पुरुषों का कल्याण है। ऐसे सुभाषित वचनों को सुनकर तपस्वी ऋषि की वैयावृत्य (सेवा) के लिए यक्ष ने उन ब्राह्मण कुमारों को भूमि पर गिरा दिया। इसके पश्चात् जो हुआ वह भगवान महावीर स्वामी ने इस प्रकार फरमाया है -

ते घोररूवा ठिय अंतलिकखे, असुरा तहिं तं जणं तालयंति।  
ते भिन्नदेहे रुहिरं वमंते, पासित्तु भद्दा इणमाहु भुज्जो॥25॥

**भावार्थ** - वह यक्ष घोर-रौद्र रूप धारण करके आकाश में स्थित होकर वहाँ से उस यज्ञशाला में ब्राह्मण कुमारों को कष्ट पहुँचाने लगा। प्रहारों से जर्जरित हुए कुमारों के शरीर और उन्हें खून की उल्टी करते हुए देखकर भद्रा ने पुनः कहा -

गिरिं नहेहिं खणह, अयं दंतेहिं खायह।  
जायतेयं पाएहिं हणह, जे भित्खुं अवमण्णह॥26॥

**भावार्थ** - “तुम सब जो इन महाऋषि की अवज्ञा कर रहे हो, मानो अपने नखों से पर्वत को खोद रहे हो, दाँतों से लोहे को चबा रहे हो और पैरों से अग्नि को रौंदने का प्रयत्न कर रहे हो।”

**इस गाथा का आशय है** - जिस तरह नखों से पर्वत को खोदने पर नखों का ही नाश होता है, पर्वत का कुछ नहीं बिगड़ता है। दाँतों से लोहे को चबाने से दाँतों की ही जड़ें हिल जाती है, लोहे को कुछ क्षति नहीं पहुँचती है। प्रज्वलित अग्नि को पैरों से रौंदने से पैरों में ही जलन होती है, अग्नि ताड़ित नहीं होती है। उसी प्रकार भिक्षु का अपमान करने से इनकी कुछ हानि नहीं होगी, किंतु इससे जीव अपने विनाश का रास्ता तैयार कर लेता है।

अतः निर्ग्रथ मुनि की अवहेलना कभी भी नहीं करनी चाहिए। केवल उनका सम्मान-सत्कार करने से जीव जन्म-मरण के चक्रव्यूह से मुक्त हो जाता है।

**आसीविसो उग्गतवो महेसी, घोरत्वओ घोरपरत्वको य।  
अगणिं व पक्खंद पयंगसेणा, जे भित्खुयं भतकाले वहेह॥27॥**

**भावार्थ** - “ये महर्षि आशीविष लब्धि से संपन्न एवं घोर व्रती और घोर पराक्रमी (पुरुषार्थी) हैं। भिक्षा के समय में जो भिक्षु को वेदना पहुँचाते हैं, वे पतंगों की सेना की तरह अग्नि में गिरते हैं।”

**आसीविसो** - आशीविष लब्धि - जिसके दाढ़ में विष होता है अर्थात् श्राप से करोड़ों मनुष्यों को भस्म करने वाली लब्धि।

**उग्गतवो** - उग्रतप - यानी जो उपवास से लेकर मासखमण आदि तपों को प्रारंभ करके जीवनपर्यंत उनका निर्वाह करते हैं।

**इस गाथा से भद्रा का आशय है** - जिन मुनि को तुम लोग अकारण कष्ट पहुँचा रहे हो, इनका अपमान करने पर इनका तो कुछ भी बिगड़ने वाला नहीं, किंतु बिगाड़ा तुम्हारा ही होगा, क्योंकि वे एक क्षण में तुम को भस्म करने की शक्ति वाले हैं। इनकी शक्ति अपार है। अतः कर्तव्य की दृष्टि से उचित है कि हमें उनका सम्मान करना था, किंतु अपने मिथ्या मान के वश भिक्षा की बेला में इनका अपमान करके तुम सबने अनजाने में अपने ही हाथों से अपने लिए पतन का मार्ग तैयार कर लिया है। जैसे पतंगा आग में कूदकर खुद भस्म होता है और अग्नि का कुछ नहीं बिगड़ता। इस प्रकार मुनि के माहात्म्य का वर्णन करके अब भद्रा उनको सावधान होकर अपनी गलती को सुधारने और मुनि की शरण लेकर उनको प्रसन्न करने का उपाय बतलाती है -

**सीसेण एयं सरणं उवेह, समागया सत्त्वजणेण तुब्भे।  
जइ इच्छह जीवियं वा धणं वा, लोगं पि एसो कुविओ डहेज्जा॥28॥**

**भावार्थ** - “यदि अपना जीवन और धन चाहते हो तो तुम सब मिलकर अपने शीश झुकाकर इनकी शरण में आओ, क्योंकि यदि ये ऋषि कुपित हो गए तो समस्त जगत् को भी जला सकते हैं।”

**इस गाथा का आशय है** - जैसे प्रलयकाल की उग्र अग्नि प्रज्वलित होती है, वैसे ही ये तपस्वी मुनि तैजस शक्ति से युक्त हैं। इसलिए भद्रा ब्राह्मणों को समझाती है कि अपने अपराध करने पर यदि उस अपराध की क्षमा माँग ली जाए तो वह अपराधी अपने अनिष्ट से बच सकता है। अतः उसने सभी को अपने अभिमान का परित्याग करके इन ऋषि के चरणों में झुकने की सलाह दी।

## छात्रों की दुर्दशा

भद्रा के इस कथन को सुनकर रूद्रदेव पुरोहित तथा सभी ब्राह्मण कुमारों ने जो देखा और किया वह निम्नांकित गाथाओं में प्रकट किया गया है -

**अवहेडिय-पिडि-सउत्तमंगे, पसारियाबाहु अकम्मचिडे।  
निब्भेरियच्छे रुहिरं वमंते, उडुंमुहे निग्गयजीह-नेते॥29॥**

**भावार्थ** - मुनि को प्रताड़ित करने वाले छात्रों के मस्तक पीठ की ओर झुक गए। दोनों बाहें फैल गईं। वे निष्क्रिय हो गए। उनकी आँखें खुली की खुली रह गईं। उनके मुख से रक्त बहने लगा और नेत्र व जिह्वा बाहर निकल आए।

ते पासिया खंडिय कइभूए, विमणो विसन्नो अह माहणो सो।  
इसि पसाएइ सभारियाओ, हीलं च निंदं च खमाह भंते!!130!!

**भावार्थ** - उन छात्रों को काष्ठ के पुतले के समान देखकर रूद्रदेव पुरोहित विमनस्क-घबराया हुआ तथा उदास एवं व्याकुल होकर अपनी पत्नी भद्रा सहित उन ऋषि हरिकेशबल मुनि के समक्ष जाकर उनको प्रसन्न करने लगा— “भंते! हमने आपकी जो हीला-अवज्ञा एवं निंदा की, कृपा करके उसे क्षमा करें।”

**विमणो विसन्नो** अर्थात् चिंता, खेद, खिन्न। ये कुमार कैसे होश में आएँगे, इस चिंता से व्याकुल।

**खमाह** - भगवन्! क्षमा करें।

- क्रमशः ♥♥♥♥

ॐॐॐॐ

भक्ति रस

ॐॐॐॐ

## प्रेरणा हमारे...

- कु. वृत्ति सांखला, जगदलपुर

प्रेरणा हमारे हैं हम सब के गुरु राम,  
इनके शुभ चरणों में करते हैं प्रणाम।  
संघ की आप रौनक हैं क्या हम करें गुणगान,  
इनके ही वचनों पर चलकर करेंगे हम भव पार॥ प्रेरणा हमारे...॥टेर॥

चैत्र सुदी चौदस का वह पावन दिन था,  
जिस दिन आपने इस धरती को धन्य किया था।  
भूरा कुल उजियारे, गवरा-नेम दुलारे,  
साधु बनूँगा कहा, बारह की उमर में।  
सुन के अनाथी कथा, मन में ये सोचा था,  
चर्म रोग ठीक हो जाने से लूँगा मैं दीक्षा॥ प्रेरणा हमारे...॥1॥

माघ सुदी बारस की वह पावन घड़ी थी,  
जिस दिन नाना गुरु से दीक्षा ग्रहण करी थी।  
मुनि बन जो आए, देशनोक फिर हर्षाए,  
पहला चातुर्मास किया अपनी मातृभूमि में।  
नवें पट्टधर बनकर, संघ का बढ़ाया मान,  
व्यसनमुक्ति का संदेश देकर किया कल्याण॥ प्रेरणा हमारे...॥2॥ ♥♥♥♥

वर्त्म - एक दिन दीक्षा लूँगा

# सेवा का कठोरताम्र व्रत

संस्कार सीरिज

## धर्ममूर्ति आनंद कुमारी

15-16 दिसंबर 2024 अंक से आगे...

(आप सभी के समक्ष 'धर्ममूर्ति आनंद कुमारी' धारावाहिक के रूप में प्रकाशित हो रहा है, जिसमें आचार्य श्री हुवमीचंद जी म.सा. की प्रथम शिष्या महासती श्री रंगू जी म.सा. की पट्टधर महासती श्री आनंद कँवर जी म.सा. का प्रेरक जीवन-चारित्र प्रतिमाह पाठकों के समक्ष प्रस्तुत किया जा रहा है।)

**मा** नव जीवन परस्पर सहयोग से चलता है। कोई मनुष्य यह सोचकर बैठ जाए कि मैं तो किसी से किसी प्रकार की सहायता न लूँगा, तो उसका काम एक दिन भी न चले। जंगल में एकांत निवास करने वालों को भी प्रकृति की सहायता की आवश्यकता रहती है। साधु जीवन यद्यपि निस्पृह जीवन है। इस जीवन में संसार के प्रपंचों में पड़ने की विशेष आवश्यकता नहीं रहती, फिर भी आहार, पानी, वस्त्र-पात्र आदि साधनों के लिए गृहस्थों पर ही निर्भर रहना पड़ता है। यद्यपि साधु-साध्वी थोड़ा-सा लेकर बदले में बहुत कुछ देते हैं, लेकिन उनके देने का तरीका और है। साधु जीवन में भी साधुओं या साध्वियों में किसी की अशक्तता के कारण परस्पर सहायता लेनी-देनी पड़ती ही है। इस विशेष सहायता का नाम ही सेवा है। इसे जैन परिभाषा में 'वैयावृत्य' कहते हैं।

सेवा का व्रत बड़ा ही कठोर है। थोड़ी-सी असावधानी से परस्पर कटुता उत्पन्न हो जाती है। थोड़ी-सी बात में ही 'मैं और तू' के कारण वाक्कलह

खड़ी हो जाती है। सेवाव्रती इन सब बातों को सहन करता है। उसे अपना दिल मजबूत बनाना पड़ता है और 'क्षणै रुष्टाः क्षणै तुष्टाः' की वृत्ति छोड़नी पड़ती है। सेवा करने वाले को अपना जीवन एक तरह से दूसरों को बेच देना पड़ता है। अपने मन को कुचल कर नियंत्रित करना पड़ता है। उसे उसके पूज्य पुरुष तीर की तरह जहाँ कहीं फेंके वहाँ जाना पड़ता है। इसीलिए तो नीतिकारों ने कहा है -

**'सेवा-धर्मः परमगहनो, योगिनामप्यगम्यः।'**

'सेवा धर्म अत्यंत कठिन है। योगियों के लिए भी यह अगम्य है।' दूसरे की मनोवृत्ति के अनुसार चलना कितना कठिन है। अपने बताए हुए मार्ग पर तो सभी चलने को तैयार रहते हैं, पर दूसरों के बताए मार्ग पर चलने में ही बलिहारी है।

साध्वी श्री आनंद कुमारी जी म.सा. ने भी अपना जीवन सेवामय बना रखा है। दीक्षा लेने से अब तक उन्होंने अपनी गुरु पूजनीय बड़ी साध्वी श्री आनंद कुमारी जी म.सा. की छत्रछाया में ही अपना प्रामाणिक

जीवन व्यतीत किया था और कहीं पर भी उनके और संप्रदाय के गौरव को ठेस नहीं लगाई। दीक्षा लेने के बाद सरलभाव से उक्त महासती जी की सेवा में ही अधिकांश अपने को समर्पण कर देना और जैन संघ की यथाशक्य सेवा करना ही आपका काम था। आपने सेवा करके सतियों के कठोर वचन भी सहे, दूसरी छोटी सतियों की अवमानना भी सहन की। मानो आपकी छाती विधाता ने वज्रमय ही बनाई हो।

ब्यावर से विहार हुआ। रास्ते की कठिनाइयाँ कम नहीं थीं, फिर भी साहसियों के लिए कोई बात नहीं है। यात्री का थककर बैठ जाना कैसा! उसे तो चलना है, चले चाहे धीरे ही। वयोवृद्धा साध्वी श्री केसर कुमारी जी की कमर में काफी दर्द रहता था। सर्दों के दिन थे। अतः कड़ाके की ठंड पड़ती थी। फिर भी सेवाव्रत की अग्रगामिनी साध्वी श्री आनंद कुमारी जी म.सा. उनके मार्ग को बहुत हलका कर रही थीं। उनकी रास्ते की सेवा बड़ी सराहनीय थी।

सोजत निकटवर्ती हो रहा था। सोजत संघ को जब यह समाचार मालूम हुआ कि हमारे यहाँ धर्म-नौका साध्वी जी स्थिरवास के लिए पधार रही हैं तो उन्हें ऐसा अपूर्व आनंद हुआ जैसे आकाश में मेघगर्जन सुनकर मयूर को होता है। एक साथ उन्हें दुगुना लाभ हो रहा था। एक ओर तो स्थिरवास के लिए चरित्रशीला बड़ी साध्वी श्री आनंद कुमारी जी व साध्वी श्री केशर कुमारी जी पधार रही थीं, दूसरी ओर सोजत भूमि की अमरबेल साध्वी श्री आनंद कुमारी जी का भी सान्निध्य मिलने वाला था। सोजत के लोगों को ऐसा मालूम पड़ता था मानो हमारे घर बैठे कल्पवृक्ष आ रहा हो। शहरवासियों ने अपूर्व उत्साह के साथ आपका नगर प्रवेश कराया। अब तो सोजत एक प्रकार की आनंदपुरी बन रहा था। क्यों न बने! जहाँ दो-दो आनंद कुमारी जी विराज रही हों, वह स्थान आनंद से खाली कैसे रह सकता है!

सोजत नगर महासतीवृंद का अपूर्व लाभ ले रहा था। महासती श्री केशर कुमारी जी वृद्ध हो चुकीं थीं, अशक्त थीं, फिर भी तपश्चर्या की ज्योति जला रही थीं। एकाएक उनके कमर में दर्द बढ़ने लगा और उन्हें अपना स्थिरवास सोजत में ही निश्चित करना पड़ा। आपकी परिचर्या में सेवाभाविनी साध्वी श्री आनंद कुमारी जी म.सा. जुट पड़ीं।

चातुर्मास का अब पूछना ही क्या! वह तो सोजत के ही भाग्य में लिखा था। सोजत संघ अपने नगर की अनुपम विभूति साध्वी श्री आनंद कुमारी जी म.सा. की सेवावृत्ति देखकर गौरवान्वित हो रहा था। उसने आपको बड़ी आशाभरी दृष्टि से देखा। आप में क्षमा, विनय, मधुर भाषण, कोमलता आदि गुणों को पाकर सोजतवासियों का आशांकुर दृढ़ हो गया। साध्वी श्री आनंद कुमारी जी के परिवार के लोग भी आपकी भव्याकृति और शास्त्रों के परिशीलन में तन्मयता का अवलोकन कर हर्ष से प्रफुल्लित हो रहे थे। आपके मुखमंडल पर वैराग्य भावना की उज्ज्वल प्रभा स्पष्टतः झलक रही थी। सभी साध्वियाँ आपके शिष्ट व्यवहार और विनयशीलता से अत्यंत संतुष्ट थीं। महासती जी तो आपको अपनी सेवा में रत देखकर हृदय से साधुवाद देती थीं। जब कोई विषम परिस्थिति होती तो साध्वी श्री आनंद कुमारी जी म.सा. को याद किया जाता। वे झटपट उचित व्यवस्था करके सारा काम निपटा देतीं।

सोजत की ही बात है। सोजत में कई दिनों से एक वृद्धा आर्या साध्वी श्री चुन्ना जी ठहरी हुई थीं। वे साध्वी श्री नंद कुमारी जी म.सा. के संप्रदाय में दीक्षित हुई थीं, पर बाद में अनबन के कारण संप्रदाय से पृथक् कर दी गई थीं।

प्रकृतियों का काम बड़ा टेढ़ा है। जो मनुष्य अपनी प्रकृति को वश में नहीं रख सकता, वह जहाँ कहीं जाता है, टिककर नहीं रह सकता। उसके मस्तिष्क में स्वच्छंद-विचरण का भूत सवार हो जाता है। प्राचीनकाल एवं

आज के नवीन युग में भी बड़े-बड़े साधक प्रकृति के खेल में परास्त हो गए हैं। सब कुछ कर सकते हैं, कड़ी धूप और सर्दी भी सहन कर सकते हैं, लंबी-लंबी तपस्याएँ भी करने में दिक्कत नहीं, उग्रविहार भी सरल है, पर प्रकृति का संयम बड़ा कठिन है। इसी कारण साधुपन में सारा किया-कराया गुड़-गोबर और काता-पींजा फिर से कपास बन जाता है। **‘स्वभावो दुरतिक्रमः’** यह वाक्य अक्षरशः सत्य है।

उक्त साध्वी जी भी प्रकृति की चपेट में आ गई थीं। उनका स्वभाव बड़ा चंड था। उस पर भी मजा यह कि वे बेले-बेले पारणा (दो-दो दिन का लगातार उपवास) करती थीं। उनकी प्रकृति की यह भी विशेषता थी कि वे किन्हीं दूसरी साध्वियों की प्रशंसा सहन नहीं कर सकती थीं। सोजत के श्रावकगण बड़ी साध्वी श्री आनंद कुमारी जी म.सा. आदि की तारीफ उनके सामने करते तो वे बाहर से तो उनके सामने कुछ कह नहीं सकती थीं, पर मन ही मन कुढ़ती थीं। कभी-कभी तो उग्र रूप धारण करके कहतीं—“लो यह मुट्ठीभर धूल तुम्हारी प्रशंसनीय आनंद कुमारी के पीछे! उसकी कौनसी श्रेष्ठता है? वह तपस्या भी नहीं करती, सोजत से विहार भी नहीं होता। कई दिनों से यहाँ अड्डा जमाए मेरी छाती पर बैठी हैं।”

सब दिन एक से नहीं होते। मनुष्य कितना सुंदर है, नवयुवक है। उड़ती हुई तरुणाई जब अंगड़ाई लेती है तो आस-पास के वातावरण में मादकता भर जाती है। सोचता है कि प्रत्येक अंग कितना परिपुष्ट एवं मांसल है! शक्ति और साहस बलात् उछल पड़ता है। परंतु वह देखो बुढ़ापा! कितनी भयंकर है उसकी छाया! उसका नाम सुनते ही केश अपना रंग बदल लेते हैं। उसके प्रवेश करते ही शरीर का रंग फीका पड़ जाता है। मुँह से दाँत भी हार मानकर भाग जाते हैं। किसी का मन उसके नजदीक जाने का नहीं होता। जरा की शक्ति अजब-गजब की है।

उक्त साध्वी जी को भी जरा देवी ने आ घेरा। अब वृद्धावस्था उनकी संगिनी बन गई थी। एक दिन कहीं जाने के लिए उतर रही थीं तो अचानक पैर फिसल गया और गिर पड़ीं। यौवन की सारी शक्ति और मादकता स्वाहा हो गई। उठना-बैठना भी दूभर हो गया। दुर्बलता आते ही दूसरे रोगों ने भी मौका देखकर अपना बसेरा कर लिया। वे भी आ धमके और बूढ़ी आर्या को धर दबोचा। दिनभर दस्तें लगाने लगीं। चलना-फिरना भी बंद-सा हो गया। अकेली ठहरिं। अब सेवा कौन करे? जैन साध्वी अपने बस चलते गृहस्थों से सेवा नहीं ले सकती। सोजत संघ में हलचल मच गई कि क्या किया जाए। यहाँ बड़ी साध्वी श्री आनंद कुमारी जी आदि ठाणा विराज रहे हैं। उनके पास जाकर अर्ज करें ताकि वे किसी योग्य साध्वी जी को भेजकर इनकी परिचर्या करावें। वहीं पर कई समझदार भाई बैठे थे, उन्होंने कहा—“उन्हें इनकी सेवा करने के लिए किस मुँह से कहा जाए? आप जानते नहीं हैं, ये महासती जी तो उन्हें गालियाँ देती हैं। उनका नाम सुनते ही इनका माथा ठनकने लगता है। फिर वे सेवा में क्यों आएँगी? उन्हें सेवा के लिए अर्ज भी कैसे की जाए?”

पंचों ने कहा—“आपका कहना यथार्थ है। जो व्यक्ति जिसके साथ दुर्व्यवहार रखता है, वह उसकी सेवा में कैसे आ सकता है? परंतु महासती श्री बड़ी आनंद कुमारी जी आदि तो इतनी भाग्यवती और सुशीला साध्वी जी हैं कि वे तो इनकी बातों पर बिलकुल ही ध्यान नहीं देतीं। उनका साधु जीवन प्रशस्त है। वे समता की पगडंडी पर चलने वाली हैं। उन्हें किसी की निंदा या प्रशंसा से मतलब ही नहीं है। अतः हम समझते हैं कि वे इन महासती जी को ऐसी हालत में देखकर अवश्य ही किसी आर्या जी को सेवा में भेज देंगी। उनकी मानस भूमि ऊपर भूमि जैसी नहीं है। वह तो उपजाऊ भूमि है।”

साभार- धर्ममूर्ति आनंदकुमारी

-क्रमशः ❤️❤️❤️

# त्यागमय जीवन

- भाविन जैन 'सजग', नीमच

आध्यात्मिक पथ

शो ऑफ करने  
का त्याग

अनावश्यक परिग्रह  
का त्याग

प्रमाद  
का त्याग

कषायों  
का त्याग

पाप प्रवृत्तियों  
का त्याग

प्राचीन भारतीय संस्कृति की धारणा है कि मानव जीवन का वास्तविक आनंद त्याग से ही प्राप्त किया जा सकता है। जैन धर्म में आत्मशुद्धि को अत्यधिक महत्व दिया गया है और आत्मशुद्धि के लिए त्याग करना अत्यंत आवश्यक है। जैन धर्म के वर्तमान काल की चौबीसी के 24 तीर्थकरों ने भी अपने राजसी सुखों का त्याग करके ही परम आनंद की अवस्था अर्थात् मोक्ष धाम को प्राप्त किया है। दीर्घकालिक, वास्तविक तथा स्थायी आनंद त्यागमय जीवन से ही प्राप्त हो सकता है। पाश्चात्य संस्कृति की धारणा है कि भोग करने से आनंद की प्राप्ति होती है, किंतु यह आनंद अल्पकालिक तथा अवास्तविक है।

वर्तमान समय में स्वयं को आधुनिक दिखाने के लिए भारत में अधिकांश लोग पाश्चात्य संस्कृति का अंधानुकरण करने लगे हैं। उन्होंने अपनी जड़ों को अर्थात् प्राचीन भारत की त्याग परंपरा को महत्व प्रदान करने वाली विचारधारा को ही भुला दिया है तथा पाश्चात्य संस्कृति की भोगवादी मानसिकता को अपना लिया है। इसके भयंकर दुष्परिणाम हो रहे हैं, जिनका अनुभव हम सभी को हो रहा है।

त्याग-संस्कृति को भुला देने के मुख्य दुष्प्रभाव निम्न हैं -

- (1) मानसिक तनाव में वृद्धि
- (2) आर्थिक हानि
- (3) अनावश्यक खर्चों में वृद्धि
- (4) पाप कर्मों का बंध
- (5) सामाजिक विसंगतियों में वृद्धि
- (6) प्रदर्शन पर अनावश्यक खर्च
- (7) परिवारों का विघटन
- (8) संस्कारों में कमी

पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव में अधिकांश लोग परिग्रह बढ़ाने में लगे हुए हैं। किसी अन्य के पास कोई साधन, वस्तु या किसी सुविधा को देखकर स्वयं भी उसको प्राप्त करने की प्रवृत्ति में लगे हुए हैं। जबकि उनको इसकी कोई आवश्यकता नहीं है। वे तो दूसरों की नकल तथा प्रदर्शन (शो ऑफ) के चलते अनावश्यक परिग्रह तथा पाप प्रवृत्ति में लगे हुए हैं।

लोगों को लगता है कि हमारे पास जितने ज्यादा साधन, संसाधन होंगे, हमें उतना अधिक आनंद प्राप्त होगा। इसके विपरीत जितने ज्यादा साधन या संसाधन बढ़ते हैं उतना ही ज्यादा तनाव भी बढ़ता जाता है। लोगों का अत्यधिक समय उन साधनों की सार-संभाल करने में ही व्यतीत हो जाता है। यदि इन साधनों से मोह भी हो जाए तो स्थिति और खराब हो जाती है क्योंकि फिर तो



लोग इन साधन और संसाधनों को बढ़ाने और बचाने में ही अपना समय व्यर्थ करते रहते हैं।

निम्न में से एक या अधिक तरीकों से आप अपने जीवन को त्यागमय बना सकते हैं -

त्याग करने से निम्न लाभ प्राप्त होते हैं -

- (1) आत्मशुद्धि
- (2) मानसिक शांति
- (3) वास्तविक आनंद
- (4) धन की बचत
- (5) एकाग्रता में वृद्धि
- (6) तनाव मुक्ति
- (7) कर्मनिर्जरा
- (8) मस्तिष्क की ऊर्जा में सुधार
- (9) रचनात्मकता में वृद्धि
- (10) उत्पादकता (प्रोडक्टिविटी) में सुधार

त्याग के लाभ जानने के बाद आप सोच रहे होंगे कि हम बड़े त्याग तो नहीं कर सकते तो फिर हमें त्याग के लाभ कैसे प्राप्त होंगे? तो इस प्रश्न का समाधान है कि आप केवल छोटे से त्याग का भी नियमितता से पालन करेंगे तो वह भी आपको दीर्घकाल में बड़ा लाभ प्रदान कर सकता है।

- (1) सोशल मीडिया (वॉट्सएप, इंस्टाग्राम, यूट्यूब आदि) का त्याग
- (2) दूसरों से अपेक्षा का त्याग
- (3) दूसरों की नकल करने की प्रवृत्ति का त्याग
- (4) निरर्थक प्रदर्शन (शो ऑफ) करने के त्याग
- (5) कषाय (क्रोध, मान, माया तथा लोभ) का त्याग
- (6) प्रमाद का त्याग

उपरोक्त तरीकों के अलावा भी आपकी जानकारी में कोई अन्य त्याग हो तो आप उसे भी कर सकते हैं। साथ ही आप जो भी त्याग करें वह पूर्ण योग अर्थात् मन, वचन और काया से करें तथा नियमितता के साथ करें तो निश्चित ही आपको इसके लाभ प्राप्त होंगे।

**मानव अब तो जाग, कब ले थोड़ा त्याग।  
बुझाकक कषाय की आग, कब ले थोड़ा त्याग।  
छोड़कक द्वेष और राग, कब ले थोड़ा त्याग।  
चिंता व दुख जाएँगे भाग, कब ले थोड़ा त्याग।**

विज्ञान से भौतिक तत्वों की और बौद्धिक शक्ति की भी वृद्धि हुई है। विद्युत गति से हम दौड़ रहे हैं, परंतु जीवन के इस प्रश्न को हल करने का क्या वहाँ प्रयास किया जा रहा है? इस स्थिति के साथ मैं आज यह बता रहा हूँ कि आज जितनी विकास की स्थिति है उस पर आप सोचें कि क्या यह आपके जीवन का संस्कार है? क्या आपके जीवन में उससे शांति मिलती है। जितनी बुद्धि का विकास हुआ है उसके साथ ही साथ आपके जीवन को शांति मिली है, शांति बढ़ी है? नहीं, अशांति बढ़ी है। बुद्धिजीवी वर्ग का जिस तरह से विकास हुआ है उस विद्वान से पूछिए और आप बिलकुल सही तौर पर अपने अंतर् पर हाथ रखकर पूछिए कि शांति मिली है या अशांति? अशांति। बड़े से बड़े जौहरी से पूछिए कि आपने जवाहरात के व्यवसाय में तरक्की की है, लेकिन क्या उससे जीवन में शांति मिली है? यदि उससे जीवन में शांति का संस्कार नहीं है तो समझना चाहिए कि वह वस्तुतः जीवन का संस्कार नहीं हो पाया। जो कुछ संस्कार है वह कुछ और ही है। जीवन का संस्कार कुछ और है।

- परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री नानालाल जी म.सा.



# लक्ष्मण रेखा का न हो उल्लंघन

विकृति रोकने के लिए लक्ष्मण रेखा नहीं खींची तो विनाश अवश्यंभावी है। व्यंग्य के लिए लक्ष्मण रेखा नहीं खींची तो नफरत अवश्यंभावी है। मर्यादा की लक्ष्मण रेखा नहीं खींची तो स्वच्छंदता की पराकाष्ठा अवश्यंभावी है। टोकने की लक्ष्मण रेखा नहीं खींची तो टकराहट अवश्यंभावी है। मस्ती की लक्ष्मण रेखा नहीं खींची तो विवाद अवश्यंभावी है। ब्याज की लक्ष्मण रेखा नहीं खींची तो नुकसान अवश्यंभावी है। अहंकार की लक्ष्मण रेखा नहीं खींची तो दुर्गति अवश्यंभावी है। आडंबर की लक्ष्मण रेखा नहीं खींची तो धन की बर्बादी अवश्यंभावी है। 'मैं' की लक्ष्मण रेखा नहीं खींची तो घमंड अवश्यंभावी है। खाने की लक्ष्मण रेखा नहीं खींची तो अजीर्ण अवश्यंभावी है। विकार की लक्ष्मण रेखा नहीं खींची तो लज्जा का नाश अवश्यंभावी है।

आखिर लक्ष्मण रेखा कैसे खींचते हैं, क्यों खींचते हैं, कब खींचते हैं? लक्ष्मण रेखा का तात्पर्य है कि खतरे का निशान। पानी जब खतरे के निशान को पार कर जाता है तो बाढ़ आ जाती है। विवाद जब खतरे के निशान को पार कर जाता है तो मारपीट के साथ हिंसा की ओर बढ़ जाता है। नुकसान जब अपनी हैसियत

पार कर जाता है तो व्यक्ति दिवालिया हो जाता है। वासना जब बेभान हो जाती है तो व्यक्ति बलात्कार करने लगता है। सीमा रेखा का जब उल्लंघन होता है तो युद्ध हो जाता है। लक्ष्मण जी भी जब सीता माता को अकेली छोड़कर एक रेखा खींचकर जाते हैं और कहते हैं कि इस रेखा का उल्लंघन मत करना, खींची गई रेखा से बाहर पैर नहीं रखना। खींची गई रेखा के भीतर आप सुरक्षित रहेंगी। सावधान रहना। मायावी रावण भिक्षा माँगने के बहाने गया। माता सीता समझ नहीं पाई और खींची गई रेखा से बाहर आकर भिक्षा देने लगी। जैसे ही लक्ष्मण जी द्वारा खींची गई रेखा से माता सीता ने बाहर कदम रखा, रावण ने उनका अपहरण कर लिया। तभी से इस चेतावनी रेखा, खतरे के निशान की रेखा का नाम लक्ष्मण रेखा पड़ गया। लक्ष्मण रेखा आगे जाकर मुहावरा बन गया। किसी क्षेत्र में अतिक्रमण करना ही तो लक्ष्मण रेखा को पार करना है।

मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम की पत्नी माता सीता की छोटी-सी लापरवाही से उन्हें अपने पति से बिछुड़ने के लिए विवश होना पड़ा। इसीलिए भारतीय संस्कृति की पहचान मर्यादा, अनुशासन, न्याय, नैतिकता,

ईमानदारी और कर्तव्यपरायणता से ही तो होती है। द्रौपदी द्वारा वचनों की मर्यादा का उल्लंघन किया गया तो महाभारत हो गया। मेरा ध्यान पुनः 'अवश्यंभावी' शब्द पर आकर टिक गया। जहाँ अतिक्रमण है, अन्याय है, हिंसा है, अमर्यादा है, अनैतिकता है, वहाँ दुर्गति आज नहीं तो कल अवश्यंभावी है।

सत्संग सभा में मैंने विश्वास शब्द के अनेक प्रकार सुने। उनमें से वचन-विश्वास और वस्त्र-विश्वास की व्याख्या के समय मैं चिंतन की गहराइयों में खो गया। राजा दशरथ द्वारा कैकेयी को दिए गए वचनों को पूरा करने के लिए श्री राम 14 वर्षों के लिए वनवास गए। वनवास के लिए जब श्री राम, माता सीता व अनुज भ्राता लक्ष्मण के साथ अयोध्या से प्रस्थान कर राज्य की सीमा से बाहर जाने लगे तो पूरी प्रजा उनके पीछे चलने लगी। सभी ने श्री राम से अयोध्या लौटने हेतु अनुरोध किया। प्रजाजन श्री राम को वापस लौटने हेतु विभिन्न प्रकार से समझाने लगे, किंतु श्री राम ने कहा कि पिता द्वारा माता को दिए गए वचनों के परिपालन हेतु मैं वन जा रहा हूँ। अगर लौटकर वापस गया तो पिता के वचनों की विश्वसनीयता समाप्त हो जाएगी। वचन की लक्ष्मण रेखा मैंने तोड़ दी तो कल मेरे पिता के वचनों पर कोई विश्वास नहीं करेगा। वचनों की विश्वसनीयता को तोड़ना ही तो वचनों की लक्ष्मण रेखा का उल्लंघन करना है।

वचनों का विश्वास ही तो मानव की अमूल्य धरोहर है। राजा हरिश्चंद्र जी ने ऋषि विश्वामित्र को स्वप्न में ही दान में अपना राजपाट दे दिया था। लेकिन विश्वामित्र जी के राज्य छोड़ने के आदेश के परिपालन में वे खाली हाथ पैदल अपनी पत्नी तारामती व मासूम पुत्र रोहित को लेकर राज्य की सीमा से भूखे-प्यासे, ठोकरें खाते बाहर चले गए। विश्वास की रेखा खंडित न हो इसलिए वे श्मशान घाट में चांडाल के यहाँ चौकीदारी करने लगे। श्मशान घाट में मालिक

के लिए कर (टैक्स) वसूलने लगे। पत्नी तारामती, पुत्र के परिपालन हेतु किसी परिवार में सफाई व अन्य कार्य करने लगी। विश्वास की रेखा का उल्लंघन नहीं करने से आगे चलकर सत्यवादी हरिश्चंद्र के नाम से श्रद्धा, भक्ति व सम्मान के साथ उनकी पहचान बन गई। इतिहास के पृष्ठों में सत्यवादी राजा हरिश्चंद्र का जीवन स्वर्णाक्षरों में अंकित हो गया। मैं सोचने लगा कि श्री राम, राजा हरिश्चंद्र ने विश्वास की लक्ष्मण रेखा का उल्लंघन नहीं किया। कोई भी प्रलोभन, भावनात्मक अनुरोध, लोभ, सुविधा उन्हें डिगा नहीं पाई।

वचन-विश्वास के बाद वस्त्र-विश्वास पर मेरा ध्यान आकर टिक गया। वस्त्र-विश्वास अपने आप में अजीबोगरीब प्रतीत होता है। मैं सोचने लगा कि वस्त्र पर कैसे विश्वास करें। मुझे प्रश्न करते-करते उत्तर समझ में आ गया। वस्त्र-विश्वास का अर्थ है कि आप ऐसे वस्त्र पहनो जिनसे स्वयं की विश्वसनीयता बनी रहे। कहते हैं कि आधुनिक युग में लोग वस्त्र का पूरा पैसा देते हैं, लेकिन फैशनपरस्ती में कम वस्त्र फैशन की डिजाइन का ही खरीदते हैं। किसी वस्त्र में बाँहें नहीं हैं तो किसी पेंट की डिजाइन घुटनों के आसपास कटी-फटी है। कई वस्त्रों की लंबाई तो इतनी कम होती है, जिससे शरीर के अंग-प्रत्यंग दिखाई देने लगते हैं। तथाकथित महिलाओं के वस्त्रों की तो अजब-गजब कहानी है। कुछ एक नगण्य ही सही, पर महिलाओं की आँखों की शर्म तो मानो गायब हो जाती है और देखने वाले सभ्रांत लोगों की आँखें शर्म से झुक जाती हैं। जीन्स की फुल पेंट कई जगह से फटी रहती है। फैशन की इस दुनिया में तथाकथित आधुनिक युवाशक्ति इसे ही न जाने क्यों अपनी श्रेष्ठता समझती है। माताएँ भी बच्चों को पूरी कीमत देकर जान-बूझकर छोटे वस्त्र पहनाती हैं।

बचपन से ही अंग प्रदर्शन के संस्कारों का प्रतिफल है कि आगे जाकर वस्त्रों के पहनावे की विकृति मर्यादाएँ व लक्ष्मण रेखा का उल्लंघन करने लगी हैं।

अर्धरात्रि में आपात स्थिति को छोड़कर घूमना भी निर्धारित समय की सीमा रेखा का उल्लंघन करना है। बलात्कार की घटनाएँ सुनसान, अकेले अथवा धोखा देकर ही होती हैं। वहीं दूसरी ओर जरूरत से ज्यादा आलमारियाँ भरकर वस्त्र रखना भी वस्त्रों के परिग्रह की लक्ष्मण रेखा का उल्लंघन है। कई लोगों को तन के पूरे कपड़े व टंड में ऊनी वस्त्र भी नसीब नहीं होते और दूसरी तरफ शौक से नई-नई डिजाइनों के वस्त्रों का एक मर्यादा से ज्यादा संग्रह। जैन दर्शन में तो साधु (72) बहतर हाथ से अधिक कपड़ा नहीं रख सकते और साध्वी (96) छियानवे हाथ से अधिक कपड़ा नहीं

रख सकतीं। साध्वियाँ अकेले अपने ठहरने के स्थान से बाहर नहीं जा सकतीं। कम-से-कम दो साध्वियों का साथ होना आवश्यक है।

मर्यादा का उल्लंघन अथवा लक्ष्मण रेखा का उल्लंघन मानव जीवन के संस्कारों, सुरक्षा, शील, व्यक्तित्व, प्रतिष्ठा सभी पर प्रश्नचिह्न लगा सकती हैं। प्रभु से हम प्रार्थना करें कि हे प्रभो! हमें मर्यादित, व्यवस्थित, अनुशासित जीवन जीने का महामंत्र सदैव सिखाते रहना। हे प्रभो! लक्ष्मण रेखा के उल्लंघन के पूर्व ही हमें सावधान, सचेत कर देना और हमें अतिक्रमण, अन्याय, अमर्यादा से बचा लेना।



ॐॐॐॐॐ

भक्ति रस

ॐॐॐॐॐ

## अद्भुत ग्रैंड समर्पणा दिवस

- प्रतिभा तिलकराज सहलोट, निम्बाहेड़ा

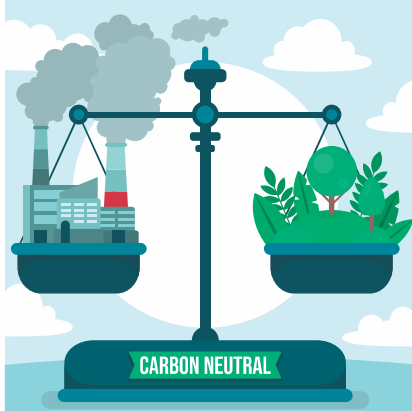
संघ शिरोमणि राम का सुवर्ण दीक्षा उत्सव आया।  
50 वर्ष की सुखद संयम यात्रा का आनंद छाया।।  
ग्रैंड समर्पणा दिवस मनाया, पूरे देश और विदेश में।  
संघ सभी रहे आगे से आगे, गुरुभक्ति की रेस में।।  
विविध आयोजनों से हो गया, 22 दिसंबर खास।  
एकासन तप से मनाएँ, दीक्षा पूर्व दिवस पचास।।  
संत-सतियों के सान्निध्य में, हुए गुरु गुणानुवाद।  
वीर परिवारों के अभिनंदन से, हर्षित संघ-समाज।।  
कई आयामों और प्रकल्पों से, रचा नया इतिहास।  
'प्रतिभा' गौरव से गर्वित, धन्य हुए धरती आकाश।।



जब तक समस्याएँ प्रभावी हैं, तब तक अशांति है और जब समाधान प्रभावी होता है तब शांति का प्रसार होता है। जैन जीवन-पद्धति समग्र समस्याओं के समाधान में अभिन्न भूमिका निभाती है। प्रत्येक व्यक्ति विश्वशांति के यज्ञ में पूरा-पूरा भाग ले सकता है। प्रत्येक व्यक्ति विश्व का अविभाज्य अंश है। प्रत्येक राष्ट्र जैन जीवन-पद्धति को अपनाकर सर्वतोमुखी अभ्युदय और शांति की ओर अग्रसर हो सकता है। विश्व की प्रमुख समस्याएँ और उनका जैन जीवन-पद्धति से समाधान प्रस्तुत किया जा रहा है।

### 1. पर्यावरण असंतुलन

पर्यावरण-प्रदूषण की समस्या ने विकराल रूप ले रखा है। पर्यावरण के असंतुलन का मुख्य कारण आर्थिक प्रलोभन है। प्रत्येक मनुष्य, समाज व राष्ट्र के मन में आर्थिक साम्राज्य स्थापित करने की अपूर्ण लालसा बढ़ती जा रही है। इस कारण पर्यावरण असंतुलित हो रहा है। अमेरिकी राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी (1966) के अनुसार वायु, पानी, मिट्टी, पौधे, पेड़ और जानवर सभी मिलकर पर्यावरण की रचना करते



हैं। इनका असंतुलन पृथ्वी पर मनुष्य के जीवन को खतरे में डाल रहा है। आचारांग सूत्र पृथ्वी, पानी, वनस्पति जैसे अव्यक्त चेतना वाले तत्वों में भी सजीवता का विधान करता है। पृथ्वी, पानी और वनस्पति के दोहन को हिंसा मानता है। गृहस्थ श्रावक इनकी मर्यादा करता है और जैन श्रमण तो पूर्णतया इनकी हिंसा का त्याग करता है।

आचारांग सूत्र में पृथ्वीकाय आदि जीवों की हिंसा की पीड़ा को व्यक्त करते हुए कहा है कि कोई कठोर हृदय वाला पुरुष निर्दयी होकर तीखे भाले से जन्मांध, मूक और बधिर पुरुष को भेदता है, तीखे फरसे से छेदता है तो वह जन्मांध, मूक और बधिर पुरुष छेदने-भेदने वाले को न देखता है, न सुनता है, न अपनी वेदना

चिल्लाकर व्यक्त कर पाता है। वेदना को व्यक्त करने में असमर्थ जन्मांध, मूक और बधिर के समान पृथ्वीकाय आदि जीव भी अपनी वेदना को व्यक्त करने में असमर्थ हैं। वहाँ सूक्ष्म जीवों की मानव से तुलना कर हिंसा का त्याग करने की प्रबल प्रेरणा दी है। जैन अपरिग्रही जीवन जीने वाला होने से आर्थिक

# वैश्विक समस्याओं के समाधान में जैन जीवन-पद्धति की भूमिका

संस्कार-सीरम  
संस्कार-सीरम

- डॉ. बिलोकचंद जैन, जयपुर

प्रलोभन के कारण हिंसा का पाप नहीं बाँधता है। वह सभी प्राणियों के जीने के अधिकार की रक्षा करता है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि जैन जीवन-पद्धति असंदिग्ध रूप से प्रकृति के संतुलन में जरा भी बाधक नहीं बनती। जैन मुनि न तो पृथ्वी का खनन करते हैं, न पानी का दुरुपयोग करते हैं, न ही वनस्पति का दोहन करते हैं। अग्नि का आरंभ भी उनके लिए वर्जनीय है। न ही वे वायु और ध्वनि प्रदूषण के जनक वाहन का प्रयोग करते हैं। जैन जीवन-पद्धति में प्रदूषण का नितांत निषेध किया है।

## 2. आतंकवाद



आतंकवाद विश्वशांति के प्रयासों में नासूर-सा चुभता रहता है। यह एक हिंसात्मक गतिविधि होती है। यदि कोई व्यक्ति या संगठन अपने गैर-सरकारी लक्ष्यों की पूर्ति हेतु देश की सुरक्षा को निशाना बनाए तो उसे आतंकवाद कहते हैं। आपराधिक संगठन धर्म के नाम पर हिंसा करके हजारों की संख्या में लोगों को मौत के घाट उतार देते हैं। आतंकवाद की कोई जाति, धर्म और भाषा नहीं होती।

जैनदर्शन तो कहता है कि इस बाहर के आतंक को मिटाने के लिए अपने भीतर के आतंक को मिटाना होगा। आतंकवाद को मिटाने के लिए वैचारिक उदारता लाना जरूरी है। आतंकवादी अपने ही बीच से निकलकर बनता है। समाज या देश की किसी प्रवृत्ति से कुंठाग्रस्त होकर या धर्म पर मदांध होकर आतंकवादी बनता है। जब राष्ट्रीय

नीति आतंकवादी को मारने की अपेक्षा आतंकवाद को समाप्त करने का लक्ष्य ठानेगी, तब ही कुछ सफलता प्राप्त हो सकती है। मैत्री-भावना, करुणा-भावना, समन्वयवादी दृष्टिकोण, सह-अस्तित्व, अनाग्रहवृत्ति आदि जैन जीवन-पद्धति के अचूक अस्त्र आतंकवाद का खात्मा करने में सक्षम हैं। आतंकवाद को समाप्त करने के लिए सर्वव्यापी मैत्री अभियान की नितांत आवश्यकता है।

## 3. स्वास्थ्य समस्या

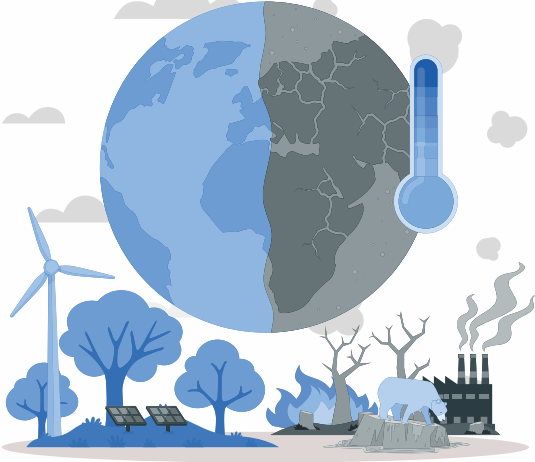


‘पहला सुख निरोगी काया’ यह सूत्र व्यापक रूप से सर्वमान्य है। लेकिन प्रदूषण, मानसिक तनाव आदि के कारण विश्व की एक अच्छी-खासी आबादी स्वास्थ्य समस्याओं का सामना कर रही है। अनेक महामारियों ने अनेक लोगों को मौत प्रदान की है। वर्तमान में जैविक बीमारियों ने जोर पकड़ रखा है। जीका वायरस, इबोला वायरस आदि से पूर्व में नाश हो चुके हैं और हाल ही में कोरोना वायरस के कहर से विश्व के सभी देश त्रस्त हुए हैं।

जैन जीवन-पद्धति मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य की रामबाण औषधि है। कोरोना महामारी से बचने के लिए जो गाइडलाइन जारी की गई, वह गाइडलाइन तो जैन साधु की सहज जीवन-पद्धति है। मास्क का प्रयोग और सामाजिक दूरी का पालन जैन

साधु प्रतिसमय करते हैं। जैन गृहस्थ भी प्रायः दोनों गाइडलाइन का पालन सहज ही कर लेते हैं। जैनों का आहार इतना सात्विक, पथ्ययुक्त और समय के अनुसार होता है कि उनकी आहारचर्या को यदि अपना लिया जाए तो अधिकांश रोगों से मुक्ति पाई जा सकती है।

#### 4. ग्लोबल वार्मिंग



पृथ्वी का तापमान लगातार बढ़ रहा है और इसके कारण मौसम में होने वाले परिवर्तन की समस्या से पूरा विश्व प्रभावित है। इस समस्या का कारण ग्रीन हाऊस गैसों हैं। उनमें कार्बन डाइऑक्साइड गैस का उत्सर्जन तापमान-वृद्धि का मुख्य कारण है। मानवजनित कार्बन डाइऑक्साइड इस तापमान वृद्धि की सबसे बड़ी जिम्मेदार है।

जैन जीवन-पद्धति अहिंसा प्रधान होने से प्रकृति का रक्षण करती है। वनस्पति में पर्याप्त मात्रा में कार्बन डाइऑक्साइड को ग्रहण करने की क्षमता है। जैन व्यक्ति आवश्यकता का जीवन जीता है, न कि विलासिता का। इस कारण वह एसी, रेफ्रिजरेटर, कूलिंग मशीन आदि का उपयोग कम-से-कम करता है क्योंकि इनसे निकलने वाली गैसों ही ग्लोबल वार्मिंग का मुख्य कारण हैं।

जैन श्रावक सुविधाभोगी से अधिक त्यागी होता है। इस कारण उसमें अल्प सुविधा में भी काम चलाने की

कला होती है। इस तरह जैन जीवन-पद्धति इस समस्या के समाधान में बहुपयोगी है।

#### 5. भोगवाद संस्कृति

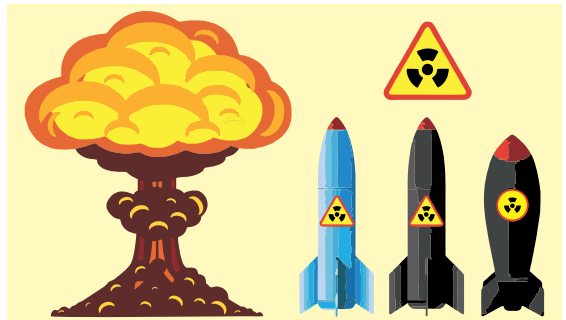


एक कवि ने तो भोगवादी पश्चिमी सभ्यता पर तंज कसते हुए कहा भी है-

**आदमी अपनी संस्कृति के,  
इतना जल्दी क्यों ऊब जाता है।  
अबे! पश्चिम की तबफ मत भागिए,  
वहाँ जाकर तो सूबज भी डूब जाता है।।**

जैन जीवन-पद्धति त्याग प्रधान है, भोग प्रधान नहीं। यहाँ अपरिग्रही जीवनदान की प्रेरणा करता है। अपरिग्रही व्यक्ति अनासक्ति को धारण करता है और अनियंत्रित इच्छाओं पर नियंत्रण रख संयमित जीवन जीता है। इस प्रकार भोगवाद क्षणिक सुख पर अवलंबित है, जबकि जैन जीवन-पद्धति चिरशांति पर आधारित है।

#### 6. युद्ध और परमाणु हथियारों की होड़



प्रत्येक राष्ट्र शांति चाहता है, पर बीज अशांति के बो रहा है। परमाणु बम, हाइड्रोजन बम, नाइट्रोजन बम आदि अनेक बम तथा विनाशकारी गैसों का निर्माण हो रहा है। बारूद के ढेर पर बैठकर शीतल शांति की चाह रखना बेमानी ही होगा। प्राप्त शांति का दुरुपयोग अशांति का मूल है। 6 और 9 अगस्त 1945 को जापान के हीरोशिमा और नागासाकी पर हुआ परमाणु हमला, जिसने एक साथ क्रमशः 80 हजार एवं 40 हजार से ज्यादा लोगों की जान ली, उसे भला कौन भूल सकता है? हिंसा कभी समस्या का समाधान नहीं हो सकती। कोरिया का युद्ध, जो कि विश्वयुद्ध की भूमिका बनता जा रहा था, उसे अहिंसा ने ही शांत किया। युद्ध के महाविनाश ने युद्ध करने वालों को भी भयभीत बना दिया है, वे भी अहिंसा का लोहा मानने को मजबूर हो गए हैं। पर विडंबना यह है कि युद्ध न हो यह सभी चाहते हैं, पर वे युद्ध के कारणों को छोड़ना नहीं चाहते।

इस दृष्टि से शस्त्रों के विकास से होने वाले महाविनाश से बचने का एकमात्र उपाय अहिंसा है। वास्तव में शस्त्रों के विकास में भय बहुत बड़ा कारण है। इस कारण भगवान ने अभय पर, अहिंसा पर बल दिया है। अहिंसा भयभीत नहीं बनाती, अपितु वीर-साहसी बनाती है और विश्वप्रेम का संचार करती है।

### विश्वशांति हेतु जैन जीवन-पद्धति के आयाम -

1. अहिंसा को विश्वधर्म की संज्ञा देकर, इसके सिद्धांतानुसार जीवन-पद्धति का संचालन हो।
2. सभी राष्ट्र समस्याओं के समाधान में अहिंसा, अपरिग्रह व अनेकांत पद्धति का अनुसरण करें।
3. अनाक्रमण और अहस्तक्षेप की नीति अपनाकर समन्वय-नीति से सहयोग भावना रखें।

4. शीतयुद्ध रोके एवं अनेकांत पद्धति से विवादों का निपटारा करें।
5. मैत्री भावना से 'सब जगत का भला हो' भावना की पुष्टि करें।
6. वैश्विक अहिंसा परिषद् की स्थापना हो, जिससे विवादों को सुलझाने में सहयोग मिले।
7. विस्तारवाद की कुटिल नीति का त्याग कर अपरिग्रही जीवन-पद्धति को अपनाएँ।
8. परमाणु बमों को शक्तिहीन करने का उपक्रम हो तथा नए बमों के निर्माण पर रोक लगे।
9. आवश्यकता के अनुसार ही प्रकृति का उपयोग करें, दुरुपयोग नहीं।
10. विश्वकल्याण की कामना हेतु प्रतिदिन शांति प्रार्थना का उपक्रम प्रारंभ हो।

जब तक समस्या है, अशांति है, तब तक समाधान ही शांति का सृजक है। विश्व की समस्याओं का समाधान ही विश्वशांति का प्रयास है। अशांति के मूल हिंसा, परिग्रह एवं संकीर्णता का त्याग करके शांति के आयाम अहिंसा, अपरिग्रह और अनेकांत सिद्धांत को अपनाना ही विश्वकल्याण की भावना है। जैन जीवन-पद्धति स्वयं को शांत जीवन जीना सिखाती ही है, साथ ही विश्वशांति के लिए भी अनुकरणीय बन जाती है। जैन जीवन-पद्धति के विभिन्न आयाम हैं, उनमें से कुछ पर चर्चा की है। समग्र जैन आचार को जीवन में उतारने से तो विश्वबंधुत्व की भावना रोम-रोम में साकार रूप लेती है।

व्यक्तियों की शांति, समाज की शांति बनती है। समाज की शांति, राष्ट्र की शांति का हेतु है और राष्ट्रों की शांति विश्वशांति का रूप लेती है। जैन जीवन-पद्धति व्यक्ति के जीवन में शांति, संतोष, निर्भयता, क्षमा आदि अनेक गुणों का प्रभाव जमाती है, जो कि विश्वशांति के मूल में सहयोगी है।





“संयम  
में  
सुख  
है”



संयम-संयमी  
एवं

संयमदाता

आचार्य प्रवर  
पूज्य श्री रामेश

- पदमचंद गांधी, जयपुर

संस्कार सौरभ

पंचमकाल भौतिक युग में भोग-वासनाओं, कामुकता के लुभावने उपकरण, अवसर, वातावरण, पाश्चात्य सभ्यता एवं संस्कृति का बढ़ता तीव्र प्रकोप, युवा पीढ़ी के मन को विचलित करने वाले सभी समीकरण एवं सभी साधन आज सहजता में उपलब्ध हैं। आज के युवा की सांसारिक क्रियाओं की सोच एवं करियर बनाने की बढ़ती होड़ ने उसको रेस का घोड़ा बना दिया है। उसके सपने, उसका भविष्य, उसका लक्ष्य संसाधनों को पाना, उच्च पैकेज की लालसा रखना, विदेश में जॉब करना, कम उम्र में उच्च शिखर को प्राप्त करने की उड़ान भरना एवं मौज-मस्ती करना ही नजर आता है। युवाओं पर दृष्टि दौड़ाने पर लगता है कि वे अच्छी सैलेरी, अधिक सुविधाएँ मिलने के बाद भी वे खुद के लिए कितना समय निकालते हैं, यह प्रश्न-चिह्न युवा पीढ़ी पर लगता है। सच्चाई को जानते हुए, संसार की

असारता को समझते हुए भी वे आसक्ति के कारण उसी में लिप्त रहते हैं।

धन्य एवं विरले तो वे युवा होते हैं जो जीवन की सच्चाई को समझते हैं। संसार की असारता का चिंतन करते हैं, संसाधनों के दुःखों से परिचित होते हैं तब उन्हें ज्ञात होता है कि भोगने में दासता है, त्याग में ही सच्चा सुख है, स्वामित्व है। तब उनमें विरक्ति की प्यास लगती है। वह प्यास ही वैराग्य को जगाती है, पात्रता को विकसित करती है, अनासक्त भाव पैदा करती है एवं जीवन को संयमित एवं मर्यादित करने की उत्कंठा जागृत करती है। ऐसी महान विभूतियाँ ही संयम के मार्ग को चुनती हैं। यह मार्ग मूलतः तीन कारणों से चुना जाता है - अभाव, प्रभाव एवं भाव से। आज के दौर में अभाव में संयम नहीं

लेकर प्रभाव से एवं भाव से संयमित होते हुए संयम के राजमार्ग पर अग्रसर हो रहे हैं। संयमी साधक पद, प्रतिष्ठा, पैसे को तुच्छ समझता है। उसे गौण करते हुए बारह भावनाओं को दृष्टिगत रखकर वे अध्यात्म में प्रवेश करते हैं तथा संयम हेतु कदम बढ़ाते हैं।

संयम में सुख है। संसार दुःखों का घर है, दुःख का कारण तृष्णा है, लालसा है। यह समझकर संयमी साधक अपनी इच्छाओं, तृष्णाओं और लालसाओं को मर्यादित कर लेता है। पाँचों इंद्रियों तथा मन को वश में कर लेना इतना आसान नहीं होता, लेकिन आचार्य भगवन् का प्रभाव, उनका अद्भुत आशीर्वाद, उनकी आभा का प्रकाश, उन्हें एक ऐसा वातावरण देता है जहाँ वे आत्मशांति का अनुभव करते हुए धार्मिकता एवं आध्यात्मिकता को विकसित करते हैं। जहाँ स्नेह है, शरण है, सुरक्षा है तथा स्थायी सुख है वहाँ श्रद्धा एवं समर्पण का भाव चरम पर

पहुँचता है। यही गुरु की गुरुत्वाकर्षण शक्ति का प्रभाव है, जो आचार्य भगवन् में देखा जा सकता है। इसे चाहे चमत्कार कहें या वरदान, या उनकी स्वयं की साधना का प्रभाव। आज की युवा पीढ़ी इनके प्रभाव से संयम के प्रति आकर्षित हो रही है और उच्च शिक्षा प्राप्त, प्रोफेशनल, बड़ी-बड़ी पोस्ट एवं पदों पर रहते हुए लाखों रुपयों के पैकेज लेने वाले एक ही झटके में वो सबकुछ छोड़कर संयम मार्ग पर बढ़ रहे हैं। यही गुरु की अदम्य शक्ति एवं उदारता का परिचायक है। हाल ही में 3 दिसंबर 2024 को ब्यावर की **मुमुक्षु हर्षाली जी कोठारी** ने सॉफ्टवेयर इंजीनियर का पद त्याग, बत्तीस लाख का पैकेज छोड़कर आचार्य भगवन् के मुखारविंद से दीक्षा ग्रहण की। यह गुरु-भगवंतों का उत्कृष्ट मार्गदर्शन ही है, जो जीवन की सच्ची राह की प्रेरणा देते हैं।

**आचारांग सूत्र 5/5/166** के अनुसार, आचार्य का जीवन जलाशय के समान होता है, जो सम होने से सभी को सुगमता से लाभ उठाने का अवसर देता है और किसी में भेद नहीं करता। उनके लिए सभी एक होते हैं। जैसे जलाशय जलराशि से परिपूर्ण होता है, वैसे ही आचार्य ज्ञान एवं गुणराशि से परिपूर्ण होते हैं। इसलिए वे धीर-वीर-गंभीर व प्रभावक भी होते हैं। जैसे जलाशय उपशांत रज वाला होता है, ऐसे ही आचार्य की कषाय उपशांतता आध्यात्मिकता की प्रतीक है। जैसे जलाशय जलचर जीवों को आश्रय देता है वैसे ही आचार्य साधकों के आश्रयदाता, त्राण एवं रक्षणदाता होते हैं तथा सिद्ध बनने की राह प्रशस्त करते हैं। तीर्थ चलाने वाले संघ के नायक होते हैं। ये सभी उत्कृष्ट गुण आचार्य श्री रामेश में समाविष्ट हैं। इनके प्रभाव से साधक प्रभावित होकर संयम में आगे बढ़ते हैं।

आगम एवं ग्रंथ सिद्ध करते हैं कि जैसे आचार्य सुधर्मा स्वामी ने जंबू कुमार को एवं आचार्य सिद्धसेन



दिवाकर ने सम्राट विक्रमादित्य को बोध दिया। आचार्य हीरविजयसूरि ने कट्टर मांसाहारी बादशाह अकबर को बोध देकर राज्य में सर्वथा हिंसा पर प्रतिबंध लगवाया। आचार्य हेमचंद्राचार्य ने राजा सिद्धराज की सभा में जिनशासन का बोध देकर सभी का हृदय परिवर्तन किया। ऐसे ही आचार्य श्री रामेश युवा पीढ़ी को बोध देकर जीवन के यथार्थ को उजागर कर रहे हैं।

जीवन में ठहराव निष्क्रियता का प्रतीक है और परिवर्तन शाश्वत विकास का आधार है। यदि जीवन में बदलाव न हो, परिवर्तन न हो तो नए चिंतन का निर्माण नहीं हो पाता है। नया पथ, नया अनुभव और अध्यात्म विनिर्मित नहीं हो पाते हैं। जीवन में प्रगति की परिभाषा परिवर्तन ही प्रतिष्ठित करता है। **जीवन में प्रगति की आकांक्षा रखने वाले परिवर्तन से डरते नहीं हैं। बदलावों से घबराते नहीं, बल्कि आगे बढ़कर उनका स्वागत करते हैं। यह परिवर्तन मात्र वस्त्र परिवर्तन नहीं, जीवन परिवर्तन है। पर से स्व का परिवर्तन है। बाहर से भीतर का परिवर्तन है। इसलिए आज के युवा संसार से संयम की ओर बढ़ रहे हैं, जिसके प्रणेता आचार्य भगवन् हैं।**

**सूत्रकृतांग सूत्र** स्पष्ट करता है कि श्रमण बनने के लिए केवल बाह्य वेश परिवर्तन करना ही पर्याप्त नहीं है, भीतर से परिवर्तन करना जरूरी है। उसे ममता रहित, निरहंकार, निःसंग, नम्र बनना होता है। प्राणिमात्र पर समभाव की सरस सरिता का प्रवाह करना होता है। वह सदा अनासक्त भाव में लीन होता है। राग और द्वेष रूपी विकारों से रहित होता है। उसके जीवन में सत्य और करुणा की बयार बहती है। **परीषह आने पर मेरु के समान अप्रकंप, समुद्र के समान गंभीर, चंद्र के समान शीतल, सूर्य के समान तेजस्वी, शेर के समान निर्भीक तथा पृथ्वी के समान सर्वसहनकर्ता होता है।** वह सदैव ऊर्ध्वमुखी विकास करता है। छोटे

गुणस्थान से लेकर चौदहवें गुणस्थान की भूमिका द्वारा अंत में गुणस्थानातीत स्थिति को प्राप्त कर अजर-अमर बनता है। इतनी पावनता, पवित्रता एवं निर्मल जीवन की प्रेरणा जब आचार्य भगवंतों से मिलती है तो साधक में वैराग्य उत्पन्न होता है और संयम मार्ग पर आरूढ़ होकर वह संयमी साधक बन जाता है।

संयम की पात्रता का नाम है वैराग्य और संयम का परिणाम है वीतरागता। वीतरागता से ही मोक्ष संभव है। वैराग्य जब जागृत होता है तो संयम उदित होता है। वैराग्य का अर्थ है अनासक्त भाव। जब अनासक्त भाव आता है तो साधक प्रतिकूलता में भी अनुकूलता प्राप्त कर लेता है तथा उसका मन शांत और भाव विकार रहित हो जाता है, जिससे वह वीतरागता की पात्रता अर्जित कर लेता है। आचार्य भगवन् अपने ज्ञान से जप, तप एवं साधना द्वारा संयमित जीवन की उत्कृष्ट प्रेरणा देते हैं। उनके मुखारविंद से शास्त्र का, आगम का निर्मल झरना बहता है, जो जन्म-जन्मांतरों के कामविकारों एवं कुटिल अतृप्त मानव के मन को शीतलता प्रदान करता है। ये वे शाश्वत सूत्र हैं जो अनादिकाल से अज्ञान तिमिर में गुमराह मानव को दिव्य प्रकाश देकर उज्ज्वल-धवल सम्यक् पथ प्रशस्त करते हैं। यह महान योगी एवं साधक आचार्य श्री रामेश के प्रभावशाली संयम का परिणाम है। जिनका उत्कृष्ट साहित्य, अलौकिक कृतियाँ भेद-विज्ञान की शुभ राशियों के साथ जीवन जीने की कला, वैराग्य, वीतरागता एवं मोक्ष का मार्ग प्रशस्त करते हैं। आचार्यदेव ने अपने अंतरंग अनुभव से आत्मदशा, कर्मोदय की विचित्रता, आत्मवृत्ति की स्थिरता और अन्य-अन्य गहन विषयों संबंधी सहज, सरल ग्रंथों के साथ मंथन से नवनीत प्रकट कर वैराग्य और वीतरागता को सर्वोपरि मानकर न केवल आचरित किया है वरन् अनेक साधकों को संयमी बनाकर उनका जीवन उत्कृष्ट बना रहे हैं।

**युवा की सांसारिक क्रियाओं की सोच एवं करियर बनाने की बढ़ती होड़ ने उसको रेस का घोड़ा बना दिया है।**

ऐसे विचार, उद्बोधन एवं प्रेरणा जब प्रस्फुटित होते हैं तो विचार शुद्धि होती है। विचार शुद्धि से आचार बनते हैं एवं आचार से आचरण क्रियान्वित होता है। इसी से ज्ञान की प्राप्ति तथा मोक्ष की प्राप्ति होती है। वीतरागता

आत्मा की प्रसादी है, जो अनेक जन्मों के प्रयासों से मिलती है। अतः स्पष्ट है कि वीतरागता मोक्ष की प्रथम सीढ़ी है। मोक्ष हेतु वैराग्य की अखंड धारा रूप अंतरंग पुरुषार्थ पराक्रम से मुमुक्षु स्व को पहचान लेता है और अपने आत्मभाव में लिप्त होकर संयमी बनता है। संयम साधना का सार है। संयम ऐसा सुरीला संगीत है जिसकी सुरीली स्वर लहरियों से साधक का जीवन परमानंद को प्राप्त करता है। संयम धन है, सुख का खजाना है। शास्त्र स्पष्ट करते हैं- **‘संयमः खलु जीवन्मू’** संयम ही जीवन है।

आचार्य भगवन् के इसी प्रभाव से अभी तक लगभग 412 मुमुक्षु भाई-बहनों ने दीक्षा अंगीकार की है। जिस तरह सुधर्मा स्वामी के एक प्रवचन मात्र से जंबू स्वामी को, जयमल जी म.सा. को मात्र एक प्रवचन से वैराग्य उत्पन्न हुआ ऐसे ही दुर्ग एवं रतलाम में चालू व्याख्यान में श्रावक-श्राविकाओं के अंतर्मन में संयम के उत्कृष्ट भाव प्रकट हुए। कभी 5, कभी 11, कभी 15 दीक्षाएँ एक साथ अंगीकार कर मुमुक्षुओं ने अपने जीवन कल्याण का मार्ग चुना। आचार्य भगवन् के आशीर्वाद से **सावद्य योग का त्याग, निंदामि, गरिहामि, अप्पाणं वसिरामि** अर्थात् करेमि भंते का पाठ आजीवन ग्रहण कर रहे हैं। ये मुमुक्षु सामान्य नहीं, युवा हैं, उच्च स्तर की शिक्षा के साथ कई प्रोफेशनल भी हैं, जिनको लाखों का पैकेज मिल रहा था। उच्च डिग्री एवं पद प्राप्त होने पर भी उन्होंने संयम को समझकर संयमदाता आचार्य श्री रामेश का सान्निध्य प्राप्त किया।

संयमी वह होता है जिसके पास द्रव्य से कुछ

नहीं होता, पर भाव से सब कुछ होता है। ऐसे भावों से ओतप्रोत आचार्यदेव का आभामंडल उनकी सरलता, समन्वयता, जीवन जीने की कला, आचरण, धार्मिक क्रियाएँ, संगठनात्मक शक्ति का अनुशासित वातावरण, स्वाध्याय एवं आगमों की गहराइयों के तलस्पर्शी ज्ञान की किरणों से मुमुक्षु ही नहीं, जनसामान्य प्रभावित होकर नतमस्तक हो रहे हैं। आचार्य प्रवर सिद्ध कर रहे हैं कि संसार एक ऐसी रात है जिसका कभी प्रभात नहीं होता,

लेकिन संयम एक ऐसा प्रभात है जिसकी कभी रात नहीं होती। ऐसा प्रभाव जब साधकों पर पड़ता है तो उनका वैराग्य स्वतः उत्पन्न हो जाता है। उनके मन में, तन में, वचन में, श्वास-श्वास में तथा रोम-रोम में संयम होता है। ऐसा संयम धन्य है और धन्य हैं ऐसे संयमी साधक तथा संयमदाता परमागम रहस्यज्ञाता आचार्य श्री रामेश! जिनशासन को समृद्ध करने वाली सभी चारित्रात्माओं को वंदन-नमन है।



ॐॐॐॐ

भक्ति रस

ॐॐॐॐ

## भव पार करे मंगल भाव

- बी. शांतिलाल पोकरणा, विजियानगरम्

जैसी भावना भाओगे अंतर्मन में, वैसा ही चिंतन होगा।  
जैसा करोगे चिंतन शुभ, वैसे ही मधुर फल पाओगे॥  
अशुभ भावों के चिंतन से, भव-भव परिभ्रमण पाओगे।  
धर्म भावों के चिंतन से, सिद्धि, बुद्धि, मुक्ति का मार्ग पाओगे॥

मानसिक चिंतन रखो शुद्ध सदा, भीतर में जगेंगे शुद्ध भाव।  
कुत्सित भावनाओं को त्यागें हम, भाएँ सदा उत्तम भाव॥  
अशुभ भाव भटकाएँगे सदा, आत्मा को जगाएँगे शुभ भाव।  
सम्यक् दृष्टि से हो आराधना, अंतर में प्रकाशित होंगे शुभ भाव॥

तप-त्याग, तपस्या में भी, शुद्ध व निर्मल भावना जरूरी है।  
कर्म कटे मेरे, न बँधे नए कर्म मेरे, ऐसी उत्कृष्ट भावना जरूरी है॥  
अरिहंत, सिद्ध, साधु व जिनधर्म से होती भव-भव यात्रा पूरी है।  
गुरुकृपा हो सदा, 'भव पार करे मंगल भाव' यह भावना जरूरी है॥





# विश्व का महत्तम धर्म जैन धर्म

- गाणेश इंगरवाल, चित्तौड़गढ़

**धर्म :-** धर्म शब्द का प्रयोग कई अर्थों में किया जाता है, यथा- कर्तव्य, अहिंसा, करुणा, न्याय, नैतिकता, सदाचार, सद्गुण आदि। विशिष्ट अर्थ में धर्म समस्त दुःखों से मुक्ति का मार्ग है। धर्म उचित-अनुचित, सही-गलत, शुभ-अशुभ के निर्णय का पैमाना है। धर्म हमें अनुकूल-प्रतिकूल परिस्थितियों में समभाव व शांति से जीना सिखाता है। धर्म वही महान हो सकता है जो निर्बाध सुख का दाता हो और जिसको धारण करने से परमानंद की प्राप्ति हो।

**जैन धर्म :-** जिनेश्वरों द्वारा उपदिष्ट होने से यह जैन धर्म कहलाया। जिनेश्वर अर्थात् जीतने वाला महापुरुष अर्थात् अपनी इंद्रियों व मन को जीतने वाला, राग-द्वेष को जीतने वाला। यह धर्म सर्वदोष रहित, सर्वज्ञ, सर्वदर्शी तीर्थंकरों द्वारा प्रवर्तित होने से प्रामाणिक, स्वतंत्र एवं शाश्वत है। अनंत ज्ञान, दर्शन, चारित्र्य की प्राप्ति ही इसका अंतिम लक्ष्य है।

**महत्तम धर्म :-** 'केवलियण्णतो धम्मो लोगतुमो' अर्थात् केवली (सर्वज्ञ) प्ररूपित धर्म लोक में उत्तम है। 'धम्मो मंगलमुक्कट्ठं, अहिंसा अंजमो तवो' अर्थात् अहिंसा, संयम और तप रूपी (जैन) धर्म उत्कृष्ट मंगल है। ये दोनों आगमिक पद यह इंगित करते हैं -

सर्वमंगल मांगल्यं, सर्वकल्याण कारणं।  
प्रधानं सर्वधर्माणां, जैनम् जयति शास्त्रम॥

**खंडन-मंडन :-** सत्य का परिबोध देने हेतु 'सूत्रकृतांग सूत्र' में पर-मतों का खंडन व स्व-मत का मंडन विशिष्ट पद्धति से किया गया है। पहले पर-मतों का परिचय देकर बाद में बिना मत प्रवर्तकों का नाम लिए सिर्फ उनके सिद्धांतों की युक्ति रहितता बताई गई है। अंत में तात्त्विक समीक्षाओं के साथ जैन धर्म के सिद्धांतों की महानता का स्थापन किया है। कुल 363 पर-मतों की समीक्षा में 180 क्रियावादी, 84 अक्रियावादी, 67 अज्ञानवादी और 32 विनयवादी हैं। इन पर-मतों के नाम हैं- पंचमहाभूतवाद, एकात्मवाद, तज्जीव-तच्छरीरवाद, अकारकवाद, आत्म-षष्ठवाद, क्षणिकवाद, सांख्यमत, नियतिवाद, अज्ञानवाद, क्रियावादी दर्शन, जगत्कृत्ववाद, अवतारवाद आदि।

सूत्र के द्वितीय स्कंध में पुंडरीक (श्रेष्ठ कमल रूपी राजा) के दृष्टांत से बड़े ही सरस तरीके से परमतों का निरसन कर स्वमत का प्रतिष्ठापन किया गया है -

सरोवर (संसार) में कीचड़ (विषय भोग) के मध्य पुंडरीक (निर्वाण) को प्राप्त करने के लिए चारों दिशाओं से चार पर-मती (तज्जीव-तच्छरीरवादी, पंचभूतवादी, ईश्वरकारणवादी व नियतिवादी) आते हैं। वे कीचड़ (विषय भोग) में फँसकर पुंडरीक को पाने में असफल रहते हैं। अंत में जिनप्रणित-धर्मकुशल साधु सरोवर के तट (धर्म तीर्थ) पर ही खड़े होकर पुंडरीक राजा को पुकारता है और पुंडरीक (निर्वाण) स्वयं उपस्थित हो जाता है।

इस दृष्टांत से न केवल शुद्धाचारी जैन साधु की श्रेष्ठता सिद्ध हुई है वरन् यह संकेत भी मिला है कि जो प्रवज्याधारी होकर भी विषयपंक में निमग्न रहते हैं, वे स्वयं संसार सागर को पार नहीं कर सकते तो दूसरों को कैसे पार पहुँचा सकेंगे ?

**प्रमुख विशेषताएँ :-** जैन धर्म में ऐसी अनेक अद्वितीय विशेषताएँ हैं जिनकी वजह से इसे विश्व का सर्वश्रेष्ठ धर्म कहा गया है -

### 1. अहिंसा की सूक्ष्मता और व्यापकता

आचारांग सूत्र के प्रथम अध्ययन में प्रभु महावीर यह उपदिष्ट करते हैं कि जैसे कोई किसी जन्मांध, मूक, बधिर या मूर्च्छित व्यक्ति को किसी शस्त्र से भेदे, उस पर चोट करे या उसका छेदन करे तो जैसी पीड़ा की अनुभूति होती है, वैसी ही पीड़ा सूक्ष्म पृथ्वीकायिक जीवों को होती है। जैसे स्वयं की आत्मा को सुख-दुःख, प्रिय-अप्रिय है, वैसे ही सभी स्थावरकायिक एकेंद्रिय व विकलेंद्रिय जीवों को भी है। यही जैन दर्शन का महान 'आत्मतुला' का सिद्धांत है। अध्ययन 5 में भी स्पष्ट किया गया है - 'तू वही है, जिसे तू हनन करने योग्य मानता है, परिताप देने योग्य मानता है, मारने योग्य मानता है।' दूसरा, हिंसा स्वयं करना, करवाना व अनुमोदन करने का मन, वचन और काया, तीनों योगों से पूर्णरूपेण त्याज्य है। मन में हिंसा के भाव आ जाना ही पाप की श्रेणी में है। अहिंसा का ऐसा सांगोपांग व मार्मिक विवेचन अन्य दर्शनों में उपलब्ध नहीं है, जबकि अहिंसा का महाव्रत के रूप में पूर्णरूपेण पालन करने वाले जैन साधु आज भी मौजूद हैं। अन्य दर्शनों में तो यज्ञ आदि में की गई हिंसा को हिंसा ही नहीं मानते। परिस्थितिवाद के चक्र में फँसकर कई दर्शनों में तो चर्बी, खून व मांस तक को ग्रहण करने की छूट है।

### 2. परिग्रह, दुःखों का मूल

सूत्रकृतांग सूत्र अध्ययन 1 में सुधर्मा स्वामी कहते हैं- "जो मनुष्य चेतन या अचेतन पदार्थों में तनिक भी परिग्रह-बुद्धि (ममत्व) रखता है या दूसरों के परिग्रह

का अनुमोदन करता है, वह दुःखों से मुक्त नहीं होता।" आचारांग सूत्र अध्ययन 2 व 5 में आसक्ति को महाभय व कर्मबंधन का कारण बतलाकर कहा है कि परिग्रही प्रमादी व लोभी बनकर हिंसा, झूठ, चोरी व अब्रह्मचर्य में लिप्त होकर सदैव परितप्त/चिंतित व तृष्णा से आकुल-व्याकुल रहता है। अतः परिग्रह पूर्णरूपेण त्याज्य है।

**"बुद्धिञ्ज निउट्टेज्जा बंधणं परिजाणिया"**  
(सूत्रकृतांग सूत्र 1 अध्ययन 1) अर्थात् आत्मबोध से बंधन (कर्मबंधन) के कारणों को जानकर उसे तोड़ दो। इसी से महान सिद्धांत 'ज्ञानक्रियाभ्याम् मोक्षः' प्रतिपादित होता है। अकेला ज्ञान पंगु है और अकेली क्रिया अंधी होती है। अतः मोक्ष के लिए दोनों अनिवार्य हैं। दुःख के कारणों व इनसे मुक्ति का इतना सरल, स्पष्ट एवं परिपूर्ण उपाय अन्य दर्शनों में उपलब्ध नहीं है। कोई दर्शन मात्र ज्ञान से तो कोई दर्शन मात्र क्रिया से मुक्ति मानते हैं। कुछ दर्शन तो अनासक्ति के लिए बाहरी परिग्रह के पूर्ण त्याग को आवश्यक ही नहीं मानते।

### 3. अनेकांतवाद

संसार के पदार्थ परस्पर विरोधी गुण, धर्म, स्वभाव वाले होते हैं। अतः पूर्ण सत्य को उजागर करने के लिए उन्हें विविध नयों, दृष्टिकोणों व अपेक्षाओं से जानना आवश्यक है। प्रभु महावीर सर्वप्रथम त्रिपदी का उपदेश देते हैं - 'उप्यब्बेइ वा, विगमेइ वा, धुवेइ वा' अर्थात् पदार्थ उत्पन्न होते हैं, विनष्ट होते हैं, फिर भी उनका अस्तित्व (मूल तत्त्व) बना रहता है। वे पर्याय की अपेक्षा उत्पाद-व्यय रूप (अनित्य) है, लेकिन द्रव्य की अपेक्षा ध्रौव्य रूप (नित्य) है। उदाहरणार्थ संसारी जीव शरीर रूप में जन्म-मरण करते हुए भी जीव रूप से शाश्वत/अमर है। भौतिक पदार्थ भी परिवर्तनशील होते हुए भी अपने द्रव्यत्व से च्युत नहीं होते, जबकि क्षणिकवादी आत्मा को क्षणभंगुर और ईश्वरवादी केवल नित्य मानते हैं। अनेकांतवाद में विवाद को संवाद में बदलने की सामर्थ्य है। यह विश्वशांति के लिए भी एक अमोघ अस्त्र है। आग्रहवृत्ति व एकांतिक सोच अशांति व दुःख पैदा करेगी।

#### 4. सर्वजीव मोक्षाधिकार

जैन धर्म एक भक्त को भगवान बनाने का मार्ग है। अन्य धर्म एक ईश्वर, एक जगत्कर्ता की मान्यता को लेकर चलते हैं। जैन दर्शनानुसार संसार अनादि-अनंत है। यह प्रकृति के नियमानुसार स्व-संचालित है। प्रत्येक व्यक्ति अपने कर्मानुसार स्वयं अपना भाग्यविधाता है। वह अपनी साधना से कर्म क्षय कर परमात्मा पद पा सकता है।

#### 5. कर्मसिद्धांतों की श्रेष्ठता

कर्मों के प्रकार व प्रकृतियाँ, बंध के प्रकार व कारण, भोगने के प्रकार व बंध से मुक्ति के उपाय व विधियों आदि का जितना गंभीर व विस्तृत विवेचन जैन कर्मग्रंथों में उपलब्ध है उतना अन्य दर्शनों में उपलब्ध नहीं है। जैन दर्शनानुसार कर्मों को स्वयं ही भोगे बिना मोक्ष प्राप्त नहीं होता। फिर भी अल्पकषायी कर्मों के समय, शक्ति व रस आदि में साधना से परिवर्तन संभव है। इसके विपरीत ईश्वरवादी दर्शन कर्मफल को ईश्वराधीन मानते हैं। क्षणिकवादी शुभ कर्मों के फल में दूसरों की भागीदारी को संभव मानते हैं, जो युक्तिसंगत नहीं है।

#### 6. उत्तम क्षमा

क्रोधाग्नि क्षमा से ही शांत होती है। अतः जैन दर्शन में 'उत्तम क्षमा' को प्रथम धर्म माना गया है। अपने अपकार का बदला लेने की शक्ति होते हुए भी क्षमा करना उत्तम क्षमा है। अपने ऊपर आए संकट को स्वयं का उपादान (कर्मोदय) मानकर सामने वाले निमित्त को क्षमा कर देने का संदेश देता है जैन धर्म। क्षमा को महापर्व के रूप में मनाने की परंपरा सिर्फ जैन दर्शन में ही है, अन्यत्र नहीं।

#### 7. उत्तम ब्रह्मचर्य

जैन दर्शन में ब्रह्मचर्य को सर्वश्रेष्ठ तप कहा गया है। ब्रह्मचर्य मात्र मैथुन निवृत्ति नहीं है, वरन् ब्रह्म (आत्मा) में विचरण करना है। जैन साधु के लिए नववाड़ सहित शुद्ध ब्रह्मचर्य पालन में स्त्री का संसर्ग, परिचय, दृश्य आदि देखने मात्र से ब्रह्मचर्य का खंडन होना बताया गया है।

एक दिन की आयु के बालक का स्पर्श भी 60 वर्ष की साध्वी नहीं कर सकती। ब्रह्मचर्य धर्म रूपी महानगर की कोट (सुरक्षा दीवार) है, फिर भी अन्य दर्शनों में पूर्ण ब्रह्मचर्य निर्वहन हेतु सूक्ष्मता व कठोरता का अभाव है।

#### 8. गुण-पूजा की प्रधानता

जैन दर्शन की पहचान नमस्कार महामंत्र में महापुरुष विशेष नहीं, वरन् सभी अरिहंतों, सभी सिद्धों, सभी आचार्यों, सभी उपाध्यायों व लोक में विराजमान सभी साधुओं को नमन किया है। आवश्यक सूत्र की भाव वंदना में इन्हीं महापुरुषों के आत्मिक गुणों का पूर्णरूपेण उल्लेख कर पूजा-वंदना की गई है। प्रत्येक साधक का अंतिम लक्ष्य अरिहंत व सिद्धों के गुणों को प्राप्त कर मोक्ष पाना है। अन्य दर्शनों में ऐसी उत्कृष्ट परंपरा का अभाव है।

#### 9. अन्य मति भी श्रद्धे

पूर्व में वेदों के प्रकांड विद्वान् रहे गौतम आदि गणधरों व अनेकानेक भव्यात्माओं ने अपनी-अपनी तात्त्विक जिज्ञासाओं का समाधान जैन दर्शन में पाया और वे प्रभु महावीर से प्रव्रजित होकर मोक्षगामी हुए हैं। बाद में भी अन्य मति रहे आचार्य शय्यंभव से लेकर आज तक अनेक भव्यात्माएँ जैन धर्म में दीक्षित होती आई हैं। अन्य मति गृहस्थ भी प्रायः इस महत्तम धर्म के प्रति श्रद्धा भाव प्रदर्शित करते आए हैं।

उपरोक्त सारे तथ्य यह सिद्ध करते हैं कि जैनैतर दर्शन प्रायः एकांतिक व मध्यममार्गी होने से अपूर्ण व अस्पष्ट है, जबकि जैन दर्शन के सिद्धांतों के मूल में ही विचारों की स्पष्टता, उच्चता व आचरण की पूर्ण शुद्धता समाई हुई है।

यह हम सभी का सौभाग्य है कि वर्तमान में इस महत्तम धर्म व महान श्रमण संस्कृति के संरक्षण व पोषण की जिम्मेदारी आचार्य श्री रामेश जैसे परम पुरुष के हाथों में है। वस्तुतः हम सभी के लिए यह एक दुर्लभ अवसर है। अतः इसे हम प्रमाद में न जाने दें और साधना के क्षेत्र में आगे बढ़ें।



# सम्यक् आराधक

- प्रिया कर्नावट, अजमेर

## गुरु रामेश

अपने आराध्य आचार्य भगवन् के चरणों में अपने मन की भावनाओं को समर्पित करने का स्वर्णिम अवसर प्राप्त कर मैं धन्य हो गई हूँ। मैं जो मानव भव जी रही हूँ उसमें गुरु की दिव्यदृष्टि ने प्राण डाले हैं। मेरे जीवन में आचार्य भगवन् की इतनी कृपा रही है, जिसे मैं शब्दों में व्यक्त नहीं कर सकती। हमारे आचार्यदेव करुणा के महासागर हैं, जिनको पाकर हम धन्य हो गए हैं। कौन कहता है कि इस पंचम आरे में सुख नहीं, यह तो दुःखों से भरा हुआ है। एक दृष्टि से तो यह कथन सत्य ही है, किंतु हम बहुत ही भाग्यशाली हैं जो इस दुःखम आरे में भी हमें ऐसी सम्यक् आराधना करने वाले महान गुरु मिले हैं। जब भी गुरु को वंदन करती हूँ तो मन बार-बार यही कहता है -

**घने पेड़ की छाँव में, धूप कहाँ टिक पाएगी।**

**जब साथ हो गुरु राम का,**

**तो हर मुश्किल आसान हो जाएगी।।**

मेरे गुरु उस घने पेड़ की तरह हैं, जिनकी छाँव तले हमेशा मन प्रसन्न रहता है। आचार्य भगवन् अपने उद्बोधन में प्रायः सरलता और सहनशीलता को बढ़ाने का आह्वान करते हैं। जिसके पास जो वस्तु होती है प्रायः वही उसके व्यक्तित्व व ज्ञान में झलकती है। हमारे गुरुवर सरलता, सहिष्णुता व सहनशीलता की साक्षात् मूर्त हैं। एक साधक की साधना ही उसकी शक्ति होती है और हमारे आचार्य भगवन् की यह शक्ति सूर्य की भाँति चारों दिशाओं में अध्यात्म की ज्योति फैला रही है। फूलों की खुशबू की तरह यह साधना रूपी महक हर एक आत्मा को महका रही है। उनकी शरण में आने वाला कोई भी जन इससे अछूता नहीं रहा।

प्रत्येक साधक का जीवन कई मुश्किलों से गुजरता

है, जो 'अभिरामम्' पुस्तक पढ़कर हमें महसूस भी हो गया। आचार्य श्री हुक्मीचंद जी म.सा. की गादी को वर्तमान आचार्य भगवन् ने अपने अदम्य साहस व कठोर संयम साधना से और अधिक पावन, निर्मल बना दिया है। आचार्य भगवन् के दर्शन होते ही मन गद्गद् हो जाता है और एक ही ध्वनि गूँजती है-

**हुशि उ चौ श्री ज ग नाना, राम चमकते भानु समाना।**

आचार्य भगवन् की दीक्षा महोत्सव का यह स्वर्णिम साल उनकी शिक्षाओं पर चलने के लिए हम सबको प्रेरित कर रहा है। आपश्री अपनी साधना व चिंतन द्वारा हम सभी को संयमित व सुश्रावक रूपी जीवन जीने एवं कषायों को पतला करने की प्रेरणा दे रहे हैं। 'धम्म सद्धा चालीसा' का एक-एक शब्द आचार्यदेव ने इतना सुंदर पिरोया है, जिसे पढ़कर मन में धर्मघोष होने लगता है। 'धम्म सद्धा चालीसा' केवल एक प्रार्थना नहीं अपितु इसका प्रत्येक शब्द मोती के समान है, जिसे भगवन् ने एक सूत्र में चालीसा के रूप में पिरोया है। यह उनकी अंतरात्मा से निकला वह सत्य है जिससे भगवन् हमें एक प्रेरणा, एक उद्बोधन दे रहे हैं। इसे हम जितना भावपूर्वक आचरण करेंगे उतना ही भगवन् को अपने नजदीक पाएँगे।

जिनेश्वर देव से यही प्रार्थना है कि मेरे गुरु सदा स्वस्थ रहें, मस्त रहें, अलमस्त रहें।

**मेरे गुरुवर हैं सबसे निराले, जिनशासन के ये ध्रुव तारे।**

**कर रहे हैं ये शासन प्रभावना,**

**शुद्ध संयम वाले वीर पथ पर चले।।**

**गुरुवर स्वस्थ रहें, अलमस्त रहें।**

**आठों याम प्रभु से यही प्रार्थना,**

**हम हर पल भावें यही भावना।।**





# वैवाहिक जश्न

## सभ्य समाज हेतु ज्वलंत प्रश्न

- दिलीप गांधी, बेंगलुरु

शादी, भारतीय संस्कृति में एक ऐसा आयोजन है, जिसे जीवन का एक महत्वपूर्ण मोड़ माना जाता है। परंतु आज की आधुनिक शादियाँ परंपरा और दिखावे का ऐसा मेल बन गई हैं, जो कभी-कभी हास्यास्पद भी प्रतीत होती हैं। इन शादियों में परंपराओं से अधिक प्राथमिकता शोऑफ या सोशल मीडिया पर मिलने वाले लाइक्स को दी जाती है। आजकल शादियों का मतलब महंगा रिसोर्ट, होटल, थीम बेस्ट डेकोरेशन और विदेशी फूलों की बाढ़। जैसे ही शादी की तारीख तय होती है परिवार वाले सबसे पहले इवेंट प्लानर की तलाश में लग जाते हैं। घर के लोग बाकी सब छोड़कर यह तय करने में लग जाते हैं कि सजावट राजस्थान की होगी, खाना पंजाबी होगा और संगीत बॉलीवुड का होगा। जो शादी कभी घर के आँगन में हल्दी और मेहंदी के गीतों से जीवंत हो उठती थी, अब यह शुभ कार्य केवल इवेंट बनकर रह गया है। पैसा आपका और दिमाग संचालन इवेंट प्लानर का।

इस अवसर पर यदि दुलहा और दुलहन के कपड़ों पर ध्यान दें तो ऐसा लगता है कि वे कोई ऐतिहासिक किरदार निभाने जा रहे हैं। दुलहे की शेरवानी और दुलहन के लहंगे का वजन इतना अधिक होता है कि पहनने वाला उसके भार से थका-थका महसूस करता है। कपड़ों पर

लाखों रुपए खर्च करना सामाजिक प्रतिष्ठा का प्रतीक बन गया है। खान-पान का तो कहना ही क्या! शादी में 100 से अधिक व्यंजन बनवाना तो आजकल आम बात हो गई है। फास्ट फूड, जंक फूड जैसी अपौष्टिक खाद्य सामग्री शान से परोसी जाती है। मजे की बात यह कि मेहमान पेटभर खाने की बजाय हर डिश की फोटो खींचकर उस पर व्यंजन के संबंध में सोशल मीडिया पर डिस्कस करते हैं। कई शादियों में तो मेहमानों से ज्यादा कैटरर्स, फोटोग्राफर, साउंड, टेंट एवं डेकोरेशन टीम वाले हो जाते हैं। हमारी बहन-बेटियों व परिजनों को इवेंट वाले नाचना सिखाते हैं।

आधुनिक शादियों में एक और महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं डीजे एवं फोटोग्राफर टीम के लोग। शादी में डीजे आदि पर डांस करना अनिवार्य हो गया है। यदि आप डांस नहीं करते तो लोग आपको असामाजिक मानने लगते हैं। फोटोग्राफर भी किसी निर्देशक से कम नहीं होते। वे दुलहा-दुलहन को बार-बार अलग-अलग पोज के निर्देशित करते हैं, इससे ऐसा लगता है जैसे शादी किसी फिल्म की शूटिंग हो। इससे भी भयानक है प्रीवेडिंग शूट। इसमें विवाह बाद वाले दृश्य भी विवाह पूर्व सोशल मीडिया पर देखे जा सकते हैं।

एक और विशेष पहलु है गिफ्ट और शगुन का। इसे आजकल सबसे मजाकिया पहलु बना दिया गया है। गिफ्ट में अकसर ऐसा सामान दिया जाता है जो या तो दोबारा गिफ्ट हो जाता है या घर के स्टोर रूप में पड़ा सड़ता है। दहेज का मुद्दा इन आधुनिक शादियों में भी बना हुआ है। फर्क सिर्फ इतना है कि इसे अब बढ़िया गिफ्ट का नाम दे दिया गया है। पहले दहेज चोरी-छिपे माँगा जाता था, अब खुले आम दहेज की लिस्ट पकड़ा दी जाती है।

शादी के पश्चात् सोशल मीडिया का महत्त्व और बढ़ जाता है। शादी का हर पल, हर तस्वीर और हर इवेंट सोशल मीडिया पर डाला जाता है। कुछ लोगों के लिए शादी के असली आनंद का मतलब है कि सोशल मीडिया पर उसके पिक्चर्स को कितने लाइक्स और कमेंट्स मिले हैं। इन सब दिखावों के चक्कर में असली शादी और उसकी सादगी कहीं खो गई है। शादी का मूल उद्देश्य दो परिवारों का मिलन और एक नई जिंदगी की शुरुआत आजकल बैकग्राउंड में चले गए हैं। आजकल परिजनों की बजाय यार, दोस्त या बिजनेस वाले साथी ज्यादा अच्छे लगते हैं। शादियाँ दिखावे, प्रतिस्पर्धा एवं फिजूलखर्ची मात्र रह गई हैं।

शादियों में यह बदलाव समय के साथ शायद और भी बढ़ेगा। पर सवाल यह है कि क्या इस चकाचौंध में हम शादी के असली महत्त्व को भूला रहे हैं?

आधुनिक शादियाँ दिखावे और खर्च का ऐसा अनोखा मेल बन चुकी हैं, जो हमारी परंपराओं को बदलने के साथ-साथ एक नया व्यंग्य भी प्रस्तुत करती हैं। यह हम पर निर्भर करता है कि हम इस व्यंग्य को केवल हँसी तक सीमित रखें या इससे कुछ सीख लें। समाज को परिधान का विवेक रखना चाहिए। शादी में जश्न का मतलब प्रदर्शन नहीं आत्मीयता, भाईचारा होना चाहिए। भड़कीले संगीत के बजाय सॉफ्ट सांस्कृतिक संगीत होना चाहिए। इवेंट वाले की जगह घर की प्रतिभाओं को यह काम करना चाहिए। बड़ी मुश्किल,

संघर्ष और तकलीफों से संचित धन का एक ही दिन में सिर्फ शान, शोहरत दिखावे के लिए सफाया हो जाता है।

मेरा नम्र आग्रह है उन सभी अभिभावकों से जो ऐसे जश्न में सहयोगी बनकर अनुमोदना करते हैं। कृपया अपने संचित धन को उचित विवेक, बेस्ट मैनेजमेंट और रिश्तों को संजोने में उपयोगी बनाएँ। ईश्वर न करे कि किसी की शादी कुछ समय बाद तलाक में बदले तो धन व धर्म दोनों चले जाते हैं। आजकल मेहमान, मेजबान को आशीर्वाद कम और टिप्पणियाँ ज्यादा देते हैं। हो सकता है मेरे विचारों से आप सहमत नहीं हों, पर ये विचार आने वाले कल की कड़वी सच्चाई हैं।

**मनाएँ हर जश्न, पर उस पे उठे ना कोई प्रश्न।**



“

एक व्यक्ति के पैर में काँटा लगा। दूसरा व्यक्ति उसके काँटा लगने का अनुभव करता है और कल्पना करता है कि काँटा लगने से उस व्यक्ति को कितनी वेदना हो रही होगी और इसके लिए वह अपने पैर में पूर्वकाल में कभी काँटा लगने की वेदना से तुलना करता है तो एक सीमा तक वह दूसरे पुरुष के लगे काँटे से उत्पन्न हुई वेदना का अनुभव कर लेगा, पर स्वयं के प्रत्यक्ष अनुभव में और उस पूर्व स्मृति या कल्पना से ज्ञात अनुभव में काफी अंतर रहेगा। इस जीवन की प्रत्यक्ष अनुभूति या संस्कार जीवन के वास्तविक तथ्यों के द्योतक होते हैं। जो सुने सुनाए संस्कार होते हैं वे जब तक प्रत्यक्ष अनुभूति में नहीं उतरते तब तक प्रत्यक्ष की अनुभूति के संस्कार नहीं बन सकते।

**- परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री नानालाल जी म.सा.**

भक्ति रस



## मुट्टिसहियं पच्चवखाण भी आत्मा को तार देते हैं

- दीपक बोहरा, मैसूर

मोक्ष के चार मार्ग, आगम में बताए हैं,  
सम्यक् ज्ञान, दर्शन, चारित्र, तप है।  
और यह भी बताया गया है कि,  
दान, शील, तप, भावना मोक्षमार्ग है।।

दोनों में तप मोक्षमार्ग बतलाया गया है,  
चाहे वह हो मासखमण या मुट्टिसहियं है।  
देवता भी तरसते रहते हैं,  
पाने अनमोल मनुज जनम है।।

परिग्रह देवता के पास खूब है,  
पर वो त्याग नहीं कर सकते हैं।  
मनुज को गर जनम करना सफल है,  
पूर्ण नहीं तो अंश भी त्याग कर सकता है।।

संयम नहीं ले सकते गर तो,  
कम से कम श्रावक तो बन सकते हैं।  
महाव्रत स्वीकार नहीं कर सकते तो,  
श्रावक व्रत तो स्वीकार कर ही सकते हैं।।

भावे भावना भाविए, भावे दीजे दान,  
है कितना अच्छा, धर्म में सुंदर सोपान।

खीर बहराने से पाई, ऋद्धि शालिभद्र ने,  
मोक्ष पा लिया अर्जुनमाली, कर क्षमादान।।

पड़े रह जाएँगे गाड़ी, बंगला और कार,  
तिर गए श्रीपाल, शरण लेकर नवकार।  
मैनासुंदरी ने भी किया आयंबिल तप स्वीकार,  
तप से अनंत आत्मा ने, कर लिया भवजल पार।।

महत्तम है संघ हमारा,  
आशीष है आचार्य गुरु राम का।  
उपाध्याय भी हैं हमारे राजेश,  
समझाते मर्म आगम का।।

महासती जी अर्चना संपन्न कर,  
चातुर्मास समता भवन का।  
मैसूर सिटी स्थानक में,  
बताए सरल मार्ग मोक्ष जाने का।।

चलो हम भी करें, नियम तप और त्याग का,  
बड़ा नहीं तो छोटा ही सही, आलंबन तप का।  
'बोहरा दीपक' करे वंदना, सिद्ध परमात्मा को,  
मिले आशीष सभी को, देव-गुरु-जिनधर्म का।।

— आचार्य भगवन्  
— उपाध्याय प्रवर

दुःख का मूल कारण मोह है  
दुनिया को नहीं, अपनी आत्मा को देखना है

## युगनिर्माता परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008

श्री रामलाल जी म.सा. एवं  
बहुश्रुत, वाचनाचार्य, उपाध्याय  
प्रवर श्रद्धेय श्री राजेश मुनि जी  
म.सा. के चरणसरोजों से गाँव,  
नगर, ढाणी सहित अनेक क्षेत्र  
हो रहे पावन

- ❁ मेड़ता सिटी में 'मोक्षार्थी शिविर 3.0' का शानदार आयोजन
- ❁ कुचेरा में 'तत्व अवगाहन' शिविर आयोजित
- ❁ मुमुक्षु बहन राखी जी सांखला की जैन भागवती दीक्षा 7 फरवरी 2025 के लिए नोखामंडी हेतु घोषित
- ❁ महत्तम शिखर महोत्सव 7-8-9 फरवरी 2025 को नोखामंडी में धर्माराधना पूर्वक संभावित

श्री सीमेंट कॉलोनी, रास, बल्लूपुरा, अमरपुरा, सोढ़ा जी की ढाणी, जसनगर, धनेरिया, कात्यासनी, वीर भवन मेड़ता सिटी।

वर्तमान के वर्धमान हो, जिनमार्ग में गतिमान हो।  
भक्तों के भगवान हो, हृदयसंघ के प्राण हो।।

जिनके दर्शनमात्र से खुल जाती है तकदीर ऐसे युगनिर्माता, युगपुरुष, साधना के शिखर पुरुष, मानवता के मसीहा, ज्ञान और क्रिया के बेजोड़ संगम, उत्क्रांति प्रदाता, जन-जन के भाग्यविधाता, नानेश पट्टधर आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा. एवं बहुश्रुत, वाचनाचार्य, उपाध्याय प्रवर श्रद्धेय श्री राजेश मुनि जी म.सा. आदि ठाणा इस कड़ाके की ठंड में भी विहार कर गाँव-गाँव, नगर-नगर, ढाणी-ढाणी को पावन कर रहे हैं। आपश्री जी के सान्निध्य में जिनशासन की अद्भुत प्रभावना हो रही है। जैन-जैनेतर सभी दर्शन, प्रवचन-श्रवण, जिज्ञासा-समाधान प्राप्त कर आत्मतृप्त हो रहे हैं। व्यसनमुक्ति संस्कार जागरण अभियान निरंतर जारी है। महापुरुषों की उत्कृष्ट संयम साधना से प्रभावित होकर अनेक भव्यात्माएँ श्रीचरणों में समर्पित होने के लिए लालायित हो रही हैं। इसी कड़ी में 26 वर्षीय वीर बाला **कु. राखी जी सांखला** सुपुत्री श्री मुकेश जी ललिता देवी सांखला, डौंडीलोहारा (छ.ग.) की जैन भागवती दीक्षा हेतु परिजनों ने गुरुचरणों में अनुज्ञा-पत्र सहर्ष समर्पित किया। साधुमर्यादा में रखे जाने वाले आगारों सहित **7 फरवरी 2025** को **नोखामंडी** के लिए दीक्षा घोषित हुई। **मेड़ता सिटी** में **'मोक्षार्थी शिविर 3.0'** का आयोजन हुआ, जिसमें शिविरार्थियों का उत्साह देखते ही बनता था। **कुचेरा** में **1 से 21 जनवरी 2025** तक **'तत्व अवगाहन'** शिविर का आयोजन संभावित है। मारवाड़ क्षेत्र में महापुरुषों के आगमन से धर्मप्रेमी श्रद्धालु हर्षित व पुलकित हैं। आगामी 7 फरवरी को नोखामंडी में संभावित भव्य जैन भागवती दीक्षाओं एवं महत्तम महापुरुष परम श्रद्धेय आचार्य प्रवर के संयमी जीवन के 50 वर्ष की पूर्णता पर 7-8-9 फरवरी को नोखामंडी में सामूहिक सामायिक, स्वाध्याय, तप आदि अनेक धार्मिक कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे। पूरे देश में श्रद्धा, भक्ति, समर्पणा के साथ धर्म-उत्साह का माहौल है।

**में अकेला हूँ**

**16 दिसंबर 2024, श्री सीमेंट कॉलोनी, रास)** विश्ववंदनीय आचार्य भगवन् आदि ठाणा-4 का जय-जयकारों के साथ श्री सीमेंट कॉलोनी, रास में पधारना हुआ। यहाँ पर आयोजित धर्मसभा को संबोधित करते हुए श्री धीरज मुनि जी म.सा. ने **'आया कहाँ से, कहाँ है जाना'** गीत प्रस्तुत करते हुए फरमाया कि मैं अकेला हूँ। यह सदैव हमें ध्यान रहना चाहिए। कर्तव्य पालन की दृष्टि से परिवार पोषण कर रहा हूँ। माता, पिता, पत्नी, पुत्र, पुत्री, रिश्तेदार, धन, शरीर आदि अन्य कोई भी साथ जाने वाला नहीं है। सब मरघट तक ही साथ निभाने वाले हैं। एकमात्र धर्म ही सच्चा साथी है। समय का इंतजार न करते हुए श्रेष्ठ कार्यों को जीवन में आगे बढ़ाते रहना चाहिए। पंच परमेष्ठी के स्मरण जाप से आत्मा शुद्ध, निर्मल, पवित्र होती है। नवकार महामंत्र गुणपूजक है। अरिहंत भगवान का स्मरण करने से भीतर रही हुई योग्यता प्रकट होती है। सिद्ध भगवान की स्तुति से **'मैं विशुद्ध आत्मा हूँ'** ऐसा बोध उत्पन्न होता है। आचार्य भगवन् के स्मरण से नेतृत्व गुण व सही निर्णय की दिशा की ओर ले जाता हूँ। उपाध्याय प्रवर के स्मरण से ज्ञान का भंडार प्रकट होता है। साधु के स्मरण से हर परिस्थिति में शांत, प्रसन्न व खुश रहने की प्रेरणा मिलती है। हमें सदैव नवकार महामंत्र का स्मरण करते रहना चाहिए। इससे तनाव से मुक्ति मिलती है। धैर्य, समय की प्रतिबद्धता एवं निरंतरता को जीवन में प्राथमिकता दें।

भजन गायकों द्वारा गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया गया। जैनेतर गणेश जी गुर्जर ने आजीवन व्यसन त्याग के नियम

लिए। 15 मिनट प्रतिदिन धर्म आराधना व स्वाध्याय करने का नियम तथा सप्ताह में एक सामायिक करने का नियम कई भाई-बहनों ने लिया। श्री सीमेंट के प्रमुख सतीशचंद्र जी माहेश्वरी ने गुरुदर्शन सेवा एवं राष्ट्रीय महामंत्री व बीकानेर-मारवाड़ अंचल के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष ने संघ गतिविधियों आदि की जानकारी लोगों को दी। प्रवचन आदि धार्मिक कार्यक्रमों पश्चात् परम श्रद्धेय आचार्य प्रवर आदि ठाणा का श्री सीमेंट कॉलोनी से विहार कर मंडी चौराहा स्थित सोहनलाल जी माली के निवास पर जय-जयकारों के साथ मंगलमय पदार्पण हुआ।

## हमें दूसरों को नहीं, अपने आपको देखना है

17 दिसंबर 2024, जैन स्थानक, रास) परमागम रहस्यज्ञाता आचार्य प्रवर आदि ठाणा का 'त्रिशला नंदन वीर की, जय बोलो महावीर की', 'जय-जयकार, जय-जयकार, राम गुरु की जय-जयकार', 'हु शि उ चौ श्री जग नाना, राम चमकते भानु समाना' आदि अनेकानेक जयघोषों के साथ जैन स्थानक, रास में मंगल पदार्पण हुआ। आचार्य भगवन् ने असीम कृपा करके मंगलपाठ प्रदान किया।

रास मठ के नोहरे में धर्मसभा को संबोधित करते हुए श्री गगन मुनि जी म.सा. ने 'अपने जीवन के जौहरी ख्यं ही बनें' गीत प्रस्तुत करते हुए फरमाया कि सुख और दुःख को पैदा करने वाला हमारा मन है। व्यक्ति का किसी से लगाव, जुड़ाव, ममत्व भाव दुःख का कारण बनता है। हम अशांत हो जाते हैं। परिवार का सदस्य या साथ रहा व्यक्ति चला जाता है तो हम उसके बारे में चिंता करते रहते हैं। लेकिन हमें सोचना है कि हम किसी के नहीं हैं और न हमारा कोई है। यह सतत चिंतन हमारे मन में होना चाहिए। आत्मा अकेली है और अकेला सफर है। समता भावों से अपने जीवन को सुहाना बनाना चाहिए। इंद्रियों का पोषण दुःख बढ़ाने वाला है। सच्चा सुख संसार के साधनों में नहीं अपितु आत्मसाधना में है। हमें दूसरों को नहीं, अपने आपको देखना है।

श्री धीरज मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि कुछ नया करने के लिए जीवन में लक्ष्य होना चाहिए। लक्ष्य होना जरूरी है। हमारे परम सौभाग्य से हमें मनुष्य जन्म मिला है, सद्गुरुओं का समागम मिला है। लाइफस्टाइल तो बदल ही रही है, पर हमें अपने जीवन की सोच को बदलना है। हमें अपने जीवन में अच्छे लक्ष्य लेकर आगे बढ़ना है।

ढेढिया परिवार की बहनों एवं महिला मंडल, रास ने गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया। कई भाई-बहनों ने सप्ताह में एक सामायिक करने, गाँव में रहते हुए एक बार धर्मस्थानक में आने एवं व्यसनमुक्ति के प्रत्याख्यान ग्रहण किए।

वीर दादा, परम गुरुभक्त व प्रख्यात समाजसेवी नाहर सिंह जी राठौड़ के निधन पर परिजनों ने गुरुचरणों में उपस्थित होकर आध्यात्मिक शांति व संदेश प्राप्त किया। अनेक स्थानों से आगत धर्मप्रेमी जनता एवं रास के माली, वैष्णव, ब्राह्मण, देवासी, कुम्हार, राजपूत, राजपुरोहित, सोनी आदि समाज के धर्मप्रेमी बंधु प्रभुत संख्या में उपस्थित थे। सभी ने गुरुदर्शन एवं प्रवचन का लाभ लिया। मुस्लिम बंधु रज्जाक भाई सिलावट ने दर्शन कर विभिन्न विषयों पर चर्चा की।

## सत्य को समझने की तलक हो

18 दिसंबर 2024, बल्लूपुरा) प्रातःकालीन धार्मिक दैनंदिनी पश्चात् शास्त्रज्ञ आचार्य प्रवर आदि ठाणा का रास स्थानक से अपूर्व जय-जयकारों से विहार कर बल्लूपुरा गाँव में सूरज सिंह जी चौहान के निवास पर मंगल प्रवेश हुआ। गाँव में एक भी जैन घर नहीं है, लेकिन त्यागी महापुरुषों के प्रति अपार श्रद्धा एवं सेवा भक्ति व भावना सराहनीय रही। गंगाशहर-भीनासर एवं नागौर संघ ने चातुर्मास व अन्य प्रसंगों की पुरजोर विनती गुरुचरणों में प्रस्तुत की। हैदराबाद निवासी जैनेतर भाई करण जी मांझी ने व्यसनमुक्ति का संकल्प लिया।

धर्मसभा को संबोधित करते हुए श्री धीरज मुनि जी म.सा. ने बोध गीत प्रस्तुत करते हुए फरमाया कि जिनवाणी सुनना तब सार्थक है जब उसे जीवन में आत्मसात् करें। मोक्ष की राह के लिए मन में कषाय, राग, द्वेष कम करने होंगे। सम, संवेग, निर्वेद, अनुकंपा, आस्था को जीवन में निरंतर आगे बढ़ाना होगा। हमारे जीवन में सही तत्त्व व सत्य को समझने की ललक हो और गहरी इच्छाशक्ति हो तो जीवन में सब कुछ हासिल कर सकते हैं। प्रतिदिन दस मिनट प्रार्थना, ध्यान, शुभभाव, आत्मचिंतन अवश्य करें और यही प्रार्थना करें कि **हे भगवन्! मैं भी आप जैसा बनूँ। कषाय और राग-द्वेष से मुक्त बनूँ। परम मंजिल को प्राप्त कर सकूँ।**

आचार्य भगवन् ने असीम कृपा करके मंगलपाठ प्रदान किया। महीने में चार दिन रात्रि भोजन का त्याग, 15 मिनट प्रभु भक्ति व स्वाध्याय करने के प्रत्याख्यान तथा व्यसनमुक्ति के संकल्प हुए। ग्रामीण भाई-बहनों की त्यागी महापुरुषों के प्रति सेवा भक्ति अत्यंत सराहनीय रही।

### प्रभु भक्ति में अपूर्व आनंद है

**19 दिसंबर 2024, अमरपुरा, जिला ब्यावर** बल्लूपुरा की भूमि को अपने चरणों से पावन करने के पश्चात् प्रशांतमना आचार्य भगवन् आदि ठाणा का जय-जयकारों के साथ अमरपुरा में भवानी सिंह जी जोधा के निवास पर पधारना हुआ। यहाँ पर आयोजित धर्मसभा को संबोधित करते हुए श्री धीरज मुनि जी म.सा. ने गीत प्रस्तुत करते हुए फरमाया कि जो व्यक्ति दूसरों की तरफ देखता है या दूसरों की बातें सुनता रहता है, वह जीवन में कभी आगे नहीं बढ़ सकता। जब समय मिले, हमें परमात्मा का स्मरण करते रहना चाहिए। प्रभु भक्ति में जो आनंद है, वो दुनिया की किसी चीज में नहीं। प्रभु भक्ति में संसार सागर से बेड़ा पार हो जाता है। जैसे श्रीकृष्ण का साथ पाकर पांडवों को महाभारत में विजय मिली, इसी प्रकार जीवन में भगवान का नाम लेने से विजय मिलेगी तथा मनुष्य जन्म सफल होगा। बचपन में माँ, जवानी में गुरु और बुढ़ापे में परमात्मा का सहारा होता है। इनकी शरण हमें जीवन के हर क्षेत्र में सफलता दिलाती है। इस जीवन में भगवान का नाम न लेकर सांसारिक चकाचौंध में खो जाने से जीवन बेकार हो जाता है। हमेशा साधु-संतों, धर्म के प्रति भावना बढ़ाते रहना चाहिए। हमारे सोचने, बोलने और करने में अंतर नहीं होना चाहिए।

ग्रामीण भाई-बहनों ने प्रतिदिन 15 मिनट प्रभु भक्ति करने का नियम लिया। महीने में 4 दिन रात्रि भोजन त्याग एवं व्यसनमुक्ति का प्रत्याख्यान अनेक जनों ने लिया। जयपुर-ब्यावर अंचल के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष सहित उपस्थित गुरुभक्तों ने गुरुदर्शन सेवा का लाभ लिया। आचार्यदेव ने महती कृपा करके मंगलपाठ फरमाया।

### गाँव-ढाणी हो रहे पावन

**20 दिसंबर 2024, सोढ़ा जी की ढाणी** भगवान महावीर की वाणी से जन-जन को पावन करने एवं धर्म की गूढ़ता से सभी को पावन करने के उद्देश्य से बढ़ रहे दृढ़ संयमधारी चारित्रात्माओं के चरण विहार पर कड़ाके की ठंड व शीतलहर भी बेअसर हैं। उत्क्रांति प्रदाता आचार्य भगवन् आदि ठाणा-4 का प्रातःकाल ही भवानी सिंह जी जोधा के निवास, अमरपुरा से विहार कर सोढ़ा जी की ढाणी में जय-जयकारों के साथ मंगल पदार्पण हुआ। व्यसनमुक्ति सहित अनेक त्याग-प्रत्याख्यान हुए। दोपहर में आचार्य भगवन् का सान्निध्यवर्ती शिष्य मंडली सहित कच्चे मार्ग से विहार कर धर्मनगरी जसनगर में जय-जयकारों के साथ पधारना हुआ। ज्ञानगच्छ के संत श्री सुमति मुनि जी म.सा. आदि ठाणा-2 का आचार्य भगवन् से आध्यात्मिक मिलन हुआ। ब्यावर संघ ने विभिन्न प्रसंगों की विनतियाँ श्रीचरणों में प्रस्तुत की।

## धन नहीं, धर्म साथ जाएगा

21 दिसंबर 2024, श्री वर्धमान जैन स्थानक, जसनगर) प्रातःकालीन मंगलमय प्रार्थना में प्रभु एवं गुरुभक्ति के पश्चात् आचार्य भगवन् ने असीम कृपा करके मंगलपाठ फरमाया। प्रवचन स्थल पर आयोजित धर्मसभा में आचार्यदेव के श्रीमुख से धर्म श्रवण का लाभ लेने हेतु अपार जनमेदिनी की उपस्थिति अतिउत्साहित नजर आ रही थी। सभी को भगवान महावीर की वाणी का सार बताते हुए व्यसनमुक्ति प्रणेता आचार्य भगवन् ने दिव्यदेशना में फरमाया कि “**धर्म क्या है और उसका परिणाम क्या है? निंदा व प्रशंसा में हमें एकसमान रहना चाहिए। समभाव की साधना हेतु सतत प्रयत्नशील रहना चाहिए। भगवान महावीर ने कष्ट देने वाले, गाली देने वाले, सत्कार करने वाले सभी जनों के साथ समान व्यवहार किया। हमारा मन कमजोर इसलिए होता है क्योंकि हम बेकार के चिंतन में लगे हुए सोचते हैं कि लोग क्या कहेंगे, दुनिया क्या कहेगी, लोग क्या सोचेंगे। हमें अपने मन को मजबूत करना होगा। धर्म अगर साथ है तो हमारा मन मजबूत होगा। आत्मा शाश्वत है, अजर है, अमर है। शरीर नाशवान है, मरणशील है। ‘लाखों वर्षों तक जीऊँ या मृत्यु आज ही आ जाए’ सदैव यह भाव बने रहें। धन, संपत्ति, परिवार, कुछ भी साथ जाने वाला नहीं है। कब किसकी मौत आ जाए, कुछ पता नहीं। सेठ सुदर्शन धर्म पर अडिग रहे। जीवन में सदैव सावधान रहे तथा उन्हें धर्म पर पक्का भरोसा था। सत्य की सदैव जीत होती है। धर्म में, सत्य में जो जीता है उसकी सदैव जीत होती है। उसका कोई कुछ भी बिगाड़ नहीं सकता। मनुष्य जीवन की सार्थकता इसी में है कि हम सदैव धर्म को जीवन में प्राथमिकता दें। इस मनुष्य जन्म से ही मुक्ति संभव है।”**

श्री धीरज मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि जिनका मन सदैव धर्म में लगा रहता है, उन्हें देवता भी नमस्कार करते हैं। साधु-संत धर्म की राह दिखाते हैं। चलना स्वयं को पड़ेगा, तब ही उद्धार संभव है। **‘जिनशासन के वीरों को वंदन है, अभिवंदन है’** गीत से सभा गुंजायमान हो गई।

श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, जसनगर की ओर से वरिष्ठ श्रावक जी ने कहा कि राम गुरु जिनशासन को निरंतर दैदीप्यमान कर रहे हैं। दीक्षाओं के ठाट लगा रहे हैं। श्रावक जी ने आचार्यदेव के चरणों में अधिक से अधिक विराजने की विनती प्रस्तुत की।

12 माह में 12 एकासन, 12 उपवास, 12 पोरसी करने का प्रत्याख्यान कई लोगों ने लिया। गाड़ी चलाते समय व भोजन करते समय मोबाइल का प्रयोग नहीं करने का नियम कई लोगों ने लिया। महेश नाहटा ने आचार्य भगवन् के अतिशय का जिक्र किया। वीर भाभी धर्मपरायणा प्रीति जी पामेचा, पिपलिया मंडी के निधन पर परिजनों ने गुरुचरणों में उपस्थित होकर आध्यात्मिक शांति व संदेश प्राप्त किया। विभिन्न त्याग-प्रत्याख्यान हुए।

## ग्रैंड समर्पणा दिवस

22 दिसंबर 2024, धनेरिया) जसनगर की भूमि को पावन करने के पश्चात् दयानिधान आचार्य भगवन् का गिरधारीलाल जी सेन, धनेरिया के निवास पर जय-जयकारों के साथ पधारना हुआ। सुश्राविका सुंदर बाई लोढ़ा, बीकानेर के निधन पर परिजनों ने गुरुचरणों में उपस्थित होकर आध्यात्मिक शांति व संदेश प्राप्त किया। परम प्रतापी आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यवाणी में फरमाया कि **“बीमारी का इलाज हो सकता है, लेकिन मौत का**



नहीं। मौत आने से पूर्व हम धर्म की आराधना करके धर्म क्षेत्र में आगे बढ़ते रहें। सामायिक, स्वाध्याय का लक्ष्य रखें। इसी में जीवन की सार्थकता है।”

श्री धीरज मुनि जी म.सा. ने गीत प्रस्तुत करते हुए फरमाया कि वचन का अतिशय सच बोलने पर होता है। सत्यनिष्ठ वचनों में ताकत होती है। किसी व्यक्ति के मन को मोड़ने से पहले खुद के मन को मोड़ना सीखना चाहिए। बड़ों के अनुसार चलेंगे तो बाकी आपके अनुसार चलेंगे। जैसा किया, वैसा पाओगे। दो जनों को सँभालने में पसीना आता है, लेकिन गुरुदेव तो 485 साधु-साध्वियों को सँभालते हैं। वे कुशल व्यवस्थापक हैं। नाना गुरु के सारे गुण राम गुरु के भीतर उपस्थित हैं। आचार्य भगवन् के संयमी जीवन के 50 वर्ष 9 फरवरी 2025 को पूर्ण होने जा रहे हैं। अब इस दिवस में 50 दिन ही बचे हैं। आज पहले दिन पुण्याई से गुरु का सान्निध्य मिला है। 50 दिन तक रोज एक नियम का पालन करना है। 9 फरवरी 2025 तक **‘नमो आयरियाणं’** की एक माला प्रतिदिन फेरनी है और गुरु के गुणों को पाने की कोशिश करनी है। कई बार थोड़े प्रमाद के कारण बड़े लाभ से वंचित रह जाते हैं। **‘नमो आयरियाणं’** पद का जाप करने से नेतृत्व गुण में वृद्धि होकर सही निर्णय की दिशा में बढ़ेंगे। संयम शतम अभियान में दिसंबर 2025 तक 100 दीक्षा का लक्ष्य है। वर्ष 2024 में अब तक 39 दीक्षाएँ हो चुकी हैं। सद्गुरु के चरणों में अपना सर्वस्व जीवन भी समर्पित करें तो भी कम है। स्वयं संयम की भावना को जगाएँ एवं अन्यो को भी इसके लिए प्रेरणा दें, तभी गुरु के प्रति सच्ची समर्पणा होगी।

महेश नाहटा ने आचार्य भगवन् के दिव्य गुणों से प्रेरणा लेने का निवेदन किया। कई भाई-बहनों ने 9 फरवरी तक 9 नवकार, 9 लोगस्स, 9 गमोत्थु णं के साथ 9 बार गुरुवंदना करने का नियम लिया। 9 फरवरी तक **‘नमो आयरियाणं’** की एक माला रोज फेरने तथा 15 मिनट स्वाध्याय करने का नियम कई भाई-बहनों ने लिया। व्यसनमुक्ति सहित अन्य कई त्याग-प्रत्याख्यान हुए। **‘गुरुवर तेरे चरणों की’** तथा **‘संयम के भाव आज जगें’** आदि गीत संपूर्ण वातावरण में गूँज रहे थे। रामेश खुला प्रश्नमंच प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया।

## खाने के लिए नहीं जीना, जीने के लिए खाना

23 दिसंबर 2024, कात्यासनी, जिला नागौर। धनेरिया से विहार कर आचार्य भगवन् का दयाल सिंह जी राठौड़ के कात्यासनी स्थित निवास में जय-जयकारों के साथ पधारना हुआ। दिनभर दर्शनार्थियों का ताँता लगा रहा। धर्मसभा को संबोधित करते हुए श्री धीरज मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि आज हम क्या कर रहे हैं? जीने के लिए खा रहे हैं या खाने के लिए जी रहे हैं? खाने में द्रव्य की मर्यादा नहीं है। भगवान महावीर ने बहुत तपस्याएँ की। साढ़े 12 वर्ष में सिर्फ 365 दिन पारणा किया। सुख प्राप्ति के लिए तप-त्याग से अपने मन को वश में करने का प्रयास करना है। आचार्य भगवन् के दीक्षा के 50 वर्ष पूर्ण होने पर नौ आयाम बताए गए हैं, उनसे जुड़ें। प्रतिदिन 1 विगय का त्याग करें। **‘नमो आयरियाणं’** की 1 माला फेरें। आचार्य भगवन् को नमस्कार करने से हमारे अंदर भी वैसी विशेषताएँ आती हैं। आचार्यश्री को किए हुए नमस्कार से हमारे अंदर भी अच्छे गुण आएँगे। हम आचार्यश्री के पदचिह्नों पर चलेंगे तो हमारे अंदर भी वैसा ही जीवन परिवर्तन होगा। जिस व्यक्ति ने अपनी रसना पर काबू पा लिया, वह कहीं भी, कैसी भी परिस्थिति में अपने आपको सँभाल लेगा।

विभिन्न त्याग-प्रत्याख्यान हुए। आचार्य भगवन् ने असीम कृपा कर मंगलपाठ फरमाया। तेजा जी गौशाला से जुड़े हुए लोगों ने व्यसनमुक्ति के संकल्प लिए।

## दुःख का मूल कारण मोह है

24 दिसंबर 2024, वीर भवन, मेड़ता सिटी) त्याग, तप, भक्ति, वीरता एवं शौर्य की नगरी मेड़ता की भूमि राम गुरु के चरणों के स्पर्श से स्वयं को पावन करने हेतु अति आतुर थी। इस शौर्य नगरी की प्रार्थना को स्वीकार करते हुए जन-जन के भाग्यविधाता परम श्रद्धेय आचार्य प्रवर का अपनी शिष्य संपदा सहित कात्यासनी से विहार कर गगनभेदी जयकारों 'त्रिशला नंदन वीर की, जय बोलो महावीर की', 'जय-जयकार, जय-जयकार, राम गुरु की जय-जयकार', 'तिरण-तारण के जहाज की, जय बोलो गुरु राम की' की गूँज के साथ वीर भवन, मेड़ता सिटी में भव्य मंगल प्रवेश हुआ। जैन-जैनेतर बंधु काफी संख्या में आचार्य भगवन् की अगवानी हेतु उपस्थित थे। यह प्रवेश यात्रा शहर के जिस मार्ग से भी निकली, वहीं मार्ग के दोनों ओर सैकड़ों गुरुभक्त ऐसी दिव्य विभूति की एक झलक पाकर ही आत्मतृप्त हो रहे थे। जिस किसी ने भी इस पुण्यशाली अवसर का लाभ लिया वह इतनी भयंकर शीतलहर में केवल एक सफेद चदर को अपने शरीर पर लपेटे हुए साधुजनों को देखकर अचंभित हुए बिना न रह सका। वीर भवन में मंगल प्रवेश पश्चात् यह विहार यात्रा धर्मसभा में परिवर्तित हो गई।

धर्मसभा को संबोधित करते हुए आगमज्ञाता आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यवाणी में फरमाया कि "अहिंसा, संयम, तप ये धर्म हैं। जिसका मन सदा धर्म में लगा रहता है, उसको देवता भी नमस्कार करते हैं। वीतराग देव के अलावा दूसरा कोई लक्ष्य आने नहीं दूँगा। हम धर्म में जीने वाले हैं। हमने धर्म को समझा है, फिर भी हम क्यों दुःखी हो रहे हैं? दुःख का मूल कारण मोह है। जिसका मोह क्षय हो गया, उसको कोई दुःख नहीं होगा। प्रतिकूल संवेदन दुःख पैदा करने वाला होता है, जिससे कई प्रकार के कष्ट हमारे जीवन में आते हैं और हम दुःखी हो जाते हैं। आत्मा ही कर्ता व विकर्ता है। हमें जो भी कष्ट आता है, वह हमारे किए हुए कृत्यों के कारण आता है। दूसरा कोई हमें कष्ट नहीं दे सकता। दूसरा तो केवल निमित्त बनता है। जहाँ भी आसक्ति भाव जुड़ा हुआ है, उसको दूर करेंगे। वे चाहे खाने-पीने के पदार्थ हों, चाहे कपड़े-आभूषण हों, चाहे परिवार का कोई सदस्य हो, आसक्ति होगी तो दुःख होगा।"

श्री हर्षित मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि भगवान की भक्ति सम्यक्त्व को निर्मल बनाती है। हम गुरु को भगवान जैसा मानें। सद्गुरु की शरण आत्मा का उद्धार करने वाली है। तीर्थंकरों के समान आचार्य होते हैं। मेड़ता सिटी में आचार्य भगवन् का साक्षात् पधारना हुआ है। इस अवसर तथा मोक्षार्थी शिविर का अधिक से अधिक लाभ उठावें।

शासन दीपिका साध्वी श्री समीहा श्री जी म.सा. आदि साध्वी मंडल ने 'धन्य है जितवाणी गुरुवर' गीत प्रस्तुत किया। श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, मेड़ता सिटी के मंत्री ने कहा कि मेड़ता की पुण्यवानी से चतुर्विध संघ की सेवा का अवसर प्राप्त हुआ है। सभी अधिकाधिक लाभ उठाएँ। बारह माह में बारह एकासना एवं भोजन करते समय मोबाइल का प्रयोग नहीं करने का संकल्प कई भाई-बहनों ने लिया। राष्ट्रीय महामंत्री, राष्ट्रीय शिविर संयोजक, बीकानेर-मारवाड़ अंचल के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष, जयपुर-ब्यावर अंचल के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष सहित अनेक स्थानों से पधारे श्रद्धालुओं ने गुरु-भगवंतों के दर्शनों का लाभ लिया।

दोपहर में शासन दीपिका साध्वी श्री समीहा श्री जी म.सा. ने जीव-अजीव, सचित्त-अचित्त तत्त्वज्ञान का बोध दिया। मेड़ता सिटी में आचार्य भगवन् के पदार्पण से पूर्व श्री चंद्रेश मुनि जी म.सा. तथा श्री हर्षित मुनि जी म.सा. आदि संतों एवं साध्वीवृंदों का पधारना हुआ।

## मोक्षार्थी बनो

25 दिसंबर 2024, वीर भवन, मेड़ता सिटी) प्रातःकालीन मंगलमय प्रार्थना में 'वामा देवी के प्यारे, तुम अश्वसेन के दुलारे' प्रभुभक्ति गीत की मधुर ध्वनि के साथ गुणगान किया गया। तत्पश्चात् आयोजित धर्मसभा में उपस्थित चतुर्विध संघ को तीर्थकरों के पावन वचनों से अवगत कराते हुए निर्लिप्त अध्यात्म योगी आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि "मोक्षार्थी का अर्थ क्या होता है? मोक्ष की आराधना करने वाला। मोक्ष मेरा लक्ष्य है और लक्ष्य ही मेरा परम प्रयोजन है। कहा जाता है कि मोक्ष में एकांत सुख है। संसार के सुख में दुःख मिला हुआ है। इसलिए रचनाकार ने कहा-

मानव का तन अनमोल मिला, मोक्षार्थी बनो, मोक्षार्थी बनो।  
जिनधर्म मिला, शुभ पुण्य खिला, मोक्षार्थी बनो, मोक्षार्थी बनो।

मोक्ष जाना चाहते हो तो तुमने जो संग्रह किया है, उसको छोड़ दो। खाने के पदार्थ, पहनने के कपड़े, आभूषण, धन-दौलत, जमीन-जायदाद, परिवार आदि सब कुछ छोड़ना होगा। यदि इनको पकड़कर बैठे रहेंगे तो मोक्ष होने वाला नहीं। 'शिव सुख पाना हो प्यारे तो त्यागी बनो। मोक्ष को पाना है तो त्यागी बनो।' इसके अलावा क्रोध, मान, माया, लोभ, राग, द्वेष का त्याग करना होगा। जिस दिन ये सब चीजें छूट जाएंगी, उस दिन मोक्ष को कोई रोकने वाला नहीं। प्राप्त करना हमारे हाथ की बात नहीं, किंतु छोड़ना हमारे हाथ की बात है।"

श्री हर्षित मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि 'सर्वे भवन्तु सुखिनः' की भावना को जीवन में विकसित करें। कोई मेरा बुरा या अहित करे तो भी मैं उसके प्रति अच्छी भावना रखूँ। सद्गुरु शरण हेतु अहोभाव रखें, इससे जीवन में पवित्रता का प्रवेश होगा। गीतिका 'नहीं कोई तेरे जैसा भगवान्त ऐसा, तेरे साथ रहना है, तेरे पास रहना है' की मधुर ध्वनि से संपूर्ण वातावरण राममय बन गया।

शासन दीपिका साध्वी श्री समीहा श्री जी म.सा. आदि साध्वी मंडल ने 'भावभीती वंदना गुरुचरणों में' गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया। संघ मंत्री ने त्याग-पच्चकखाण की प्रेरणा दी। सभा में संघ के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष, निवर्तमान राष्ट्रीय अध्यक्ष, महत्तम महोत्सव संयोजक सहित अनेक स्थानों के श्रद्धालु भाई-बहन उपस्थित थे। बीकानेर संघ के श्रावक-श्राविकाओं ने चातुर्मास की विनती श्रीचरणों में प्रस्तुत की। महापुरुषों के पावन सान्निध्य में 'मोक्षार्थी शिविर 3.0' का आगाज हुआ। शिविर समयबद्धता, अनुशासन व धर्म, ज्ञान, क्रिया के साथ सफल रहा। विभिन्न त्याग-प्रत्याख्यान हुए।

## सभी जीवों के प्रति दया, करुणा व मैत्रीभाव हो

26 दिसंबर 2024, वीर भवन, मेड़ता सिटी) प्रातः मंगलमय प्रार्थना 'दुनिया में देव अनेकों हैं, अखिंत देव का क्या कहना' तथा 'चरणों में है वंदन हमारा, गुरु राम स्वीकारो' भक्ति गीतों के साथ प्रभु एवं गुरुभक्ति की गई। आचार्य भगवन् ने असीम कृपा करके मंगलपाठ प्रदान किया। श्री छत्रांक मुनि जी म.सा. ने जीवों की सूक्ष्म व्याख्या करते हुए फरमाया कि हमें सभी जीवों के प्रति दया, करुणा, मैत्रीभाव रखना चाहिए। किसी भी जीव को पीड़ा, कष्ट, दुःख न पहुँचे, ऐसा हमारा प्रयास होना चाहिए। जीवों के प्रति हमारा यतनाभाव

सदैव रहे। जीवों को असाता पहुँचाने से हमें भी असाता मिलेगी। आपश्री ने सचित्त-अचित्त का भी बोध करवाया। विभिन्न त्याग-प्रत्याख्यान हुए।

बहुश्रुत, वाचनाचार्य, उपाध्याय प्रवर श्रद्धेय श्री राजेश मुनि जी म.सा. आदि ठाणा का भीलवाड़ा से उग्र विहार करते हुए रायसिंहपुरा, रायला, सरेरी, कंवलियास, विजयनगर, मसूदा, खरवा, जेठाणा, पीसांगन, रियाबड़ी, जड़ाऊ से वीर भवन, मेड़ता सिटी में मंगलमय पर्दापण हुआ। चहुँओर खुशियों का वातावरण छा गया। उपाध्याय प्रवर एवं श्री गुणीश मुनि जी म.सा. मात्र तीन दिन में 84 किलोमीटर का उग्र विहार कर आचार्य भगवन् के पावन चरणों में उपस्थित हुए। आपश्री जी ने अद्भुत धर्मजागरणा करते हुए जिनशासन की प्रभावना की। शासन दीपिका साध्वी श्री समीहा श्री जी म.सा. आदि ठाणा, शासन दीपिका साध्वी श्री खंतिप्रिया श्री जी म.सा. आदि ठाणा, शासन दीपिका साध्वी श्री लोकोत्तर श्री जी म.सा. आदि ठाणा का भी गुरुचरणों में पर्दापण हुआ। तेरापंथ संघ के संत श्री कमल मुनि जी म.सा. ने आचार्य भगवन् से सौजन्य भेंट की।

## समस्या बाहर नहीं, भीतर मन में है

27 दिसंबर 2024, वीर भवन, मेड़ता सिटी। प्रातः मंगलमय प्रार्थना 'मेरे प्यारे देव गुरुवर, श्री जिनधर्म महात्मा' एवं 'हे प्रभु पंच परमेष्ठी दयाला' भक्ति गीतों से की गई। आचार्य भगवन् ने असीम कृपा करके मंगलपाठ फरमाया। तत्पश्चात् आयोजित धर्मसभा को संबोधित करते हुए श्री हर्षित मुनि जी म.सा. ने 'तेरी साधना को झुकती मेरी आत्मा' गीत के साथ फरमाया कि जीव को किसी नवीन ज्ञान की स्फूर्णा होना चित्त की समाधि, शांति और प्रसन्नता प्राप्त करने के उपायों में एक उपाय है। हम बाहर की समस्या देखते हैं, किंतु समस्या हमारे भीतर मन में है। हम बाहर की समस्या मानेंगे तो उसका समाधान भी बाहर ही ढूँढते रहेंगे। समस्या भीतर दिखती है तो उसका समाधान भी भीतर होगा। दिनभर में 5 मिनट यह भाव भावित करना है कि सद्गुरु की शरण से मेरे भीतर ज्ञान प्रकाशित हो रहा है।

श्री मयंक मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि न कोई तेरा, न कोई मेरा है। न कोई किसी का है, सब झूठे रिश्ते-नाते हैं। अगर श्वास निकल जाए तो हमें घर में भी रखने वाला कोई नहीं है। शरीर को सजाना-सँवारना नहीं, अपितु आत्मा को सजाना है। शासन दीपिका साध्वी श्री खंतिप्रिया श्री जी म.सा., साध्वी श्री समीहा श्री जी म.सा., साध्वी श्री लोकोत्तर श्री जी म.सा. आदि साध्वीवर्याओं ने 'गुरु राम हमारे' गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया।

मोक्षार्थी शिविर के बच्चों ने प्रतिदिन बड़ों को प्रणाम करने व सोते-जागते नवकार मंत्र के 11 जाप करने के प्रत्याख्यान ग्रहण किए। जिनकी जितनी उम्र है, उतने नवकार गिनने का नियम कई भाई-बहनों ने लिया। संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष, युवा संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष सहित अनेक स्थानों से आगत श्रद्धालुओं ने गुरुदर्शन का लाभ लिया।

## एक और वीर बाला चली संयम पथ पर...

मुमुक्षु राखी जी सांखला की जैन भागवती दीक्षा नोखा में 7 फरवरी के लिए घोषित

वीर की राह पर बढ़ रहे वीर बत,  
वीरों को प्यारी ये संयम डगर।

संयम आत्मा की आवाज है, जो केवल और केवल वीर को ही सुनाई देती है। आचार्य भगवन्, उपाध्याय

प्रवर की उत्कृष्ट संयम साधना से प्रभावित होकर अनेक भव्य आत्माएँ श्रीचरणों में समर्पित होने के लिए लालायित हैं। इसी कड़ी में 26 वर्षीय वीर बाला अध्यात्म पथ साधिका **मुमुक्षु कु. राखी जी सांखला** सुपौत्री हस्तीमल जी मगन बाई सांखला, सुपुत्री मुकेश जी-ललिता जी सांखला, डौंडीलोहारा (छत्तीसगढ़)/बालेसर सत्ता की जैन भागवती दीक्षा हेतु परिवारजनों ने सहर्ष अनुज्ञा प्रदान की। मुमुक्षु बहन के परिजनों- मुकेश जी सांखला, गंभीर जी सांखला, बड़े पिता राकेश जी सांखला, भंवरलाल जी नाहटा, ऋषभ जी सांखला, ललिता जी सांखला, अनिकेत जी ललवानी, अनिल जी सांखला, श्रद्धा जी सांखला, संतोष जी सांखला, सरोज जी सांखला आदि ने गुरुचरणों में अनुज्ञा-पत्र समर्पित किया। आचार्य भगवन् ने असीम कृपा करके जैसे ही **7 फरवरी 2025** के लिए साधुमर्यादा में रखे जाने वाले आगारों सहित दीक्षा घोषित की, हर्ष-हर्ष, जय-जय की ध्वनि से संपूर्ण सभा गुंजायमान हो गई।

एक अलग कार्यक्रम में संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष जी की उपस्थिति में श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, मेड़ता सिटी एवं श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ द्वारा मुमुक्षु बहन राखी जी सांखला एवं उनके परिजनों का शानदार स्वागत, बहुमान किया गया। भारतीय आर्थिक व्यापार संगठन के सलाहकार मुकेश जी कोठारी, अहमदाबाद एवं सिंगापुर के अल्का जी पदम जी सालेचा ने गुरुदर्शन-सेवा का लाभ लिया।

## कषायों पर विजय प्राप्त करें

**28 दिसंबर 2024, वीर भवन, मेड़ता सिटी।** प्रातः पक्षियों के मधुर कलरव के मध्य मंगलमय प्रार्थना में 'हे प्रभु पंच परमेश्ठी दयाला' भक्ति गीत के साथ प्रभु भक्ति की गई।

प्रवचन स्थल पर आयोजित धर्मसभा में उपस्थित सैकड़ों गुरुभक्तों को सरल, सटीक आगमिक भाषा में जिनधर्म के गूढ़ रहस्य बताते हुए दयानिधि, कृपानिधान आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि "महापुरुषों का साधनामय जीवन हमारे लिए दर्पण है। उस दर्पण में अपने आपको देखना चाहिए कि मेरा धर्म, मेरी श्रद्धा, मेरी निष्ठा, मेरा संयम, मेरा कषायों पर नियंत्रण कैसा है। वीर पिता मुकेश जी सांखला परिवार ने अनुज्ञा-पत्र प्रस्तुत किया। बहन राखी की भावना है कि मेरी आत्मा मोक्षगामी बने। इस हेतु 7 फरवरी के लिए दीक्षा की स्वीकृति हुई। मुक्ति के लिए अपने जीवन में लगे दोषों को दूर कर, कषायों पर विजय प्राप्त करना है। हम भी अनुमोदना में इंद्रिय विषयों पर विजय प्राप्त करें।"

**हे प्रभु मेरी एक पुकार, मैं भी बत जाऊँ अणगार।**

**छोड़ के सारे पाप अठारह, मैं भी बत जाऊँ अणगार।**

गीत जैसे ही गुरुदेव के श्रीमुख से प्रारंभ हुआ तो संपूर्ण गीत गायन के दौरान पूरी सभा वैराग्य में हिलोरे लेती रही। श्री हर्षित मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि संयम मार्ग राज मार्ग है। एक क्षण का संयम पालन ज्यादा सुख देने वाला है। साधु छहकाय के जीवों को अभयदान देता है। वह दिन धन्य होगा जब मैं संयममय जीवन जीऊँगा, ऐसे भाव आने चाहिए। श्री धीरज मुनि जी म.सा. ने भक्ति गीत के साथ फरमाया कि अरिहंत भगवान ने मोक्ष जाने की अर्हता प्राप्त कर ली थी, ऐसी योग्यता हमारे अंदर भी आए। द्वितीय पद सिद्ध भगवान की तरह मैं भी शुद्ध आत्मा हूँ। तीसरे पद आचार्य जैसे सही निर्णय की क्षमता मेरे जीवन में आए और संकल्प-विकल्प से दूर रहूँ। चौथे पद उपाध्याय जैसे

दिव्य ज्ञान से संपन्न होऊँ। पाँचवें पद साधु जैसे अनुकूल-प्रतिकूल हर परिस्थिति में सम रहूँ। जो व्यक्ति तृप्त हो वह व्यक्ति आनंद में रहता है। पंच परमेष्ठी की तरह सारी शक्ति हमारे अंदर है। जरूरत है उसे प्रकट करने की।

शासन दीपिका साध्वी श्री समीहा श्री जी म.सा. आदि साध्वीवर्याओं ने ‘अहो संयम, अहो संयम’ गीत प्रस्तुत किया। **मुमुक्षु राखी जी सांखला** (डौंडीलोहारा) ने अपने प्रतिज्ञा-पत्र का पठन करते हुए कहा कि आचार्य भगवन्, उपाध्याय प्रवर की महती कृपा एवं संयम में आगे बढ़ाने हेतु परिवारजनों का जो सहकार मिला उसके लिए मैं सदैव कृतज्ञ रहूँगी। ‘**मन मेरा तुझ में रम गया, तेरा संयम मुझे भा गया**’ गीत प्रस्तुत कर मुमुक्षु बहन ने अपना प्रतिज्ञा-पत्र गुरुचरणों में समर्पित किया। संपूर्ण सभा अनेकानेक जय-जयकारों से गूँज उठी। संघ मंत्री ने आज के अवसर को अनुपम अवसर बताया। कई भाई-बहनों ने दीक्षा में अंतराय नहीं देने का संकल्प लिया। एक दिवस पूर्व ही डौंडीलोहारा ने अनुज्ञा-पत्र समर्पित किया। आचार्य भगवन् ने **7 फरवरी** के लिए आगारों सहित स्वीकृति प्रदान की। आचार्य भगवन् एवं उपाध्याय प्रवर आदि ठाणा का वीर भवन से विहार कर के.के. कॉलोनी स्थित अजीत जी बंब के निवास स्थान पर जय-जयकारों के साथ मंगल पदार्पण हुआ।

## नवकार मंत्र काटे भव बंधन

**29 दिसंबर 2024, संतों की ठाणी** आचार्य भगवन् एवं उपाध्याय प्रवर आदि ठाणा का के.के. कॉलोनी से महेन्द्र जी चौधरी के निवास पर पधारना हुआ। दर्शनार्थियों का आवागमन निरंतर जारी रहा। संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष जी एवं अनेकानेक स्थानों से आगत गुरुभक्तों ने गुरुदर्शन-सेवा का लाभ लिया।

वीर भवन, मेड़ता सिटी में आयोजित धर्मसभा को संबोधित करते हुए श्री हैमगिरि मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि हमें नवकार मंत्र पर पूर्ण श्रद्धा और आस्था होनी चाहिए। नवकार मंत्र भव बंधन को काटने वाला है। यदि हम भगवान की वाणी पर श्रद्धा एवं विश्वास रखेंगे और उसे अपने जीवन में धारण करेंगे तो हमारा जीवन सफल होगा। श्री यत्नेश मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि हमारा बड़ा सौभाग्य है कि हमें मनुष्य जन्म मिला है। उसमें भी हम भाग्यशाली हैं कि हमें जैन धर्म एवं तीर्थंकर देवों का शासन मिला है। जन्म, जरा, मरण और रोगों को दूर करने के लिए सद्गुरु प्राप्त हुए हैं। इनकी वाणी सुनें तो हमारी आत्मा तृप्त हो जाएगी। कषाय, क्रोध, मान, माय, लोभ, राग, द्वेष के कारण लोग दुःखी होते हैं। मोह को क्षय करने से मोक्ष की प्राप्ति होगी। विभिन्न त्याग-प्रत्याख्यान हुए।

## नैतिकता व सच्चाई को प्राथमिकता दें

**30 दिसंबर 2024, रेण, जिला नागौर** परम श्रद्धेय आचार्य भगवन् एवं उपाध्याय प्रवर का महेंद्र जी चौधरी के निवास से विहार कर जन-जन के दर्शनों की प्यास को तृप्त करते हुए रेण जि. नागौर स्थित मोतीलाल जी पाटनी (पदम जी पाटनी) के निवास पर जयघोषों की मधुर ध्वनि के मध्य मंगल प्रवेश हुआ। दिगंबर जैन, जाट, सैन, माहेश्वरी समाज सहित देश के अनेक स्थानों से पधारे गुरुभक्त भाई-बहनों ने गुरुदर्शन-सेवा का अपूर्व लाभ लिया।

ज्ञानचर्चा में उपाध्याय प्रवर ने अपनी दिव्यवाणी में भक्तों की जिज्ञासाओं को शांत करते हुए फरमाया कि “हमें दुनिया की ओर नहीं अपितु आत्मा की ओर ध्यान देना है। जीवन में सदैव सच्चाई, ईमानदारी, नैतिकता को प्राथमिकता देनी है तभी मानव भव सफल होगा।” 15 मिनट स्वाध्याय करने एवं माह में चार दिन रात्रिभोजन त्याग करने का नियम कई जनों ने लिया। आचार्य भगवन् ने असीम कृपा करके मंगलपाठ फरमाया। परम गुरुभक्त पूर्व

विधायक अजीत जी मेहता (टोंक) ने गुरुदर्शन का लाभ लेकर विभिन्न विषयों पर चर्चा करते हुए मार्गदर्शन प्राप्त किया। रेण में दिगंबर जैन समाज एवं परम गुरुभक्त रामस्वरूप जी सैन की सेवा-भक्ति सराहनीय रही। मेड़ता सिटी में शासन दीपक श्री हर्षित मुनि जी म.सा. आदि के सान्निध्य में मोक्षार्थी शिविर व व्याख्यान आदि का ठाट लगा रहा।

## ॐॐॐ व्यसन जीवन को घुन की तरह खोखला कर देते हैं ॐॐॐ

**31 दिसंबर 2024, इग्यारसी** परमागम रहस्यज्ञाता आचार्य भगवन् एवं बहुश्रुत, वाचनाचार्य, उपाध्याय प्रवर आदि ठाणा का रेण से विहार कर इग्यारसी में देवाराम जी जाट के निवास स्थान पर भक्तों द्वारा गुंजित जयनादों के साथ पधारना हुआ। श्री साधुमार्गी जैन संघ, अलाय ने अलाय क्षेत्र में अधिकाधिक विराजने की भावपूर्व विनती गुरुचरणों में प्रस्तुत की। रियाबड़ी गाँव के ठाकुर लादु सिंह जी एवं मेड़तिया गाँव के ठाकुर बलवीर सिंह जी व सुखाराम जी जाट आदि ने बड़े ही भक्तिभाव के साथ गाँव पधारने की विनती आचार्य भगवन् के श्रीचरणों में रखी। श्री जवाहर विद्यापीठ, गंगाशहर-भीनासर के अध्यक्ष ने विभिन्न विषयों पर चर्चा कर मार्गदर्शन प्राप्त किया। संघ के पूर्व राष्ट्रीय महामंत्री वीर पिता धर्मेन्द्र जी आंचलिया, बेगूँ एवं बीकानेर-मारवाड़ अंचल के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष ने गुरुसेवा का लाभ लिया। नवकार महामंत्र का जाप एवं रामेश चालीसा का पाठ किया गया। आचार्य भगवन् ने असीम कृपा करके मंगलपाठ प्रदान किया। श्री साधुमार्गी जैन संघ, नागौर सहित ग्रामीण भाई-बहनों की सेवाएँ सराहनीय रहीं।

बहुश्रुत, वाचनाचार्य, उपाध्याय प्रवर ने ग्रामीणों को मार्गदर्शन देते हुए फरमाया कि “व्यसनमुक्त जीवन ही सर्वश्रेष्ठ है। बीड़ी, गुटखा, तंबाकू सहित सभी व्यसनों से तन, मन, धन की बर्बादी होती है। ये व्यसन जीवन को घुन की तरह खोखला बना देते हैं। धर्म, संस्कृति के गौरव सहित जीवन को ऊँचा उठाएँ। महापुरुषों के मारवाड़ पावन जीवन को घुन की तरह खोखला बना देते हैं। धर्म, संस्कृति के गौरव सहित जीवन को ऊँचा उठाएँ।” महापुरुषों के मारवाड़ पावन प्रवास से धर्मप्रेमी जनता हर्षित व उल्लासित है।

### तपस्या सूची

#### श्रावक-श्राविका वर्ग

आजीवन शीलव्रत	गोविंदराम जी अग्रवाल, विश्वनाथ जी शर्मा, रतनलाल जी रायकुंवरी बाई बोथरा-कोकराझाड़, प्रकाशचंद जी चौपड़ा, बलवीरदास जी वैष्णव, तेज सिंह जी राजपूत-अमरपुरा, जेदाराम जी माली, मोहनलाल जी माली, निर्मल जी सिरे कँवर जी पुगलिया-बीकानेर, दिनेश जी बोराना
उपवास	50 - प्रकाश जी मेहता-बड़ीसादड़ी
गाथा का स्वाध्याय	प्रतिदिन 300 - जयश्री जी लोढ़ा
पक्की पोसी	100 - मधु जी खजांची-सूरत
एकासना	100 - सपना जी व्होरा-मनावर, किरण जी संखलेचा-चेन्नई
बियासना	अनिता जी कोठारी-चेन्नई

-महेश नाहटा ❤️❤️❤️

## संक्षिप्त परिचय

- निवास स्थान** : बाड़ी, निम्बाहेडा, चित्तौड़गढ़ (राज.)
- जन्म तिथि** : 5 जुलाई 1998
- वैराग्यकाल** : लगभग 1 वर्ष
- व्यावहारिक शिक्षा** : एम.कॉम.
- धार्मिक अध्ययन** : पुच्छिसु णं, श्रीमद् दशवैकालिक सूत्र के कुछ अध्ययन, श्रीमद् उत्तराध्ययन सूत्र का 1 व 11वाँ अध्ययन, जैन सिद्धांत बत्तीसी, लघुदंडक, गति-भागति, जीवधड़ा, 67 बोल एवं अन्य थोकडे
- धार्मिक शिक्षा** : आरूगबोहिलाभं
- धार्मिक परीक्षाएँ** : जैन सिद्धांत भूषण भाग-2, 3, 4
- संभावित दीक्षा प्रसंग** : 7 फरवरी 2025 (नोखामंडी)

## मुमुक्षु सुश्री ज्योति जी काँठेड़



## पारिवारिक परिचय

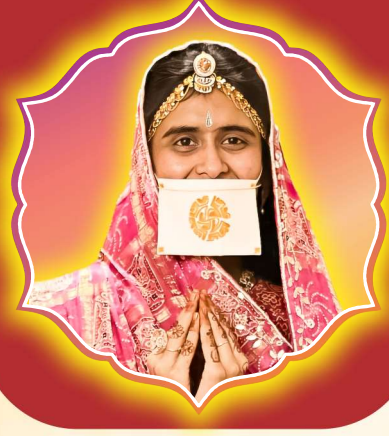
- दादाजी-दादीजी** : बापूलाल जी-स्व. श्रीमती चंदा बाई काँठेड़
- पिताजी-माताजी** : राजमल जी-टीना जी काँठेड़
- भुआजी-फूफाजी** : मंजू जी-अनिल जी सरूपरिया, ललिता जी-मनोज जी खैरोदिया, सीमा जी-महेंद्र जी विसलोत, प्रेम जी-संजय जी सिसोदिया, कमलेश जी-दिलखुश जी हिंगड़
- भाई-भाभी** : हितेश जी-आरजू जी काँठेड़
- बहन-बहनोई** : प्रिंसी जी-अक्षय जी मारू, शालू जी-अमर जी, शिल्पा जी-जयेश जी, दिव्या जी-गौरव जी, पूजा जी-सिद्धार्थ जी, निक्की जी-प्रशांत जी
- भाई, बहन** : अमूल, अंकित, चिराग, हर्ष, जीत, हर्ष, भव्य, कनिष्क, हार्दिक, राज, आदि, दिव्यांश, दीपक, कीर्ति, निकिता, पिया, प्रिया, अक्षिता, सिद्धि, पीहू
- भाणेज, भतीजी** : आध्या, धैर्या
- नानाजी-नानीजी** : स्व. श्री भैरंलाल जी-स्व. श्रीमती रोशन देवी सांखला
- मामाजी-मामीजी** : दिलीप जी-रश्मि जी सांखला
- मौसीजी-मौसाजी** : रतन जी-नरेंद्र जी मारू, मीना जी-सुंदरलाल जी बाफना, भगवती जी-ललित जी सूर्या, संगीता जी-अभय जी लोढा



## संक्षिप्त परिचय

- जन्म स्थान** : राजनांदगाँव (छ.ग.)
- मूल निवासी** : डौंडीलोहारा (छ.ग.)
- जन्म तिथि** : 10 नवंबर 1998
- वैराग्यकाल** : लगभग 1 वर्ष
- व्यावहारिक शिक्षा** : एम.कॉम., सी.ए.-IPCC (ग्रुप I)
- धार्मिक अध्ययन** : श्रीमद् दशवैकालिक सूत्र, श्रीमद् उत्तराध्ययन सूत्र, श्री नंदी सूत्र, श्री सुखविपाक सूत्र, पुच्छिसुगं, श्री उववाई सूत्र की 22 गाथाएँ, श्री अनुत्तरोपपातिक सूत्र, श्री भगवती सूत्र व श्री प्रज्ञापना सूत्र के कुछ थोकड़े, तत्त्व का ताला के कुछ थोकड़े, कर्म प्रज्ञप्ति - 1 से 16 लगभग
- धार्मिक शिक्षा** : आरुग्गबोहिलाभं, उन्नयन शिविर, मुमुक्षु शिविर, मोक्षार्थी शिविर, मोक्षानुभूति शिविर
- धार्मिक परीक्षाएँ** : जैन संस्कार पाठ्यक्रम भाग 1-4, श्रुत आरोहक भाग प्रथम व द्वितीय
- तपाराधना** : 9, 11, 13, 15, तेला आदि
- पदयात्रा** : लगभग 200 किमी.
- संभावित दीक्षा प्रसंग** : 7 फरवरी 2025 (नोखामंडी)

## मुमुक्षु सुश्री राखी जी सांखला



## पारिवारिक परिचय

- पड़दादाजी-पड़दादीजी** : स्व. श्री घेवरचंद जी-स्व. श्रीमती भीखी बाई सांखला
- दादाजी-दादीजी** : जुगराज जी-लक्ष्मी बाई, डॉ. सी.एम. सांखला-लूनी बाई, हस्तीमल जी-मगन बाई, मिश्रीलाल जी-शांति बाई सांखला
- पिताजी-माताजी** : मुकेश जी-ललिता जी सांखला
- बड़े पिताजी-बड़ी माताजी** : राकेश जी-सरोज जी सांखला
- भाई, बहन** : भावेश, सर्वज्ञ, श्रद्धा
- भुआजी-फूफाजी** : सूरज देवी-भंवरलाल जी नाहटा
- नानाजी-नानीजी** : स्व. श्री मुकनचंद जी-स्व. श्रीमती बबरा बाई दुग्गड़
- मामाजी-मामीजी** : कांतिलाल जी-स्व. श्रीमती सरला जी, शीतल जी-लतिका जी दुग्गड़
- मासीजी-मासाजी** : अरुणा जी-अशोक जी कोठारी, सरोज जी-कमल जी कोठारी, सरिता जी-दिनेश जी बाफना, कंचन जी-बसंत जी सांखला, रेखा जी-सुशील जी बोथरा
- परिवार से दीक्षित** : साध्वी श्री प्रतिष्ठा श्री जी म.सा., साध्वी श्री रुचिता श्री जी म.सा., साध्वी श्री सुसौम्या श्री जी म.सा., स्मृतिशेष साध्वी श्री दीप्ति कँवर जी म.सा. (साधुमार्गी संप्रदाय), स्मृतिशेष साध्वी श्री प्रेम कँवर जी म.सा., स्मृतिशेष साध्वी श्री पताश कँवर जी म.सा., साध्वी श्री प्रियंका श्री जी म.सा. (अन्य संप्रदाय)

## संक्षिप्त परिचय

- मूल निवासी** : राजनांदगाँव (छ.ग.)
- जन्म तिथि** : 11 मार्च 2000
- वैराग्यकाल** : लगभग 6 वर्ष
- व्यावहारिक शिक्षा** : बी.कॉम.
- धार्मिक अध्ययन** : श्रीमद् दशवैकालिक सूत्र,  
श्रीमद् उत्तराध्ययन सूत्र, श्री नंदी सूत्र,  
श्री सुखविपाक सूत्र, पुच्छिसु णं,  
उववाई सूत्र, श्री दशाश्रुत स्कंध  
(9 दशा), श्री प्रज्ञापना सूत्र एवं  
श्री भगवती सूत्र के कुछ थोकड़े
- धार्मिक शिक्षा** : आरुग्गबोहिलाभं, उन्नयन शिविर,  
मुमुक्षु शिविर, मौन साधना शिविर
- धार्मिक परीक्षाएँ** : भूषण, कोविद, विभाकर,  
मनीषी (2 प्रश्न-पत्र)
- पदयात्रा** : लगभग 500 किमी.
- संभावित दीक्षा प्रसंग** : 7 फरवरी 2025 (नोखामंडी)

## मुमुक्षु सुश्री युक्ता जी चौरड़िया



## पारिवारिक परिचय

- पड़दादाजी-पड़दादीजी** : स्व. श्री दीपचंद जी-स्व. श्रीमती छोटी बाई चौरड़िया
- दादाजी-दादीजी** : स्व. श्री गुलाबचंद जी-राधा बाई चौरड़िया
- पिताजी-माताजी** : राजेश कुमार जी-अनिता जी चौरड़िया
- बड़े पिताजी-बड़ी माताजी** : भागचंद जी-राजश्री जी चौरड़िया
- चाचाजी-चाचीजी** : विनोद कुमार जी-संजू जी, स्व. श्री राकेश कुमार जी चौरड़िया
- भाई-भाभी** : भजय जी-आकांक्षा जी चौरड़िया
- बहन-बहनोई** : वंदना जी-सिद्धांत जी चोपड़ा
- भुआजी-फूफाजी** : विजयलक्ष्मी जी-स्व. श्री रेखचंद जी लोढ़ा, पद्मा जी-किशोर कुमार जी भंसाली
- नानाजी-नानीजी** : स्व. श्री छोगालाल जी-पारस बाई ललवानी
- मामाजी-मामीजी** : अनिल जी-गुलाब जी, संजय जी-कंचन जी ललवानी

## संक्षिप्त परिचय

जन्म स्थान	: नोखामंडी, जिला बीकानेर (राज.)
जन्म तिथि	: 2 सितंबर 2002
वैराग्यकाल	: लगभग 4 वर्ष
व्यावहारिक शिक्षा	: बी.कॉम., सी.ए. फाउंडेशन
धार्मिक अध्ययन	: पुच्छिसुणं, श्रीमद् दशवैकालिक सूत्र, श्रीमद् उत्तराध्ययन सूत्र, श्रीमत् आचारांग सूत्र प्रथम श्रुतस्कंध के कुछ अध्ययन, भक्तामर स्तोत्रम्, कल्याणमंदिर स्तोत्रम्, जैन सिद्धांत बत्तीसी, भष्ट प्रवचन माता, 67 बोल, लघुदंडक, गति-आगति, जीवधडा, 98 बोल का बासठिया, कर्म प्रज्ञप्ति प्रवेश ग्रंथ, श्रीमत् प्रज्ञापना सूत्र एवं श्रीमद् भगवती सूत्र के कुछ थोकड़े आदि।
धार्मिक परीक्षाएं	: जैन सिद्धांत भूषण, कोविद, विभाकर, मनीषी, विशारद; जैन आगम कंठस्थ भूषण, कोविद, विभाकर; जैन संस्कृत प्राकृत भूषण
पदयात्रा	: लगभग 100 किमी.
संभावित दीक्षा प्रसंग	: 7 फरवरी 2025 (नोखामंडी)

## मुमुक्षु सुश्री करिश्मा जी लूणिया



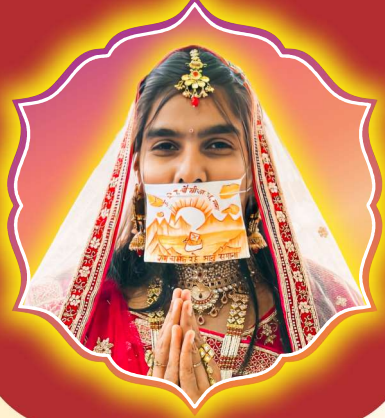
## पारिवारिक परिचय

दादाजी-दादीजी	: स्व. श्री नेमीचंद जी-द्रौपदी देवी, पूनमचंद जी-मंजू देवी लूणिया
पिताजी-माताजी	: गौतमचंद जी-ममता देवी लूणिया
बड़े पिताजी-बड़ी माताजी	: कन्हैयालाल जी-चेतना देवी लूणिया
भुआजी-फूफाजी	: सुनीता देवी-छोटूलाल जी छाजेड़ (पाली), अनिता देवी-महेंद्र जी चौरड़िया (नोखा/दिल्ली)
भाई-भाभी	: भक्षय जी-पूजा देवी लूणिया
बहन-बहनोई	: जया जी-पंकज जी बैद, गंगाशहर
भाई	: स्व. श्री हेमंत जी, गौरव लूणिया
भतीजा	: भव्य लूणिया
नानाजी-नानीजी	: स्व. श्री बच्छराज जी-स्व. श्रीमती हुलासी देवी भूरा (देशनोक/सूरत)
मामाजी-मामीजी	: महेंद्र जी-जयश्री जी, मनीष जी-ममता जी भूरा
परिवार से दीक्षित	: स्मृतिशेष श्री इंद्रचंद जी म.सा., स्मृतिशेष साध्वी श्री प्यार कंवर जी म.सा., स्मृतिशेष साध्वी श्री वसुमति जी म.सा., स्मृतिशेष साध्वी श्री शौर्ययशा जी म.सा., श्री पद्म मुनि जी म.सा., श्री उदित मुनि जी म.सा. (संसारपक्षीय दादा), श्री यत्नेश मुनि जी म.सा. (संसारपक्षीय भाई), साध्वी श्री लक्ष्यप्रभा जी म.सा. (संसारपक्षीय दादी), साध्वी श्री लक्ष्यज्योति जी म.सा., साध्वी श्री निशांत श्री जी म.सा. (संसारपक्षीय बुआ) (साधुमार्गी संप्रदाय); श्री प्रमुदित मुनि जी म.सा., स्मृतिशेष साध्वी श्री प्रेम कंवर जी म.सा., साध्वी श्री भंवर कंवर जी म.सा., साध्वी श्री गरिमा श्री जी म.सा., साध्वी श्री मुदिता श्री जी म.सा., साध्वी श्री ऋजुता श्री जी म.सा., साध्वी श्री वर्षा श्री जी म.सा. (अन्य संप्रदाय)

## संक्षिप्त परिचय

मूल निवासी	:	बेगूँ, चित्तौड़गढ़ (राज.)
जन्म तिथि	:	4 सितंबर 2003
वैराग्यकाल	:	लगभग 1 माह
व्यावहारिक शिक्षा	:	बी.बी.ए.
धार्मिक अध्ययन	:	श्रीमद् दशवैकालिक सूत्र के 1 से 4 अध्ययन, प्रतिक्रमण, पुच्छिसुणं
धार्मिक परीक्षाएँ	:	जैन संस्कार पाठ्यक्रम भाग 1 से 4
पदयात्रा	:	लगभग 250 किमी.
संभावित दीक्षा प्रसंग	:	7 फरवरी 2025 (नोखामंडी)

## मुमुक्षु सुश्री श्रद्धा जी आंचलिया



## पारिवारिक परिचय

पड़दादाजी-पड़दादीजी	:	स्व. श्री गुलाबचंद जी-स्व. श्रीमती घीसी बाई आंचलिया
दादाजी-दादीजी	:	स्व. श्री सागरमल जी-लीला देवी आंचलिया
पिताजी-माताजी	:	धर्मेन्द्र जी-मीना जी आंचलिया
बड़े पिताजी-बड़ी माताजी	:	कोमल जी-कंचन जी, प्रकाश जी-रचना जी, अशोक जी-ममता जी
भाई-भाभी	:	भानु जी-सविता जी, शैलेंद्र जी-दीक्षा जी, नरेश जी-दीक्षा जी, जय जी-नीलम जी
भाई, बहन	:	देवांग, पीयूष, अमन, आदि, भव्य, अंजली, कीर्ति, प्राची
भतीजी, भतीजा	:	काश्वी, किहान, मोक्षी, जैनम्, रिहान, ध्वनि, निर्वी
बहन-बहनोई	:	विजयलक्ष्मी जी-सौरभ जी सरूपरिया (निम्बाहेड़ा)
भुआजी-फूफाजी	:	संगीता जी-सुरेश जी कोठारी (राशमी)
नानाजी-नानीजी	:	शांतिलाल जी-सुंदर देवी नाहर (बेगूँ)
मामाजी-मामीजी	:	राजेश जी-सुषमा जी, सुशील जी-स्वाति जी नाहर
परिवार से दीक्षित	:	साध्वी श्री रामार्चना श्री जी म.सा. (संसारपक्षीय बहन)

आप संघ के मुखपत्र के नियमित पाठक हैं यह हमारे लिए हर्ष का विषय है। श्रमणोपासक के प्रत्येक माह के धार्मिक अंक विभिन्न विषयों पर आधारित होते हैं। विशिष्ट पाठकों, लेखकों व अन्य जनों के लिए श्रमणोपासक गुरु गुणानुवाद का विशेष अवसर उपस्थित कर रहा है। श्रमणोपासक के **अक्टूबर 2024 धार्मिक अंक से मार्च 2025 धार्मिक अंक** तक के सभी प्रकाशन **आचार्य भगवन् के गुणों, विशेषताओं, साधना व संयमी जीवन, संघ के प्रति आचार्य भगवन् का चिंतन, संघ समर्पणा क्यों आवश्यक, महत्तम आरोग्यम्** पर आधारित रहेंगे। उपर्युक्त विषयों पर आधारित रचनाएँ आप सभी से सादर आमंत्रित हैं। चूँकि महत्तम शिखर वर्ष गतिमान है, अतः हम सभी को महत्तम महापुरुष के गुणों का बखान कर कर्मनिर्जरा करने एवं उन गुणों को आत्मसात करने का अपूर्व अवसर उपलब्ध हुआ है। हम सभी अपने गुरु के गुणानुवाद कर इस अवसर का लाभ उठावें।

सम्माननीय पाठकगण अपनी रचनाएँ शीघ्रातिशीघ्र भिजवाने का लक्ष्य रखें। इन विषयों पर आलेख के साथ-साथ आप अपने अनुभव एवं संस्मरण भी भिजवा सकते हैं। यदि आपके पास श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ द्वारा साधुमार्गी परिवारों को जारी M.I.D. (ग्लोबल कार्ड) नं. हो तो उसका उल्लेख अवश्य ही करें। प्राप्त मौलिक एवं सारगर्भित रचनाओं को समाहित करने का लक्ष्य रहेगा। विषय संदर्भित आपकी रचनाएँ – लेख, कविता, भजन, कहानी आदि हिंदी व अंग्रेजी में सादर आमंत्रित हैं।

उपर्युक्त विषयों के अतिरिक्त अन्य विषयों पर भी आपकी रचनाएँ, संस्मरण, कविताएँ, लेख, कहानियाँ या अन्य कोई ऐसी विषयवस्तु जो सर्वजन हिताय प्रकाशित की जा सकती हो, तो इन रचनाओं का भी सहर्ष स्वागत है। आप अपनी रचनाएँ दिए गए मोबाइल व वॉट्सएप्प नंबर या ईमेल द्वारा भी भेज सकते हैं।

-श्रमणोपासक टीम



9314055390



news@sadhumargi.com

# रचनाएँ आमंत्रित



महत्तम  
महापुरुष  
गुणगान

15-16 जनवरी 2025

॥ जय महावीर ॥

॥ जय गुरु नाना ॥

॥ जय गुरु राम ॥



# शुद्धमायाम्बि ३ओ शया

संपूर्ण  
संघ में

सदा स्वाध्याय  
में रत रहो...

## Grand Opening



से स्वाध्याय शुरु

Help Line Number  
**+917231855008**



नोट - पुस्तक स्थानीय क्षेत्र (अध्यक्ष-मंत्री के आवास  
स्थल/स्थानक) में भेजी जाएगी, वहाँ से लेने का लक्ष्य करें।

॥ जय गुरु नाना ॥



॥ जय महावीर ॥



॥ जय गुरु राम ॥



# चलो नोखा

अद्भुत, अविस्मरणीय, अपूर्व, अमिट छाप छोड़ने वाले महोत्सव का साक्षी बनने हेतु सपरिवार **नोखा पधारें**

विशेष

- \* आचार्य भगवन्, उपाध्याय प्रवर व अनेकानेक चारित्रात्माओं के दर्शन-वंदन।
- \* प्रवचन व सुखद् साग्निध्य का महत्तम अवसर।
- \* 7 फरवरी 2025 को भव्यातिभव्य जैन भागवती दीक्षाओं का पावन प्रसंग।
- \* तीनों दिन अनुपम कार्यक्रमों की भरमार।
- \* नयनाभिराम प्रदर्शनी - इत्यादि।

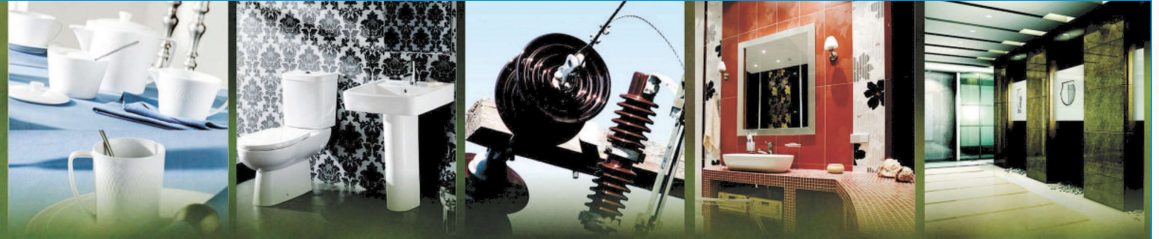
7-8-9  
फरवरी  
2025

महत्तम  
दिखावट  
महोत्सव

आयोजक

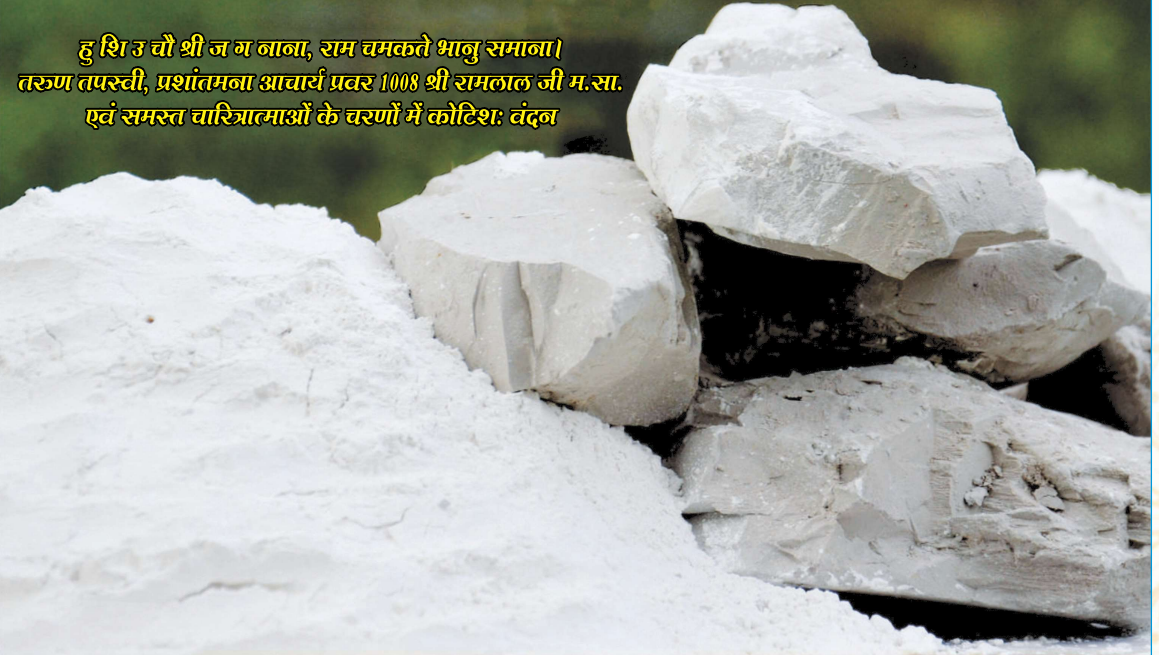
संयोजक

महत्तम शिखर आयोजन समिति श्री साधुमार्गी जैन संघ, नोखा  
अंतर्गत - श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ



## Serving Ceramic Industries Since 1965

हु शि उ चौ श्री ज न बाना, राम चमकते भानु समाना।  
तरुण तपस्वी, प्रशांतमना आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा.  
एवं समस्त चारित्रात्माओं के चरणों में कौटिशः वंदन



### *A Premier Clay Specialists in The Country...*

- 48 years of experience with efficient processing technology and high-quality deposits of raw materials.
- Extraction, Processing and Refining of industrial minerals, particularly Ball Clay, China Clay, Bentonite, Silica Sand, Quartz, Potassium & Sodium Feldspar.
- In-depth knowledge of the market and understands the need for high-grade raw materials in the ceramic industries.
- Extraction of raw materials to the final delivery of the finished product, all of our procedures are subjected to ongoing quality monitoring.
- Export good quantity of minerals to various countries.
- Import of many others minerals and raw materials for Indian ceramics industries.

**JLD MINERALS**  
Jaichand Lal Daga group

Corporate Office :  
1st Floor, Labhuji Ka Katla,  
Bikaner-334001, Rajasthan, INDIA

Phone : +91-151-2220380 / 2521624 / 3294234  
FAX : +91-151-2522768, Mobile No. 09829217944  
Email : wbcclay@yahoo.com

[www.jldminerals.com](http://www.jldminerals.com)





SIPANI

## सिपानी सेवा सदन - 1



सिपानी समूह ने मानव सेवा के क्षेत्र में एक ऐसा हस्ताक्षर अंकित किया है, जो सदियों तक स्मरण किया जाता रहेगा। समूह ने अपने प्रथम चरण में सिपानी सेवा सदन-1 - बंदापुरा विलेज मडिवाला ग्राम, मर्सुर पोस्ट, अनेकल तालूक, बेंगलूरु - 562106 में 12 वर्ष पूर्व जिस योजना को क्रियान्वित किया उसके अंतर्गत सदन की बहुमंजिला इमारत में 400 मरीजों एवं उनकी देखरेख करने वाले नर्स, कर्मचारी आदि की व्यवस्था रखी गई है।

## सिपानी सेवा सदन - 2



सेवा के कदम आगे बढ़ाते हुए सिपानी समूह ने सिपानी सेवा सदन - 2 का निर्माण कार्य प्रारम्भ करवा दिया है। इस भवन में उपरोक्त के अतिरिक्त 500 मरीजों एवं उनके लिए आवश्यक डॉक्टर, नर्स कर्मचारी एवं एम्बुलेंस आदि की सुविधा उपलब्ध रहेगी।



SIPANI

Sipani Seva Sadan-2

Address No. 149/1 &amp; 150/1 Bandapura village, Madivala grama, Marsur post Anekal taluk, Bangalore 562106

Phone number +91 8431 888 000 &amp; +91 9513 361 335



# SIPANI MARBLES

STRONG - STYLISH - SOPHISTICATED

*Royal Italian Marbles*

AS PER ISI STANDARDS



[WWW.SIPANIMARBLES.COM](http://WWW.SIPANIMARBLES.COM)

हु शि उ चौ श्री ज ग नाना,  
राम चमकते भानु समाना।  
तरुण तपस्वी, प्रशांतमना आचार्य प्रवर  
1008 श्री रामलाल जी म.सा.  
एवं समस्त चारित्रात्माओं के चरणों में  
कोटिश: वंदन!

# संघ से संबंधित विभिन्न जानकारियां

## प्रकाशक

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ

## प्रधान कार्यालय

समता भवन, आचार्य श्री नानेश मार्ग,  
नोखा रोड, गंगाशहर, बीकानेर-334401  
(राज.) फोन : 0151-2270261  
[helpdesk@sadhumargi.com](mailto:helpdesk@sadhumargi.com)

## अध्यक्ष एवं प्रधान संपादक

नरेन्द्र गांधी, जावद

## सह संपादिका

श्रीमती मोनिका जय ओस्तवाल, ब्यावर

## श्रमणोपासक सदस्यता

केवल भारत में 1,000/- (15 वर्ष के लिए)

विदेश हेतु 15,000/- (10 वर्ष के लिए)

वाचनालय हेतु (केवल भारत में)

वार्षिक 50/-

## संघ सदस्यता

साधारण सदस्यता 500/-

आजीवन सदस्यता 5,000/-

## साहित्य सदस्यता

15 वर्ष (केवल भारत में) 3,000/-

संघ केन्द्रीय कार्यालय के विभिन्न विभागों से  
कार्य सम्पादन हेतु सम्पर्क करें :-

E-mail : [ho@sadhumargi.com](mailto:ho@sadhumargi.com)

## बैंक खाता विवरण

Shree Akhil Bharatvarshiya Sadhumargi Jain Sangh, Bikaner

## State Bank of India

SCAN & PAY

Account No. : 31264126681

IFSC Code : SBIN0003401

Branch : G.S. ROAD, Bikaner

Mob. : 7073311108

E-mail : [accounts@sadhumargi.com](mailto:accounts@sadhumargi.com)



## व्हाट्सएप और ई-मेल आईडी

श्रमणोपासक	: 9799061990	} <a href="mailto:news@sadhumargi.com">news@sadhumargi.com</a>
श्रमणोपासक समाचार	: 8955682153	
साहित्य	: 8209090748	: <a href="mailto:sahitya@sadhumargi.com">sahitya@sadhumargi.com</a>
महिला समिति	: 6375633109	: <a href="mailto:ms@sadhumargi.com">ms@sadhumargi.com</a>
समता युवा संघ	: 7073238777	: <a href="mailto:yuva@sadhumargi.com">yuva@sadhumargi.com</a>
धार्मिक परीक्षा	: 7231933008	} <a href="mailto:examboard@sadhumargi.com">examboard@sadhumargi.com</a>
कर्म सिद्धांत	: 7976519363	
परिवारांजलि	: 7231033008	: <a href="mailto:anjali@sadhumargi.com">anjali@sadhumargi.com</a>
विहार	: 8505053113	: <a href="mailto:vihar@sadhumargi.com">vihar@sadhumargi.com</a>
पाठशाला	: 9982990507	: <a href="mailto:pathshala@sadhumargi.com">pathshala@sadhumargi.com</a>
शिबिर	: 7231833008	: <a href="mailto:udaipur@sadhumargi.com">udaipur@sadhumargi.com</a>
ग्लोबल कार्ड अपडेशन	: 6265311663	: <a href="mailto:globalcard@sadhumargi.com">globalcard@sadhumargi.com</a>
सामाजिक, संघ सदस्यता, सहयोग, समृद्धि, जन सेवा, जीव दया आदि अन्य प्रवृत्तियाँ	: 9602026899	
शैक्षणिक, आध्यात्मिक, धार्मिक, साहित्य संबंधी प्रवृत्तियाँ	: 7231933008	
संघ हेल्पलाइन (WhatsApp only)	: 8535858853	

## -: सूचना :-

निवेदन है कि किसी भी कार्य के लिए संबंधित विभाग से ही संपर्क करें।

इससे आपका कार्य सुगम और त्वरित गति से हो सकेगा।

कार्यालय समय - प्रातः 10:00 से सायं 6:30 बजे तक

लंच - दोपहर 1:00 से 1.45 बजे तक

## आवश्यक सूचना

सभी संघ सदस्यों से निवेदन है कि कृपया कोई भी नकद भुगतान (Cash Payment) श्री संघ के किसी भी सदस्य, कार्यालय अधिकारी को किसी भी प्रवृत्ति में करें तो केन्द्रीय कार्यालय के लेखा विभाग (Accounts Department) को सूचना जरूर दें।

इससे आपको पक्की रसीद शीघ्र ही भिजवाई जा सकेगी।

मो.न. 7073311108 पर व्हाट्सएप करें।

जय गुरु नाना

जय महावीर  
YOUR TRUST

जय गुरु राम



# RAKSHA<sup>®</sup>

## PIPES

OUR GUARANTEE

INDIA'S MOST TRUSTED BRAND



FIRST IN INDIA

ISI FITTINGS WITH ADVANCED  
CO-MOULDED DURO RING SEAL

हु शि उ चौ श्री ज ग नाना,  
राम चमकते भानु समाना।  
तरुण तपस्वी, प्रशांतमना आचार्य प्रवर  
1008 श्री रामलाल जी म.सा.  
एवं समस्त चारित्रात्माओं के चरणों में  
कोटिशः वंदन!

Sri Shantilal, Sanjay, Ajay & Tushar Shand  
**SHAND GROUP OF INDUSTRIES**

No. 52, 7th Cross, Wilson Garden, Bengaluru - 560027.INDIA  
Phone: +91-80-22235726, 22271902, 22225734.  
Fax: +91-80-22234779. E-mail: mkt@shandgroup.com



**RAKSHA FLO**

P.T.M.T TAPS & ACCESSORIES

**Diamond**  
Dureflex

**Diamond**  
DUROLON



Now with new  
**M.R.O.**  
Technology  
Resists High Impact



IS 15778:2007  
  
CM/L NO: 2526 149



**LUCALOR**  
FRANCE

www.shandgroup.com

रक्षा – जीवन भर की सुरक्षा

www.rakshapipes.com

रचनाकारों अथवा लेखकके विचारों से संपादक की सहमति होना अनिवार्य नहीं है। किसी भी विवाद की स्थिति में न्याय क्षेत्र बीकानेर ही रहेगा।  
प्रधान सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक नरेन्द्र गांधी के लिए जैन आर्ट प्रेस, बीकानेर के लिए साक्षी प्रिंटर्स, जयपुर (राज.) में मुद्रित प्रतियाँ 24,700

प्रेषक : श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ  
समता भवन, आचार्य श्री नानेश मार्ग, बोखा रोड, गंगाशहर, बीकानेर-334401 (राज.), फोन नं. 0151-2270261

@absjainsangh



www.facebook.com/HOSadhumargi

